गुलोगुलचीं का गेला बुलबुले खुश लेहजा न कर। तू गिरफ्तार हुई अपनी सदा के बाइस।।

मुजरिम अदालत में

मौलाना
सिराजुल क़ादरी
बहराइची

(तहज़ीरुन्नास) (फतावा रशीदिया) (हिफ्ज़ुल ईमान) (बराहीने कातेआ)

ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

786/92

गुल व गुलचीं का गिला बुल बुले खुश लहजा न कर
तू गिरिफ्तार हुई अपनी सदा के बाइस

अैर तुम पर मेरे आका की इनायत न सही
नजदियो कलेमा पढ़ाने का भी एहसान गया

मुजरिम अदालत में

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची
ख़तीब व इमाम मुसाफ़िर ख़ाना मस्जिद
पाक मोडया स्ट्रीट33, बोहरी मुहल्ला, मुंबई 3
मोब० 9870742302

नाशिर
ग़ाज़ी किताब घर साबरी यतीम ख़ाना
जामेआ सरकार आला हज़रत
गंगवल बाज़ार, बहराइच शरीफ़ (यू.पी) भारत

नाम किताबः मुजरिम अदालत में

मुसन्निफ़ः हज़रत मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

तसहीहः हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अशरफ़ रज़ा साहिब क़िबला नूरी मुफ़्ती ए महाराष्ट्र

सन्ने इशअतः 2008

तादादः 1000

हदयहः पचास रुपये Rs.60/=

मिलने के पते

न्यु सिल्वर बुक एजैन्सीः मो0 अली रोड मुंबई 3

नाज़ बुक डिपोः——————→मो0 अली रोड मुंबई 3

इक़रा बुक डिपोः——————→ मो0 अली रोड मुंबई 3

मकतबा इसमाईल हबीब मस्जिदः→ मुंबई 3

मकतबा जामे नूरःदेहली

मकतबा नईमयाः देहली

रज़ा बुक डिपोःदेहली

फ़ारुक़या बुक डिपोः देहली

जसीम बुक डिपोः देहली

रज़वी किताब घरः देहली

ताज बुक डिपोः नागपुर

ताज बुक हाउसः हैदराबाद

हनीफ़ बुक डिपोः नागपुर

लतीफ़िया बुक डिपोः नागपुर

जावेद बुक डिपोः कोलकाता

रहीमया बुक डिपोः पूना

नय्यर बुक सेलरः इलाहाबाद

नाज़ बुक डिपोः कोलकाता

फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्त

किताब और साहिबे किताब के बारे में

अज़: नब्बाज़े फितरत खतीबे एहले सून्नत हज़रत अ़ल्लामा मूफ़्ती मोहम्मद सूलतान रज़ा साहिब क़िबला बहराइची

الله رب محمد صل علیه و سلم　　　نحن عباد محمد صل علیه و سلم

हिन्दुस्तान का सूबा उत्तर प्रदेशं इल्म व फज़्ल का गहवारा रहा है इल्मेदीन जिस क़दर इस सूबे से परवान चढ़ा है किसी कि नज़रों से पोशीदा नहीं है–इल्म व फज़्ल कि एक से एक मा ए नाज़ हस्तियाँ यहाँ पैदा हुयीं.जिन्होंने अपने इल्म व फज़्ल का खिराजे तहसीन पूरी दुनिया से वसूल किया इसी उत्तरी भारत में एक तारीख़ी बसती ज़िला बहराइच शरीफ है जहाँ फातहे आज़मे हिन्द हुजूर सय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी शहीद अलैहिर्रहमा का मज़ारे मुक़द्दस आज भी मरजए खलाइक़ व मम्ब ए फुयूज़ व बरॉकात व सरचश्मए करामत है.जिनकी देहलीज़ से मादर ज़ाद अन्धों को आँखें कोढ़ियों को काया. महरूमुल किस्मत बाँझों कि गोद भरती है ये साहिबे मज़ार की वोह करामात हैं जिनको सिर्फ किताबों में पढ़ा ही नहीं जा सकता बल्कि हरसाल उनके मेले के दिन माथे कि नंगी आँखों से देखा भी जा सकता है इसी महबते अनवारे ऐज़दी व काशिफे असरारे सरमदी सय्येदिना सालार मसऊद ग़ाज़ी क़ुद्दसा सिर्रो हूल क़वी के दयारे पाक में और इसी ज़िले में एक बस्ती गंगवल बाज़ार के नाम से मौसूम है ये बस्ती छोटी मगर बहुत खूब सूरत है फाज़िले गिरामी वक़ार हज़रत मौलाना सिराज अहमद मोहम्मद सिराजुल क़ादरी साहिब इसी बस्ती में बतारीख़ 1जुलाई 1968 ई0 में पैदा हुए इब्तेदाई तालीम अपने घर के क़रीब एक मकतब में मोल्वी अब्दुल शकूर व मोल्वी मन्सूर अली से हासिल की बिरादरे कबीर जनाब यार मोहम्मद साहिब ने 8 साल कि उम्र में मदरसा उस्मानिया नियाज़ुल उलूम बड़ का गाँव में दाखिल कर दिया,जहाँ से 1978ई0 में हिफ्ज़े क़ुरआन की तकमील की,बादहू यतीम खाना सफ़ वियया करनैल गंज गोंडा में 1980ई0 तक चश्मए इल्म से सैराब होते रहे,फिर हुसूले इल्म के ज़ौक़े सलीम और वालिदैन की तमन्ना ने 1981 ई0 में जामिआ

अरबिय्या अनवारुल कुरआन बलराम पुर ,गोंडा पहुँचा दिया ।
मौलाना ने बड़ी दिलजमई व दिल लगी से तालीम हासिल कि और 1988ई0में नियाबते रसूल की सनद हासिल की और उस वक्त से लेकर अब तक खिदमते दीन में मसरूफ हैं। मौलाना का हुल्या कुछ इस तरह है। गोल चेहरा,चौड़ी पेशानी,बड़ी और सियाह आँखें तीखी नाक, मुतबस्सिम होंट भारी मगर मुतरन्निम आवाज़,सर पर मखमली टोपी,आँखों पर चशमा,कली दार कुर्ता शलवार,गुदाज़ जिस्म ,मुतवस्सित क़द। ये हैं मौलाना मोहम्मद सिराजुल क़ादरी मद्दा ज़िल्लुहूल आली

5/मुहर्रमुल हराम1423हिजरी की वोह तारीख़ जब सिलसिला ए बक़ाइया के एक मर्दे क़लन्दर सूफी सेठ मक़बूल अहमद साहिब बक़ाई मुरीदे खास पीर रोशन ज़मीर वली ए कामिल हज़रत सूफी मो0 शरीफ साहिब बक़ाई मद्दाज़िल्लुहुल आली ने क़ाज़ी पुरा मुंबई में मौलाना मोहतरम से तअर्रुफ कराया।जिस वक़्त राक़िमुल हुरूफ मोहतरम से शरफे लिक़ा हासिल कर रहा था उस वक़्त उन के हाथ में एक किताब का मुसव्विदा था मेरी तरफ बढ़ाते हुए मौलाना ने फरमाया ज़रा इस को आप देखें मैंने किताब लेते हुए देखा सरे वर्क़ पर किताब का नाम जली क़लम से रक़म था मुजरिम अदालत में मैंने कहा वाह मौलाना आप ने नाम तो बहुत उम्दा तजवीज़ किया है ताहम ये तो बताइये कि कौन कौन से मुजरिमों को आप ने अदालत में पेश किया है आया वोह मुजरिम चोर हैं या डाकू राह ज़न कज़्ज़ाक हैं या बद अमल वो बद किरदार वो बद अखलाक़ इन्सान और फिर किसकी अदालत में पेश किया है मौलाना ने जवाबन कहा नहीं नहीं मज़कूरा बाला फेहरिस्त में से कोई मुजरिम नहीं तो मैने गुज़ारिश की कि फिर कौन हैं वोह मुजरिम जवाब देते हुए फरमाया वोह ऐसे मुजरिम हैं जो रुकू वो सजदा करने वाले क़याम वो क़ुऊद में रहने वाले तिलावते कुरआन वो तसबीह पढ़ने वाले छोटी टोपी लम्बा कुर्ता ऊँचा पाजामा ज़ेब तन करने वाले सर्दी वो गर्मी की परवाह किये बगैर जमाअत लेकर बिलाद वो क़रयात कोह वो जबल दश्त वो

सेहरा में बादया पैमाई करने वाले लोग हैं मैंने कहा मौलाना आप लोग भी फसाद की बात करते हो! जो इतनी खूबियों का मुतहम्मिल हो भला बताओ कि वह मुजरिम क्यों कर होगा. फिर हम देखते हैं उन बेचारों को कि फरिशता सिफत बनकर तबलीग़ कि खातिर घर बार छोड़कर,बीवी बच्चों को खैरबाद कहकर कारोबार छोड़ कर 40,40 दिन, 90,90 दिन तक दुनिया से बेज़ार हो कर दूर दराज़ का सफर करते हैं बोलो वह मुजरिम कैसे? फिर ये कि कलेमा व कलाम में, रोज़ह व नमाज़ में हज व ज़कात, वहदानियत व रिसालत में वह आप के मसावी हैं! कुरआन व हदीस,फिकह व कलाम में वही किताबें जो आापके यहाँ हैं वही वह भी पढ़ते हैं,हैअत ,सूरत व शक्ल लिबासे इसलामी में वह आपके शरीक, फिर वह मुजरिम कैसे और उनका जुर्म कैसा ?मस्जिद के गोशे में रात की तारीकी या दिन के उजाले में उन्हों ने कौन सा जुर्म किया है जिसकी बिना पर आप ने उस अल्लाह वाली जमाअत को मुजरिम करार दिया है? मैने कहा डाकटर इक़बाल ने सच कहा है!

मन फेअत एक है इस क़ौम की नुक़सान भी एक
एक ही सब का नबी दीन भी ईमान भी एक
हरमे पाक भी अल्लाह भी क़ुरआान भी एक
किया बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक

जब मेरी तीखी गुफतगू देखी तो मौलाना सिराजुल क़ादरी साहिब कुछ नरम पड़े मगर उनके हाथों में किताब का एक बंडल था जिसमें उस फरिशता सिफत जमाअत कि ढेरसारी किताबें थीं, राक़िमुल हुरूफ की तरफ बढ़ाते हुऐ फरमाया, ज़रा इस कलेमा गो तौहीद के मतवाले तवहहुब परस्त ज़ाहिदाने खुश्क के वह अक़ाइदे बातिला व अक़वाले कुफरिया मुलाहेज़ा फरमायें।
जो उनके बुज़ुर्गों की किताबों से ज़ाहिर हैं, जिस पर पूरी वहाबी बिरादरी का ईमान व अक़ीदा है मैंने कहा मौलाना आप ही पढ़कर सुनाइये मैं यह ढेर सारी किताबों में कब तक आँखें फोड़ता रहूँगा .फिर मौलाना क़ादरी साहिब ने किताबों के औराक़ पलटने शुरू किये और इबारतें इस तरह पढ़ना शुरू कीं।

(1) ये हिफजुल ईमान है इसके मुसन्निफ वहाबी जमाअत के बहुत बड़ेआलिम जनाब मौलाना अशरफ अली थान्वी साहिब हैं, इस मैं उन्हों नें हुजूरे अकरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्म को बच्चों, पागलों, जानवरों, दरिन्दों के बराबर मानाहै! (मआज़ल्लाहे रब्बिलआलामीन)

(2) ये तहजीरुन्नास है इसके मुसन्निफ़ खुद साख़ता बानी दारूल उलूम देवबंद मौलाना क़ासिम नानोतवी हैं इसमें उन्हों नें हुजूरे अकरम सल्ल्लाहो अलैहे वसल्लम को खातमुन्नबिय्यीन होने से इनकार कियाहै!

(3) ये अलजुहदुल मुकिल है इसके मुसन्निफ़ मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी हैं! इसमें उन्हों ने अल्लाह तआला को झूटा लिखा है और यह लिखा कि जो गन्दे घिनों नें काम बन्दा कर सकता है वह खुदा भी कर सकता है!(मआज़ल्लाही रब्बिलआलामीन)

(4) ये तकवि यतुल ईमान है इसके मुसन्निफ मोलवी इसमाईल देहलवी नें लिखा है कि नबी हो या वली, अल्लाह की शान के आगे चमार से ज़्यादा ज़लील है!(मआज़ल्लाहे रब्बिलआलामीन)

(5) ये फतावा रशीदिया है जिसके मुसन्निफ मुफ़्ती मौलाना रशीद अहमद गंगोही हैं! इसमें उन्हों नें लिखा है कि काला कव्वा खाना सवाब है!

(6) ये रिसाला अल इमदाद है जिसके मुसन्निफ व मुरत्तिब मौलाना अशरफ अली थानवी हैं! जिसमें उन्हों नें

لا الہ الا اللہ اشرف علی رسول اللہ

सही और दुरुस्त बताया गोया अपना कलेमा पढ़वाया !

जिस वक़्त मौलाना इबाराते उलमा ए देवबंद सुना रहे थे,मैं बहरे हैरत व इसतेजाब में मुसतग़रक़ था ये इस्लामी लिबादे में इस्लामी जमाअत नहीं बल्कि शैतानी जमाअत है ये जमाअत खुदा परस्त नहीं बल्कि तवहहुब परस्त है जिसकी ज़बान व क़लम से बुज़ुर्गाने दीन अंबिया व मुरसलीन की अक़ीदत व मोहब्बत का खून हो रहा है हक़ तो ये है कि हक़ व सदाक़त और इन्साफ़ का खून हो रहा है तअज्जुब तो ये है कि इल्मे ग़ैबे नबी ,इख़तियाराते नबी, हयातुन्नबी , शफ़ाअते नबी के मज़बूत

व मन्सूस किले पर राकिट दाग़ने वाले कोई और नहीं बल्कि अपनी ही शक्ल व सूरत वाले लोग हैं–जियाब सियाब में शिकार कर रहे है और भोली उम्मत उनके केद व दज्ल से बे ख़बर है–सच फ़रमाया आला हज़रत मुजद्दिदे आज़मे दीन व मिल्लत अलैहिर रहमा ने

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है
सोना पास है सूना बन है सोना ज़हेर है उठ प्यारे
तू कहता है मीठी नींद है तेरी मत ही निराली है
आँखें मलना झुंझुला पड़ना लाख जमाही अंगड़ाई
नाम पर उठने के लड़ता है उठना भी कोई गाली है

जब ये हालत मारे आस्तीन की देखी तो मैंने कहा कि यह जमाअत खुदा परस्त नहीं बल्कि तवहहुब परस्त है फिर ना चीज़ राके़मुल हुरूफ ने किताब का मुसव्विदा लिया .अपने साथ क़याम गाह पर लाया रातों रात तक़रीबन पूरी किताब देखी अपनी नौइय्यत की ये एक अनोखी और निराली किताब है जो हज़रत अल्लामा फाज़िले गिरामी वक़ार मौलाना सिराजुल क़ादरी साहिब बहराइची की अनथक मेहनतों व काविशों का नतीजा है मौसूफ ने अपनी पूरी सलाहिय्यतों को बरू ए कार लाकर एक अज़ीम सरमाया क़ौम व मिल्लत को अता किया है राके़मुल हुरूफ तो ये कहता है कि मुजरिम अदालत में ये किताब है या आसमाने क़हर व ग़ज़ब की बरके़ साइक़ा जो खिरमने वहाबियत को यक्सर भशम करती नज़र आयेगी जमाते वहाबिया के तख़रीबी अनासिर व ख़ौफ नाक साज़िश का दामे हमा रंग इस किताब की ज़रबे वाहिद ही से तारे अन्कबूत की तरह बिखर ता नज़र आऐगा –ये किताब बद अक़ीदगी व बद मज़हबी के तेज़ व तुंद तूफान में रोशनी का बुलंद मीनार साबित होगी जिसकी तजल्लियात तारीकियों का सीना चीर कर गुमराही के गरदाब व तलातुम में फंसे इन्सानों को हिदायत की शाहराह पर गामज़न कर देगी मुझे इस किताब पर लिखते हुए क़ल्बी मसर्रत व शाद मानी फरहत व इंबिसात हासिल हो रहा है जो अपने अंदाज़े बयान में दिल फरेब असलोब निगारिश में अनोखी और

शुकूक व शुबहात के रद में निहायत बेबाक जिसका दामन क़वी दलाइल से पुर है जिसमें वहाबियों देवबंदियों नजदियों की एक हौलनाक साजिश को बे नक़ाब किया गया है जिसके तार व पौद को इन्तिहाई महारत और अजीब सुबुक दस्ती से बुना गया था जिस पर कमाले महारत से नमाज़ रोज़े का नज़र फरेब और दिलकश मलम्मा किया गया था मेरी मुराद फिरक़ ए वहाबियत है जो मिल्लत को दीमक की तरह अन्दर से खोख्ला बना रही है और जिसने अपनी बद अक़ीदगी ,बदचलनी कजरवी व गुमराही से इस्लाम में फसाद बरपा कर दिया है राक़िमुल हुरूफ साज़िशे वहाबियत को वाशिगाफ़ करने पर फ़ाज़िले मुहक़्क़िक़ को क़ल्ब की गैहराईय्यों से मुबारक बाद पेश करता है मौसूफ की ये मुजाहिदाना कोशिश मुस्तहिक्क़े तहसीन है इस किताब में उन्हों नें वहाबियत जैसे मोहलिक मर्ज़ का कामयाब इलाज करने की निहायत सई ए जमील की है उनके इस काम पर रश्क करने वालों को रश्क करना चाहिये !

राक़िमुल हुरूफ की यही आरज़ू और यही दुआ है।

खुदा ऐसी कुव्वत दे इनके क़लम में
कि बदमज़हबों को सुधारा करें यह

وصلی اللہ تعالیٰ علیٰ حبیبہ الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ واکمل التسلیم

मोहम्मद सुलतान रज़ा नूरी बहराइची
बानी– दारूल उलूम मुफति ए आज़मे हिंद
गजाधर पुर, बहराइच शरीफ़ यू. पी

तअस्सुर

फाज़िले माकूलात व मन्कूलात
हज़रत अल्लामा क़ारी सग़ीर अहमद साहिब किबला बहराइची

हर दौर में उठते हैं यजीदी फितने
हरदौर में शब्बीर जन्म लेते हैं।

आज के इस पुर आशोब दौर में जिस तरह कलेमा,नमाज़ वग़ैरह की आड़ में भोले भाले मुसलमानों को गुमराह किया जा रहा है इस से बचना हर आदमी के बस की बात नहीं लिहाज़ा ऐसे लोगों की पहचान के लिए फाज़िले मुसन्निफ मुजाहिदे सुन्नियत अलम्बरदारे मसलके आला हज़रत मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची ने क़लम उठाया तो उनकी बे बहा तसनीफ "मुजरिम अदालत में" सामने आगई जिस में फाज़िले मुसन्निफ़ नें एहक़ाके हक़ व इबताले बातिल का खूब मुज़ाहेरह किया है जिस को पढ़कर हर मुसलमान उन गुमराह गरों के अक़ाईदे बातिलह व अफ़कारे कासिदह व नज़रयाते फासिदह से भरपूर वाकि़फ हो सकता है यूँ तो इस सिलसिले में बहुत सी किताबें दूसरे मुसन्निफीन की मंजरे आम पर आईं हैं लेकिन ये किताब अपनी मिसाल आप है अज़ीं क़ब्ल फाज़िले मुसन्निफ की निहायत ही मारकतुलआरा तसनीफात में "इसलामी हीरे, बनाम सुन्नी कोइज़, गुस्ताख़ क़लम, अनवारे कुरआनी बर्क़े वेहदत, बर्क़े रज़वियत, पयामे रहमत दश्ते करबला, तोहफ़ ए रमज़ान, आदाबे ज़िन्दगी, मोजिज़ ए लुआबे दहन," वग़ैरह मंज़रे आम पर आकर लोगों से ख़िराजे तहसीन वसूल कर रही हैं इन तसनीफात से ही अंदाज़ा लग रहा है कि मौसूफ किस क़दर फुआल व मुतहर्रिक हैं और सुन्नियत का काम कर रहे हैं दुआ करता हूँ कि मौला तआला इस किताब को मक़बूले ख़ास वो आम फरमाए और मौसूफ को तवानाइ ए सिकन्दरी अता फरमाए और ज़ियादा से ज़ियादा खिदमते दीने मतीन की तौफीक़ अता फरमाए —आमीन

बिजाहे सय्यदुल मुरसलीन सलवातुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन

अहक़रूल इबाद
सग़ीर अहमद बहराइची
ख़ादिम जामिआ ग़ाज़िया फैज़ुल उलूम
बख़शी पुरा दरगाह रोड़ बहराइच शरीफ़ यू. पी

पेशे नविश्त

इस्लामी हीरे के तअल्लुक़ से कुछ मज़ामीन की तसहीह की ग़रज़ से ब हमराह अलम बरदारे मसलके आला हज़रत हज़रत अल्लामा नूर मोहम्मद साहिब क़िबला नूरी, अशरफुल फुक़हा हज़रत अल्लामा मुफ़ती अशरफ रज़ा साहिब क़िबला क़ादरी मुफ़्ति ए महाराष्ट्रा की बारगाह में हाज़री का शर्फ हासिल किया ढेर सारी दुआओं से नवाज़ने के बाद फर माया कि मौलाना आप नजदी व वहाबी भेड़ियों के सारे गुस्ताख़ाना मज़ामीन यक जा कर डालये और जलालत व नजदियत के सियाह ख़ाने में उन दरिन्दों को सर फोड़ने पर मजबूर कर दीजिये चूँकी मुफ़ती साहिब क़िबलह की वह ज़ात है जो ख़ुर्द नवाज़ी में अपनी मिसाल आप हैं हर चंद न चाहते हुए भी सर ख़मीदह होकर हुक्म के बमोजिब कमर बस्ता होकर तलाश व जुसतजू में लग गया।

" अनवारे कुरआनी" और "गुसताख़ क़लम की किताबत के सिलसिले में दफ़्तरे अफकारे रज़ा जाना हुवा अफकारे रज़ा के मुदीरे आला इज़्ज़त मआब मोहम्मद जुबेर क़ादरी जिन्होंने सेह माही अफकारे रज़ा के ज़रिये अक़ाईद व ईमान, इल्म व इरफान व आगही का एक जहाँ आबाद कर रखा है और हर सिम्त इमाम अहमद रज़ा के अफकार व नज़रयात की ठंडी ठंडी छाओं और रोशनी बेखेर ने और उस की शुआओं से जमाते ऐहले सुन्नत को मुसतफीज़ करने में सुबहो शाम मुसतगरक़ रहते हैं मैंने मुफ़्ती साहिब क़िबलह के हवाले से मशवेरतन अर्ज़ किया और परेशानियों से आगाह किया यक़ीन जानिये जुबेर भाई खुशयों से उछल पड़े और बर मला कहने लगे ये काम आप कर सकते हैं और मैं अपनी ख़िदमात पेश कर रहा हूँ उसी वक़्त नामूसे मसलके आला हज़रत हज़रत अल्लामा अब्दुल सत्तर हम्दानी साहिब क़िबलह के मुसव्वेदात और अपनी लाइबरेरी से चंद नायाब नुसख़े अता कर दिये जिस की वजह से काम आसान से आसान तर हो गया !

जब कि हक़ीक़त यही है कि मेरी हैसियते इल्मी दीनी मआमिलात

में गिरल तालिबे इल्म है, और मुतालअ व मालूमात बहुत ही महदूद है हुरूफ का जोड़ना , अलफाज के पैकर में ढालना, नोके कलम को संवार ना, खूबसूरती का जामा पहना कर उनके सही इस्तेमाल का शऊर इन सब में बिल्कुल ना बलद हूँ अपनी तलब व जुसतजु ज़ौक़ व शौक़ और बुजुर्गो की करम फरमाइयों ने जो मामूली सलीक़ा व मताए शऊर, बख़्शा है अहबाब के सता इ शी ख़ुतूत और उनके लुत्फ व इनायात ने ऐसी राह पर डाल दिया है जहाँ से जाए रफ्तन दुशवार हो गाया है बस इसी सबब से सरकारे ग़ौसे आज़म रज़ियलल्लाहो अन्हो के रूहानी फ़ुयूज़ व बराकात और इमामे इश्क़ व मोहब्बत के बातनी इनायात व करम का सहारा लेकर, बद दयानत वं दरीदह दहन मोल्वियों की जामा तलाशी के लिये कमर बस्ता हो गया मैंने अपनी इस किताब की तरतीब में नंगे वतन व नंगे असलाफ़ और नंगे इस्लाम के मुजरिमों को अक़्ल व शऊर और इश्के मुसतफा से सर शार गुलामाने मुस्तफा की अदालत में बरहना खड़ा करके मुन्सिफी का हक़ आपके हवाले कर दिया है अस्ल इबारतें उनकी किताबों से नक़्ल करके सफा नम्बर की निशान देही कर दी गई है !

देखना ये है कि इन इबारतों को पढ़नें के बाद किस राह का इनतेखाब होता है एक तरफ मोहब्बत के फूल बिखरे हैं तो दूसरी जानिब शाह राहे आम पर काँटे ही काँटे नज़र आ रहे हैं!एक तरफ अनीसे बेकसाँ चारह साज़े दर्द मन्दाँ से मोहब्बत असहाबे रसूल से मुहब्बत आले रसूल से मुहब्बत, उलामाए हक़ और मशाएखीने किराम से मुहब्बत का दर्स व पैग़ाम है और दूसरी जानिब गद्दाराने अंबिया व औलिया की ज़हेर अफशानियाँ हैं जहाँ हलाकत खेज़ तबाही उन जैसे अक़ाईद के लोगों की मुनतज़िर है फैसला आपके हाथ में है क्योंकि

इश्क से हो जाए मुमकिन है वगर न अक़्ल से
किया मक़ामे मुस्तफ़ा है फैसला दुशवार है

महबूबे रब्बुल आलमीन से हमारा तअल्लुक़ किसी फल्सफी, मुफक्किर,मुदब्बिर,उस्ताज़ व हाकिम व महकूम आम शाह व गदा,

आक़ा व गुलाम का नहीं है ये एक नबी और उम्मती का मुआमेला है सरकार सलल्ललाहो अलैहे वसल्लम से सुन्नी मुसलमानों के तअल्लुक़ की बुनयाद ही इश्क पर है और खुद इखतियारी है पैमान ए अक्ल व खिरद जाहिल व आलिम की बराबरी गवारा नहीं करता तो इश्क़ व मुहब्बत का पैमाना नबी और उम्मती की बराबरी कैसे क़ुबूल कर सकता है इसदौरे हवादिस में न जाने कितने उलमा, मुतअद्दिद गुरूप से रिश्ता रखने वाले, नमाज़ी भी हैं, हाजी भी हैं और खुद साख़्ता गाज़ी भी हैं. जो अपनी अक्ल व दानिस्त के मुताबिक़ तनक़ीद व तनक़ीसे अंबिया व गुस्ताखिए औलिया में खूब दलाइल व बराहीन पेश करते हैं जिनकी तज़ाद बयानी और ग़लत तावीलात से बिला शक व शुबा एक खिलक़त गुमराही के रास्ते पर चल पड़ी है सच और झूट में बातिल परस्त के दावेदारों के माबैन इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेल्वी ने अपने मानने वालों की जमाअत तैयार की है जिसके सरखेल उलमा अपनी जिम्मेदारी और फराइज़े मनसबी से बड़ी दयानत दारी और सदाक़त व रास्त बाज़ी से ओहदा बरआ होकर दीने हक़ और इस्लाम व सुन्नियत की खिदमात तुन दही के साथ अंनजाम दिये हैं और दे रहे हैं उनहीं बुजुर्गों के नक़शे क़दम को निशाने मंज़िल बना कर मुझ कम्तर व नाचीज़ ने हक़ाइक़ से परदा उठाने की भरपूर कोशिश की है ताकि अक़ाइद व आमाल की ग़लत तालीमात से अज़ाबे इलाही से क़रीब होने वालों को सिराते मुस्तक़ीम का पता बता कर बचाया जासके साहिबे क़लम और ऐहले इल्म व बसीरत की इसलाही तनक़ीद और नेक मशविरों की तवक़्क़ो रखते हुऐ तालिबे दुआ के साथ ही दुआ गोहूँ कि रब्बे क़दीर अज़्ज़ावजल अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में हर सुन्नी मुसलमान को बुजुर्गों की रविश और इस्लामी उसूलों पर चलने व अमल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ बख़्शे! (आमीन)

गदाऐ कूचऐ मसऊद गाज़ी

सिराजुल क़ादरी बहराइची

शरफे इन्तिसाब

उस पैकरे इश्क़ व मुहब्बत के नाम जिन्होंने अपने नोके क़लम की ज़र्ब से सियाह बख़्तों की लाशों के अंबार लगा दिये और जिनके तजदीदी कार नामों ने दुनिया ए इस्लाम के हसीन चहरे पर डाली जाने वाली दबीज़ चादर को तार तार करके इश्क़े रसूल की नूरानी ताबानियों से मुनव्वर कर दिया जिसकी ज़ियाबार किरनें सुबहे क़यामत तक पूरी दुनया को मुस्तफ़ीज़ करती रहेंगी जिनका मुबारक व मुक़द्दस नाम सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हक़ परस्त हक़ गो तबक़े का संगे मील बन गया है इश्क़ व यक़ीन के उस ताक़त और अज़ीम सरमाय को रासिखुलअक़ीदा मुसलमान मुजद्दिदे दीन व मिल्लत सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फाज़िले बरेल्वी के नाम से जानते हैं और ऐहले ईमान अपनी अक़ीदतों का खिराज यूँ पेश करते हैं!

डालदी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा
सय्यदी आला हज़रत पे लाखें सलाम

कफ़श बरदारे उलमा
सिराजुल क़ादरी बहराइची

नज़रान ए अक़ीदत

शहज़ाद ए आला हजरत जानशीने मुफति ए आज़म हिन्द ताजे शरीअत मुफ़्ती अख़तर रज़ा ख़ाँ कादरी बरकाती (हुजूर अजहरी मियाँ) साहिब क़िबला दामत बरकातुहुमुल कुदसिया की बारगाह में तमाम गुल बूटे निसार जिनकी ज़बाने फैज़े तरजुमान से निकली हुई दुआ मुस्तजाब का दरजा रखती है।

मुझ जैसे ना जाने कितने अफराद कास ए गदाई लिए हाज़िर होकर दुआओं की दरख़्वास्त करते हैं और करम की भीक पाकर सुरखुरू व निहाल हो ते हैं

अल्लाह जल्ला शानुहू अपने हबीब दोनो आलम के तबीब सल्ललला हो अलैहे वसल्लम के सदक़े व तुफैल में मेरे मुर्शिदे बरहक़ को सिहत व तन्दरुस्ती के साथ उम्रे ख़िज़्र अता फ़रमाए (आमीन)

मुहताजे करम
सिराजुल क़ादरी बहराइची

नज़रे अक़ीदत

वालिदैन करीमैन के हुजूर जिन्होंने ज़िन्दगी के हर मरहले पर मेरे शऊर की सही राह नुमाई की है 6 साल की उम्रे क़लील ही में मकतब में दाख़िल करके मेरे ज़हेनो फिक्र को कुरआन व सुन्नत में ढालने के लिए वक़्फकर दिया था अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त सरकारे दो आलम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े में उनकी तुरबत पर सुबहो शाम रहमत व नूर का सावन भादों बरसाए और जन्नतुल फिरदोस में जगहअता फरमाकर उनके दरजात बलंद फरमाए आमीन

दुआगो
सिराजुल क़ादरी बहराइची

इज़हारे हकीकत

रसूले गिरामी वकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि सबसे बड़ा जिहाद ज़ालिम व जाबिर हुक्मराँ के सामने कलेम ए हक़ बलंद करना है हमारे असलाफ़े किराम इस हदीसे पाक की अमली तफसीर बनकर हर दौर में उठने वाले फितनों को दबाने के लिऐ ज़ालिम व जाबिर सर बराहों और हुक्मरानों के सामने सीना सिपर होकर परचमे हक़ लहराते रहे चाहे वह फितन ए दीने इलाही हो या फितन ए इरतेदाद, नजदियत वहाबियत हो, खुवाह क़ादयानियत, लिसानी व क़ल्मी जिहाद के ज़रीये हर नौ इय्यत के फितनों का सर कुचल कर पाकीज़ा नज़रियात की तरवीज व इशाअत और मसलके हक़ की नुसरत व हिमायत और पासबानी करते रहे नित नये फितने और यावा गोई से इस्लाम के मान्ने वालों को आगाह करते हुए इस्लाह करते रहे, हमारे बुजुर्गों की मोमिनाना बसीरत और इसलाही कारनामों ने मुसलमानों को मज़हबी, सियासी और रूहानी सतेह पर गुनाँ गुं शऊर और इसतेह काम बख्शा है चौदहवीं सदी हिजरी में सहारन पुर से देहली तक चिटिंग बाज़ों ने फितना अंगेज़ी के लिए ऐसा ग़लीज़ माजूने मुरक्कब तैयार किया था जिसकी बू ही से मशामे ईमान परा गन्दा हो जाता है बे हया अफराद ने उफक़े इस्लाम पर ऐसी ज़र्बे कारी लगाई जिससे पूरा आलमे इस्लाम चीख़ उठा खानिक़ाहें गिरया कुनाँ हो गईं मदारिस व मसाजिद में सफे मातम बिछ गई, अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट के पालतू कुत्ते तौहीने अंबिया व औलिया के अलावा ज़ाते बारी तआला की तनक़ीस से बाज़ ना रहे, जिससे हालात निहायत पेचीदा, नाजुक और हौसिला शिकन हो गए थे, ग़रीब सादा लौह मुसलमानों के मताए ईमान पर दिन दहाड़े डाका डाल रहे थे सरे आम मताए ईमान व इस्लाम को लूट रहे थे सरमाय ए हयात पर शबखून मार रहे थे बद अक़ीदगी और बदमजहबी की हुक्मरानी थी हुरमते इश्क़ के ख़िलाफ़ बेहंगम और ग़लीज़ ज़बानों का इस्तेमाल ऐहले हक़ के लिए सबसे बड़ी अज़ीयत थी मगर रब्बे क़दीर की बे पायाँ रहमतों से मायूस ना थे ऐहले ईमान रब तबारका व तआला की बखशिश व इनायात के

मुन्तजिर थे बिलआखिर मशीयते इलाही को जलाल आ ही गया ऐन नाजुक वक्त और संगीन हालात में वह मर्दे आहन इस्लाम का मर्दे जलील आया, जो इस्तेक़ामत का पैकर था आयातुम मिन आयातिल्लाह था महबूबे दावर के मोजिज़ों में से एक मोजिज़ा था जो इश्के रसूल से सरशार था नामूसे रिसालत का मुहाफ़िज़ व पासबान था मदीने वाले आक़ा सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम का इन्तेख़ाब था गुसताख़ाने रसूल के लिए अशिद्दाउ अललकुफ्फ़ार की अमली तफ़सीर था और अपनों के लिए ,रुहामाउ बैनहुम ,का मज़हर व मुसकुराती हुई नर्म व नाजुक कलयों के मिस्ल जिसके इल्म व फ़न की धमक अरब व अजम में महसूस की गई जब क़लम उठाया लिखता चला गया बद मज़हबों की लाशें सर बुरीदह हो कर बिखरती चली गयीं हवादिसाते ज़माना से नबुर्द आज़मा होकर कलेम ए हक़ बलंद करता चला गया पलट कर ये भी ना देखा कि खार शिगाफ सैफे क़लम की ज़द में कौन कौन आ रहा है बस एक लगन थी एक धुन थी एक सच्चा इश्क़ था कि ज़माना रूठता है रूठ जाए मगर ना मूसे मुस्तफा पर हर्फ़ न आए यही वजह है कि इमाम अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी के क़लमदाने इश्क़ की रोशनाई कभी खुश्क न हो सकी राहे इश्क़ की राहनुमाई इस तरह फरमाई कि जो भी उसकी देहलीज़ पर कास ए गदाई लेकर आया उसे मिमारे क़ौम और क़ाइदे मिल्लत बना दिया गौस व ख़्वाजा के नाम कि मिज़ाइलों और असलहों से सजाकर मैदाने कारज़ार का मुजाहिद और ग़ाज़ी बना दिया क़ुफले तग़ाफुल और जुमूदगी को तोड़कर हरकते मुसलसल की दाइमी कुव्वतों से आशना कर दिया जिससे मिल्लत की शीराजह बन्दी हो गई ग़र्ज़ कि इमाम अहमद रज़ा ने हर क़दम और हर मौक़े पर दुशमनाने इस्लाम का तअक्क़ुब करके अपनी खुदा दाद सलाहियतों की बुनियाद पर फितना गरों के दामे फ़रेब में फँसने ना दिया और क़ौम व मिल्लत को ज़लालत व गुमराही के क़ारे मज़ल्लत में गिरने से बचा लिया !

इमाम अहमद रज़ा खान का यही तुर्र ए इमतियाज़ वस्फ था जिसके मुतहर्रिक अफ़आला व अक़वाल से हज़ार हा इन्क़िलाब आए

जिस में ततहीर का सामान था आक़ ए करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम से सच्ची मुहब्बत करने का शऊर था बद मज़हबों से अदावत और परहेज़ करने का पैग़ाम था गन्दुम नुमा जौ फरोश लोगों की नक़ाब कुशाई थी आक़ा ए निमत सरकारे आला हज़रत रज़ियल्लाहो अनहु जिस वक़्त बज़्में इश्क में अपनी तमाम तर जलवा सामानियों के साथ जलवा गर हुये!

मसलेहतों के क़लम की रोशनाई खुश्क हो गई न जाने कितने बे ढंगे गुसताखे रसूल ख़तीबों की ज़बानें गुंग हो के रह गईं और देवबंद व नदवह के आवारह मुतहर्रिक क़लमों ने इनजिमाद की सूरत इख़तियार करली सरकारे आला ह़ज़रत ने इश्क़ की आबरू लुटने से बचाली हक़ व बातिल के इम्तियाज़ में गैरते वफ़ा को कुर्बान व दाग़दार ना होने दिया किसी भी किस्म की मसलेहतों के लिए कोई भी राज़ी न कर सका जब भी किसी गुस्ताख़ ने नामूसे मुस्तफ़ा सल्लललाहो अलैहे वसललम को चेलेंज किया तो आपकी ग़ैरत को जलाल आ गया और लब व लहज़े में तलख़ी ही नहीं बल्कि तुग़यानी आ गई और बग़ैर किसी हील व हुज्जत के उस नाबकार के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए उन्हें इस हक़ीक़त पर मुकम्मल यक़ीन था कि जिस बद नसीब का रिश्ता सरवरे अंबिया से मुनक़ता हो जाए तो उसके लिए अरजो समा की वुसअतों में कहीं भी जाए पनाह नहीं आप फरमाते हैं।

बखुदा खुदा का यही है दर नहीं और कोई मफर मक़र
जो वहाँ से हो यहीं आके हो जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं।

हमारे बुज़ुर्गों ने इहक़ाके हक़ और इबताले बातिल में पूरी पूरी ज़िन्दगी सर्फ़ करदी फ़क़त इसलिए कि ग़रीब मुसलमान हकाइक़ से आशना हो कर ईमानी लुटेरों से अपने ईमान व अक़ीदे को महफ़ूज़ रख सके हज़रत अल्लामा अबदुस्सत्तार हम्दानी दामत बरकातुहुमुल क़ुदसिया के मुसव्वेदात (जिसमें ग़लीज़ इबारतों की निशान देही की गई है।) जमा करके ज़रूरी तशरीहात के साथ किताबी सूरत में पेश करके मैंने कोई अहेम और बड़ा कारनामा

अन्जाम नहीं दिया है महेज़ अवाम व ख़वास के रू बरू देवबंदी मुल्लाओं के सियाह चेहरों को बे नक़ाब करने की अदना कोशिश की है मुझे उम्मीद है कि ऐहले ईमान और सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमान "मुजरिम अदालत में" नामी किताब को जरूर पसंद फरमायेंगे मुनसिफ मिज़ाज दयानत दारी से मुताला करके जंग आलूद सियाह दिलों से अपनी बेज़ारी का ऐलान करेंगे दाद व दिहश,इन्आम व इकराम की ख़्वाहिश नहीं इसके सिले में रसूले गिरामी वक़ार सल्ललला‌हो अलैहे वसल्लम की रहमतों के चंद छींटे अता हो जाऐं बस इसी में ज़िन्दगी की मेराज समझता हूँ।

परवरदिगारे आलम की बारगाह में दुआ है के रसूले करीम सल्ललला‌हो अलैहे वसल्लम के सदक़े में सदाए हक़ से हम सबके कान आशना रहें (आमीन)

गुबारे राहे उलमा
सिराज अहमद सिराजुल क़ादरी बहराइची
4 / जमादियुल अव्वल 1424 हि0
मुताबिक़ 5 / जूलाई 2003 ई0

बुरा मान गऐ

अज़/ मौलाना मोहम्मद अहमद माहिरुल क़ादरी

फ़ातिहा हमने दिलाया तो बुरा मान गए
रब्बेसल्लिम जो पढ़ाया तो बुरा मान गए

फूल कुफ़्फ़ार की मरघट पे वो डालें तो दुरुस्त
हमने तुरबत पे चढ़ाया तो बुरा मान गए

ख़ुद जनम दिन वह मनाऐं तो कोई बात नहीं
हमने मीलाद मनाया तो बुरा मान गए

उम्र भर शौक से खाते रहे काला कव्वा
हमने मुर्गा जो खिलाया तो बुरा मान गए

उनको जाइज़ है दीवाली की कचौड़ी पूरी
हमने शर्बत जो पिलाया तो बुरा मान गए

रात दिन ख़ुद तो बग़ावत की पकाऐं खिचड़ी
हमने खिचड़ा जो पकाया तो बुरा मान गए

बज़्मे इबलीस में जलती हैं हज़ारों शमऐं
एक दिया हमने जलाया तो बुरा मान गए

ख़ुद चढ़ाई हुई चादर की बनाऐं पगड़ी
हमने क़ब्रों पे चढ़ाया तो बुरा मान गए

बज़्मे मीलाद में उठकर कभी माहिर हमने
उनकी ताज़ीमें मनाया तो बुरा मान गए

इल्मे गैब

और कोई गैब किया तुमसे निहाँ हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

मुंदर्जा ज़ेल इबारतों में इल्मे गैब की नफी की गई है।

(1) मोल्वी अशरफ अली थान्वी ने सरकारे दो आलम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे गैब को बच्चों पागलों और जानवरों से तशबीह देते हुए लिखा है कि

"आपकी ज़ाते मुक़द्दसा पर इल्मे गैब से मुराद बाज़ गैब है या कुल अगर बाज़ उलूमे गैबिया मुराद हैं तो इसमें हुजूर सल्ललाहो अलैहे वसल्लम की ही क्या तखसीस है ऐसा इल्मे गैब तो ज़ैद व अमर बल्कि हर सिब्बी व मजनून बल्कि जमी हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है (मआज़अल्लाह)

(हवाला: हिफजुल ईमान, दारुल किताब, देवबंद, स0,15)

मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी

(2) सरकारे दो आलम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे गैब को शैतान और मलकुल मौत के इल्मे गैब से कम बताते हुए आँ जनाब रक़म तराज़ हैं कि

"अल हासिल गौर करना चाहिये कि शैतान और मलकुल मौत का हाल देख कर इल्मे मुहीते ज़मीन का फखरे आलम को खिलाफे नुसूसे क़तइया के बिला दलील महेज़ क़यासे फ़ासेदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौनसा ईमान का हिस्सा है, शैतान व मलकुल मौत को ये वुसअत नस से साबित हुई फ़ख़रे आलम की वुसअते इल्म की कौन सी नस्से क़तई है जिससे तमाम नुसूस को रद कर के एक शिर्क साबित करता है (मआजअल्लाह)

(हवाला: बराहीने क़ातेआ, स0,55)

मोल्वी इसमाईल देहल्वी

(3) हजरत जी, अंबिया व औलिया के इल्मे ग़ैब का साफ़ इन्कार करते हुए लिख रहे हैं कि। जो कोई ये कहे की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम या कोई इमाम या बुज़ुर्ग ग़ैब की बात जानते थे और शरीअत के अदब से मुँह से न कहते थे वह बड़ा झूटा है क्योंकि ग़ैब की बात अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है"

(हवाला न0 1:तक़वियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 48)
(हवाला न0 2:तक़वियतुल ईमान, कुतुबख़ाना मसऊदया देहली, स0 40)

(4) किसी नबी, वली या इमाम व शहीद की जनाब में हरगिज ये अक़ीदा न रखे कि वह ग़ैब की बात जानते थे बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में भीये एतेक़ाद न रखे

(हवाला न0 1:तक़वियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 47)
(हवाला न0 2:तक़वियतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदया देहली, स0 45)

(5) और इसी तरह कुछ इस बात में भी उनको बड़ाई नहीं कि अल्लाह ने ग़ैब दानी उनके इख़्तियार में दे दी हो कि जिसके दिल का हाल जब चाहें मालूम कर लें या जिस ग़ायब का हाल जब चाहें मालूम कर लें कि वह ज़िन्दा है या मर गया या किस शहेर में है या किस हाल में है (वगैरा) इन बातों में बंदे बड़े हों या छोटे सब यकसाँ बेखबर और नादान हैं ।

(हवाला न0 1:तक़वियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 46)
(हवाला न0 2:तक़वियतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदया देहली, स0 44)

मोल्वी रशीद अहमद गंगोही

(6) मुल्लाजी ने लिखा है कि

"हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे ग़ैब न था न कभी उसका दावा किया और कलामुल्लाह शरीफ़ और बहुत सी अहादीस में मौजूद है कि आप आलिमुल ग़ैब न थे और ये अक़ीदा रखना कि आप को इल्मे ग़ैब था सरीह शिर्क है।(मआज़अल्लाह)

(हवाला न0 1:फतावा रशीदया (मुबव्वब)1987 ई0 स0 103)
(हवाला न0 2:फतावा रशीदया (क़दीम)1363 हि0 ,स0 141)

(7) दूसरी जगह रक़्म फरमाते है कि "इल्मे ग़ैब ख़ास्स ए हक़

तआला है इस लफ्ज़ को किसी तावील से दूसरे पर इतलाक़ करना इबहामे शिर्क से खाली नहीं।
(हवालाः न0 1:फतावा रशीदया (कदीम)1363 हि0,जि0 1, स0 20)

(8) मोल्वी ख़लील अहमद अंबेठवी शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी की तरफ एक ग़लत इबारत मनसूब करते हुए लिखते हैं कि।

"और शैख़ अब्दुल हक रिवायत करते हैं कि मुझको दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं" (हवालाः न0 1:बराहीने क़ातेआ स0 55)

अकाबिर उलमा ए देवबंद का इल्मे ग़ैब

(1) मोल्वी क़ासिम नानोतवी लिखते हैं कि

"एक मरतबा मैंने गंगोह की ख़ान्क़ाह में रखे हुए बधने में कुंए से पानी भर कर पिया तो पानी कड़वा पाया मैंने रशीद अहमद गंगोही से कहा तो उन्होंने कहा कि कुंऐ का पानी तो मीठा है। लेकिन उन्होंने चखा तो पानी कड़वा था बाद नमाज़े ज़ोहर सब नमाज़ियों ने और खुद ने कलेमा तय्येबा पढ़ा फिर दुआ की फिर पानी पिया तो पानी मीठा था तब गंगोही ने कहा कि इस बधने की मिट्टी उस क़ब्र की है जिस पर अज़ाब हो रहा था अल हमदो लिल्लाह कलेमे की बरकत से अज़ाब रफा हो गया"।

(हवाला न01 तज़करेतुल रशीद जि0,2 स0 202)

(2) थान्वी ने ब हवाला मोल्वी अब्दुल्लाह रिवायत किया है कि

एक मोल्वी के इन्तेक़ाल की खबर आई उस पर मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने कहा कि "मोल्वी" का मुँह क़िबले से फिरा हुवा होगा जिसका जी चाहे कब्र खोलकर देख ले मैं देख रहा हूँ कि मुँह क़िबले से फिर गाया है।

(हवालाःहसनुल अज़ीज़ जि0,4 क़ि0,10 स0164)

(3) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के इल्मे ग़ैब पर दलालत करने वाला एक वाक़ेआ मोल्वी आशिक़ इलाही मेरठी ने लिखा है कि :

"मुन्शी निसार अली और गौहर खाँ मुलाज़िम पलटन 65 रुख्सत लेकर बइराद ए बैअत लखनऊ से गंगोह रवाना होने को तैयार हुए दरवाज़े पर सवारी तक आ खड़ी हुई इत्तिफाक़ से किसी हाकिम की आमद का तार आया और ऐन वक़्त पर उनको अफसर के हुक्म

से रुकना पड़ा उस दिन के बाद फ़ारिग़ होकर गंगोह पहुँचे तो हज़रत यानी (गंगोही)ने साफ इरशाद फरमाया कि तुम दोनों साहब फलाँ दिन रवाना होना चाहते थे मगर रोक लिये गए थे और जब खाना दस्तर ख्वान पर आया तो फरमाने लगे कि आपके साथ दो टट्टू भी तो हैं आख़िर वह भी मेरे महमान हैं अव्वल उनको घास दाना पहुँचाना चाहिए हालाँकि दोनों के टट्टू पर सवार हो कर आने की इत्तिला आपको किसी आदमी ने नहीं दी थी''

(हवाला : तजकेरतुल रशीद जि0,2 स0 224)

माँ के पट में किया है

(1) मोल्वी इसमाईल देहलवी ने तक़वियतुल ईमान में ''अलइशराको फिल इल्म '' की फस्ल में लिखा है कि ;

'' इसी तरह जो कुछ मादा के पेट में है उसको भी कोई नहीं जान सकता कि एक है या दो नर है या मादा कामिल है या नाक़िस खूबसूरत है या बद सूरत।

(हवाला न0 1:तकवियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 42)
(हवाला न0 2:तकवियतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदया देहली, स0 ,40)

(2) शाह अब्दुल रहीम विलायती के मुरीद अब्दुल्लाह ख़ान जो क़ौम के राज पूत थे उनके पास अगर कोई अपने घर में ह़मल होता और तावीज़ लेने आता तो उसे अब्दुल्लाह बता दे ते थे कि तेरे घर में लड़की होगी या लड़का और जो अब्दुल्लाह बता दे ते थे वही होता था ।

(हवाला न0 1:हिकायतुल औलिया हिकायत न0,147, स0 184)
(हवाला न0 2:अरवाहे सलासा हिकायत न0,147,)

(3) पँजलासा (पँजाब) में शाह अब्दुल रहीम के ख़लीफ़ा राओ अब्दुल रहमान के क़श्फ़ की ये हालत थी कि कोई लड़की या लड़के के लिए तावीज़ माँगता तो बे तकल्लुफ़ कह देते कि तेरे घर लड़का या लड़की होगी लोगों ने अर्ज़ किया कि हज़रत ये कैसे आप बता देते हैं फ़रमाया किया करूँ बे महाबा मौलूद की सूरत सामने आ जाती है।

(हवाला न0 1 :हिकायतुल औलिया हिकायत न0,254, स0 271)
(हवाला न0 2 :अरवाहे सलासा हिकायत न0,254) .
(हवाला न0 3 :सवानेह क़ास्मी, जि0,8 स0,257,)

(4) हाफिज़ गुलाम मुर्तज़ा ने अशरफ़ अली थान्वी के पैदाइश रो क़ब्ल पेशीन गोई की कि थान्वी की वालिदह से दो लड़के तवल्लुद होंगे एक का नाम अशरफ़ अली रखना और दूसरे का नाम अकबर अलीरखना और ये भी बता दिया कि हाफ़िज़ व मोल्वी होगा और दूसरा दुनिया दार होगा बक़ौल सवानेह निगार ये सब पैशीन गोईयाँ हर्फ़ बा हर्फ़ रास्त निकलीं।

(हवाला न0 1:अशरफुस्सवानिह जि0,1 स0,17)

(5) थान्वी ने कहा कि मैं गुलाम मुर्तज़ा मज जूब की दुआ से पैदा हुआ हूँ वालिदह की औलाद ज़िन्दा नहीं रह ती थी क्योंकि बाप फारूक़ी और वालिदह अल्वी थीं उमर और अली की खींचा तानी में टूट जाती है गुलाम मुरतज़ा ने कहा कि अली के नाम से निस्बत करने से औलाद ज़िन्दा रहे गी चुनाँचे हम दोनो भाईयों के नाम अशरफ़ अली और अकबर अली भी बता दिये और ये भी बता दिया कि दो लड़के होंगे ।

(हवाला:न01:अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि0,3,क़िस्त0,16मल0,11,स0,14)
(हवाला न02:अल इफ़ाज़ातुल योमिया जि0,1क़िस्त0 6,मल0,152 स0 78)
(हवाला न03:अशरफुस्सवानिह जि0,1 ,स0 164)
(हवाला न04:अशरफुस्सवानिह जि0,1 ,स0 7)

सुबूते इल्मे ग़ैब

मुंदरजा बाला इबारतों में देवबंदी उलमा ने अपने अकाबेरीन के इल्मे ग़ैब को साबित किया है और अंबिया व औलिया के तअल्लुक़ से इल्मे ग़ैब का इन्कार किया है ये बात इन्तिहाई ना क़ाबिले फहेम है कि इन ज़ालिमों ने अपने नबि ए बरहक़ ग़ैब दाँ पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ाते वाला सिफ़ात को तनक़ीद व तनक़ीस का हदफ बनाया जब की सच तो ये है कि बग़ैर हुब्बे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दीन व इस्लाम का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात व सिफ़ात को हर ऐब व नक़्स से साफ़ व शफ्फ़ाफ़ तसलीम करने वाला ही मोमिन होगा रिश्ते दारी , क़राबत दारी, ग़र्जे कि सारे रिश्तों नातों पर सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निसबत मुक़द्दम है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कोई भी जाँ

निसार इन गुस्ताख़ और दरीदा दहन देवबंदी वहाबी मोल्वियों के ग़लीज़ कलेमात को सुनकर ख़ामोश नहीं रह सकता जब जब गुसताखियाँ की जायेंगी या की हुई गुसतखियों का तज़केरह होगा, गुलामाने आला ज़रत सीना सिपर होकर आला हज़रत की ज़बान व कलम बनकर एलान करते रहेंगे।

वह रज़ा के नेज़े की मार है कि अदू के सीने में ग़ार है।
किसे चारह जोई कावार है कि ये वार वार से पार है।

सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मुतअल्लिक़ कुरआन मजीद में रब तबारका व तआला ने ईरशाद फरमाया: وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِي مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاءُ (तरजुमा) और अल्लाह की शान ये नहीं है कि ऐ आम लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसुलों में से जिसे चाहे(कंजुल्ईमान,पा0,4 आले इमरान आय0,179)

दूसरी जगह इरशाद है कि गैब का जानने वाला तो अपने गैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता सिवाय अपने पसंदीदा रसुलों के (कंजुल्ईमानपा0,29,अलजिन आयत,27)

कौले बारी तआला का तेवर मुलाहेज़ा कीजिये रब तआला आम लोगों को गैब पर मुत्तला नहीं फरमाता लेकिन जिन्हें ग़ैब का इल्म बताना चाहता है उनका इनतेखाब करलेता है अब मैं मुन्किरीने इल्मे ग़ैब से पूछना चाह ताहूँ कि يجتبى من رسله من يشاء के जुमरे में तुम्हारे नज़दीक किस का इंन्तेखा़ब हुवा अगर जवाब नफी में है तो وما له فى الاخرة من خلاق के तहेत फैसला हो चुका और अगर तुम्हारा जवाब इसबात में है तो मान्ने से इन्कार क्यों ?

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मेरी सारी उम्मत को पैदाइश से पहले मुझ पर पेश फ़रमाया और मुझे इल्म दिया गया कि कौन मुझ पर ईमान लाएगा और कौन ईमान नहीं लाएगा जब ये बात मुनाफेक़ीन ने सुनी जो दरे पर्दा इस्लाम की बेख़ कनी करते थे और बज़ाहिर इस्लामी शक्ल व सूरत से मुसलमान साबित करते कहने लगे ये तो बहुत बड़ा दावा है इसकी दलील भी होनी चाहिए आक़ा सलल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ होकर इरशाद फ़रमाया आज से क़यामत क़ायम होने तक सारे अहवाल वाक़ेआत

में से जो चाहो पूछ लो जाँ निसार सहाबा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सैहमी रजियल्लाहो अन्हो खड़े हो जाते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मेरा बाप कौन है ग़ैब दाँ नबी ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारा बाप हुज़ाफ़ा सहमी है (मुनाफ़ेक़ीन उनके नसब को मशकूक बताते हुए हिजो करते थे) अब मुनाफ़ेक़ीन के चहरे का जुग़रा फ़ियह बदलने लग़ा और यके बाद दीगरे राहे फ़रार इखतियार करने पर मजबूर हो गए।

ग़ौर करने का मुक़ाम है कि नसब की वज़ाहत वह पोशीदह ख़बर है जिसका इल्म माँ के अलावा किसी को नहीं होता लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम उसे भी जानते हैं और उसकी ख़बरें भी देरहे हैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की साहिब ज़ादी सय्यदह फ़ातेमा ज़हरा रज़ियल्लाहो अनहा जब उम्मीद से थीं तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की चची साहिबा हज़रत उम्मुल फ़ज़्ल बिन्ते हारिस ज़ौज ए हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो ने एक ख़्वाब देखा जो बड़ा भयानक और ख़ौफ़ नाक था डरते डरते सरकार की बारगाहे आली मर तबत में हाज़िर हुई सरकार के इसरार पर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मैं ने देखा है कि आपके बदन का एक टुकड़ा काटा गया और मेरी गोद में रखा गया आपने इरशाद फ़रमाया कि चची जान ये तो बहुत मुबारक ख्वाब है इंशाअल्लाह फातेमा को लड़का पैदा होगा और तुम्हारी गोद में दिया जाएगा चुनानचे ऐसा ही हुवा इमाम हुसैन रजियल्लाहो अन्हो पैदा हुए आज जब कि साइन्सी दौर है तरक़्क़ी की मंज़िलों से इन्सान गुज़र रहा है मुन्किरीने इल्मे ग़ैब कह सकते हैं कि आज दाया और डाक्टर भी लड़की या लड़के की निशान देही कर देते हैं और मशीनों के ज़रीये से भी मालूम हो जाता है अगर हुजूर ने बताया तो कौन सा इल्मे ग़ैब साबित हुवा लेकिन ये उनकी बकवास समझी जाएगी मैं आप की तवज्जो किसरा के कँगन की जानिब मबजूल कराना चाहता हूँ साफ़रे हिजरत के मौक़े पर आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि ऐ सुराक़ा मैं तुमहारे हाथों में किसरा का कँगन देख रहा हूँ ये पेशीन गोई दौरे फ़ारूक़ी में पूरी हुई सय्यदुना

उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने किसरा का कँगन जनाबे सुराक़ा को पैहनाया।

उमर फ़ारूक़ ने पैहना दिया कंगन सुराक़ा को
यही तो गैब दानी थी तुम्हारी या रसूलल्लाह। अज़–शाकिरुलकादरी इन्दोर ऐम पी

ये इल्मे गैब नहीं तो और किया हैं ? ग़ज़व ए ख़न्दक़ के मौक़े परआक़ा ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के उस अज़ीम चटान के तोड़ने का वाक़ेआ भी इल्मे गैबे मुस्तफा को साबित कर रहा है जो खोदाई के वक़्त निकल आई थी सिहाबा उसको तोड़ने में नाकाम हुए थे तो महबूबे किरदिगार ने अपनी तवानाई का बे मिसाल मुज़ाहिरा करते हुए उस चटान को तीन ज़रबों में पाश पाश कर दिया था और हर ज़र्ब पर गैब की ख़बर दे रहे थे मुझे मुल्के शाम दिया गया, मुझे मुल्के फ़ारस दिया गया यानी मेरी उम्मत शाम व फ़ारस को फ़तेह करेगी और ईरान को फ़तह करले गी किया इन वाक़ेआत का तअल्लुक़ इल्मे गैब से नहीं है? आगे बढ़िये और इरशादे बारीतआला मुलाहेज़ा कीजिए : وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ

और ये नबी गैब बताने में बख़ील नहीं (कंज़ुल ईमान प० 30,अत्तकवीर आयत,42)

मज़कूरह आयते करीमा से साफ़ वज़ाहत हो रही है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे गैब दिया गया दूसरे ये कि इस दिये गए इल्मे गैब से बहुत कुछ बता दिया बता देना सख़ावत की अलामत है और ना बताना बुख़ालत पर महमूल है सख़ी वही हो सकता है जिसके पास कुछ हो और लोगों को अता करता रहे अगर मेरे अक़ा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे गैब न होता तो कैसे बता देते दूसरी आयतों की तफ़सीरों से भी मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब को इल्मे गैब दिया और अपने सिहाब ए किराम को गैब की ख़बरों से आगाह फ़रमा दिया।

हज़रत सय्यदुना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमें इबतेदा ए मख़लुक़ात से लेकर एहले जन्नत के जन्नत और ऐहले नार के दोज़ख़ में दाखिल होने तक की ख़बरों से आगाह फ़रमाया है।

इन अक़्ल के दुश्मनों को कौन समझाए आमिना के लाल के इशारे

पर बादल आकर बरस्ते थे और इशारा पाते ही खुल जाते थे किया तारीख़ का वह सुनहेरा बाब याद नहीं है,जब एक जुमा को एक सहाबी ने बारिश न होने की वजह से अपनी परेशानियों का ज़िक्र किया था कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम चरागाहें खुश्क हो चुकी हैं मवेशी परेशान हैं, दुआ फ़रमाईये आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने नूरानी हाथों को बलंद फ़रमाया अभी दुआ खत्म भी न हो पाई थी कि यका यक मूसला धार झमा झम बारिश शुरु हो गई,चमन लैह लहा उठे सर सब्ज़ी व शादाबी से पूरे ख़ित्ते का जुग़राफिया बदल गया, आठ रोज़ तक मुसल सल बारिश होती रही दूसरे जुमा को वही सहाबी हाज़िर हो कर बारिश से होने वाले नुक़सानात का तज़किरा कर रहे हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अब तो बारिश की वजह से मकानात मुन्हदिम हो रहे हैं तबाही आ गई है अब बारिश बंद होनी चाहि़ये मेरे आक़ा ने इशारह फरमा दिया कि हम पर न बरसे क़ुरबो जवार में बरस्ता रहे नतीजा ये हुवा कि बादल खुल गए अतराफ़ व जवानिब में उस वक़्त तक बारिश होती रही जब तक खुदा को मन्जूर रहा बताइये ऐसे क़ुव्वत व तसर्रुफ़ वाले बइख़तियार नबी की ज़ात में ऐब तलाश किया जा रहा है खुदावंदे करीम इन मुन्किरीने इल्मे ग़ैब और बे अक़्ल नजदियों को शऊर व आगाही अता फ़रमाए (आमीन)

अक़्ल होती तो ख़ुदा से न लड़ाई लेते
ये घटायें उसे मंजूर बढ़ाना तेरा।।

हज़रते अम्मार बिन यासिर रजियल्लाहो अन्हो बड़े ज़ाँ निसार वफ़ा शिआर सहाबी गुज़रे हैं एक दफ़ा मदीना शरीफ़ में एक इमारत तामीर हो रही थी कि एक दीवार आप पर गिर गई हर तरफ शोर व गौग़ा था कि अम्मार बिन यासिर शहीद हो गए ये बात जब ग़ैब दाँ पैग़म्बर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम तक पहुँची तो आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं अम्मार को बाग़यों की एक जमातअ शहीद करेगी और वही हुवा जो आपने फ़रमाया था एक जंग में हज़रत अकरमह बिन अबू जहल (जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) ने एक मुसलमान को शहीद कर दिया था सरकार को मालूम हुवा तो

फ़रमाया मैं क़ातिल व मक़तूल दोनों को जन्नत में देख रहा हूँ सुबहानल्लाह सहाब ए किराम की हैरत उस वक़्त जाती रही जब जनाब अकरमह इस्लाम की दौलते लाज़वाल से सरशार हुए और आगे बढ़िये मुन्किरीने इल्मे ग़ैब आँखें बंद करके वहाबियत और देवबंदियत की गोली बग़ल में दबाकर मुनाफ़िक़त का माजून खा कर बुख़ारी व मुस्लिम का मुताला करते हैं और हवा में तीर चलाते हैं अगर इश्के रसूल की शमा सीने में फ़रोज़ाँ करके अहादीस का मुताला करते तो हरगिज़ गुमराह न होते मक़ामे बद्र में गिरिफ़तार होने वालों में सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने चचा के ज़िम्मे तीन आदमियों का ज़रे फ़िदया मुक़र्रर फ़रमाया हज़रते अब्बास लगे बहाने करने कि मेरे पास इतना माल किधर से आएगा तो आपने हक़ीक़त के चहरे से नक़ाब उठा दिया इरशाद फ़रमाया, चचा जान आप जिस वक़्त घर से चले थे चची साहेबा से क्या कह कर आए थे वह सोना किधर गया जो रात की सियाही में ये कह कर छोड़ आए थे कि मारा जाऊँ तो इतना फ़लाँ को देना इतना फ़लाँ को देना और अगर ज़िन्दा बच कर आ गया तो खुद ही हिसाब कर दूँगा इतना सुन्ना था कि हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो बे क़रार होकर अर्ज़ करते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम रात की तारीकी और भयानक सन्नाटे में जिस वक़्त मैंने अपनी अहलिया के सपुर्द सोना किया था कोई तीसरा मौजूद न था शबे दैजूर में होने वाली गुफतगू की ख़बर रखना आपके बर हक़ होने की सच्ची अलामत और रोशन दलील है आप गवाह हो जायें मैं इस्लाम में दाखिल हो रहा हूँ: मोहतरम हज़रात देखा आपने हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो ने सरकार की ग़ैब दानी से मुतअस्सिर होकर इस्लाम का इज़हार फ़रमाया तअज्जुब है उन तबलीग़ी, नदवी, देवबंदी, मौदूदी वग़ैरहुम के नाक़िस इल्म और कज फ़हमी पर जो इल्मे ग़ैब का इन्कार कर रहे हैं रब तआला उन ना समझों को सच्ची समझ अता फ़रमाए (आमीन)

कुन्जी तुम्हें दी अपने ख़ज़ानों की खुदाने
महबूब क्या मालिक व मुख़तार बनाया।

नमाज़ में नबी का ख़्याल

नमाज़ में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहे अलैहे वसल्लम का ख़्याल आना, उस के मुतअल्लिक़ इसमाईल देहलवी रक़म तराज़ हैं:

(1) " नमाज़ में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख़्याल आना ज़िना के वसवसे से अपनी बीवी की मुजामेअत का ख्याल बेहतर है और शैख़ या उसी जैसे और बुज़ुर्गे की तरफ़ खुवाह़ रिसालत मआब ही हों अपनी हिम्मत लगा देना अपने बैल और गधे की सूरत में मुस्तग़रक़ होने से बुरा है "(मआज़अल्लाह)
(हवाला: सिराते मुस्तक़ीम उर्दू, इदारतुल रशीद देवबंद स0 118)

मुन्दरजा बाला इबारतों की वज़ाहत करते हुए आँ जनाब लिखते हैं चूँकि हुज़ूर और शैख़ का ख़्याल उन की बुज़ुर्गी के साथ दिल में चिमट जाती है और बैल व गधे या बीवी से मुजामेअत या वसवस ए ज़िना से ऐसा नहीं होता है।

(2) एक तालिबे इल्म ने थानवी को लिखा कि खुशू के लिए नमाज़ में आप का ख्याल करता हूँ :जवाब लिखा नमाज़ में क़सदन न किया जावे– (हवाला: अशरफुस्सवानेह जि0,2 स0,125)

(3) ऐसे में. नमाज़े तहज्जुद और ज़िक्र में वाहियात ख्यालात महसूस करने वाले को आँजहानी थानवी जी ने लिखा कि अपने शैख़ का तसव्वुर उन परेशान ख्यालात का दाफे होगा:
(हवाला: अशरफुस्सवानेह जि02,स0, 131)

(4) एक शख़्स ने थानवी को लिखा कि नमाज़ में बावजूद बार बार तवज्जो करने के वसाविस का हुजूम रहता है जवाब में थानवी साहिब ने लिखा कि शैख़े कामिल या और किसी ऐसी ही चीज़ का तसव्वुर तजवीज़ करके उसका इस्तेमाल करें ।

(5) एक शख़्स ने थानवी को लिखा कि अगर आपकी सूरत का तसव्वुर करलूँ तो नमाज़ में जी लगता है। जवाब इनायत किया जाइज़ है मगर दो शर्त हैं एक ये कि एतेक़ाद में मुझे हाज़िर व नाज़िर न समझे और दूसरी शर्त ये है कि उसकी किसी को इत्तेला नदे ये तसव्वुरात ख़तरात के दरजे में है।
(हवाला: अलकलामुल हसन,हिस्सा,1मलफूज़,298 स0, 140)

(6) थानवी के बक़ौल: नमाज़ में बिला ज़रूरत गैरे नमाज़ का ख्याल न लाना चाहिये , हाँ अगर किसी जरूरत की वजह से मशरू या मबाह अर्म का ख्याल लाए और उसको क़सदन बाक़ी रखे तो उसमें मवाखिज़ा नहीं।

(हवाला: कमालाते अशरफिया1995 बाब,1मलफूज़,425 स0, 101)

ख़्यालाते फ़ासिदा

मआजअल्लाह सद बार मआजअल्लाह मज़कूरा बाला इबारतें किस क़दर अख़लाक़ सोज़ और गुमराह कुन हैं उम्मती अपने नबी के बारे में ख्यालाते फ़ासेदा रखे ये ज़हनी अय्यारी और शक़ावते क़ल्बी के अलावा किया हो सकता है रब फरमाता है : नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़्यादा मालिक है।(कंजुलईमान प0,21अल अहज़ाब अ0,9) इस आयत में लफ्ज़े औला पर गौर कीजिए: ज़्यादा मालिक, ज़्यादा क़रीब ज़ियादा हक़ दार मालूम हुवा की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर मोमिन के दिल में जलवह गर हैं हाज़िर व नाज़िर हैं क्योंकि वह हमारे सबसे ज़्यादा मालिक हैं और हमारी जानों से ज़्यादा राहत व सुकून व क़रार पहुँचाने वाले हैं:

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुहब्बत सब पर मुक़द्दम है आप खुद ही इरशाद फ़रमाते हैं तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे माँ और बाप औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब और प्यारा न हो जाऊँ इस से ज़ाहिर हुवा की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से तबई मुहब्बत करनी चाहिए न कि सिर्फ़ अक़्ली और ज़बानी जमा ख़र्च रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ऐसी मुहब्बत होनी चाहिए जैसी मुहब्बत अल्लाह तआला से होती है क्योंकि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुहब्बत रुकने ईमान है आप जाने ईमान हैं नबी का नमाज़ में ख्याल न आना ईमान की अलामत नहीं और न नमाज़ी की पहचान है इसमाईल देहलवी के नज़दीक वह नमाज़ बातिल है जिसमें नबी का ख़्याल आए और अशरफ़ अली थानवी ऐसी नमाज़ों को कामिल बताते हुए अमल पैरा होने का

नुस्खा भी अपने मुरीद व मुतवस्सिलीन को बता रहे हैं हर सुन्नी मुसलमान का यही अक़ीदा है कि जिस नमाज़ में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख़्याल न आए और आपकी मुहब्बत शामिले नमाज़ न हो वह इबादत ही फुजूल है ऐं मुनाफ़िक़ो तुमहें वह नमाज़ें मुबारक हों हम तो अदा ए मुस्तफ़ा शुमार करते हैं वही नमाज़ें पढ़ेंगे जिसे अबू बक्र व उमर ने पढ़ीं जिस पर तमाम सिहाबा व औलिया व बुजुरगाने दीन का अमल रहा है ऐ नादान! जब तक महबूब की अदाओं पर जान कुर्बान न करेगा इश्क़ की तकमील ग़ैर मुम्किन है और उसकी बात ही निराली है जो महबूबे रब्बुल आलमीन है ना कोई उनके मिस्ल है और ना कोई उन की मिसाल रब फ़रमाता है कि मेरे महबूब के होंट उस वक़्त हिलते हैं जब हमारी वही आती है गोया नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी ख़्वाहिश से लब भी नहीं हिलाते खुद हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी ज़बाने हक़ तर्जुमान से फ़रमाते हैं, मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ:

ताजदारे ऐहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं ।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब में नहीं मेरा तेरा

अंबिया व औलिया को बन्द ए आजिज़, ज़र्र ए नाचीज़ से कम तर वग़ैरह कहना

(और अकाबिरीने देवबंद की तारीफ़ में ग़ुलू करना)

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने लिखा है: "हर मख़लूक़ बड़ी हो या छोटी वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है। (मआजअल्लाह)

(हवाला 1: तक़वीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुम्बई, स0,30)

(हवाला 2: तक़वीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,27)

(2) " अल्लाह की शान बहुत बड़ी है सब अंबिया व औलिया उसके सामने ज़र्र ए नाचीज़ से भी कमतर हैं"(मआज़अल्लाह)

(हवाला 1: तक़वीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुम्बई, स0,92)

(हवाला 2: तक़वीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,92)

(3) "औलिया, अंबिया, व इमाम ज़ादा, पीर, व शहीद यानी जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं वह सब इन्सान ही हैं और आजिज़ बन्दे हैं और हमारे बड़े भाई हैं, मगर अल्लाह ने उनको बड़ाई दी वह हमारे बड़े भाई हैं हमं उनके छोटे भाई हैं हमको उनकी फ़रमाँ बरदारी का हुक्म है उन की ताज़ीम इन्सानों की सी करनी चाहिये न की अल्लाह की तरह"(मआज़अल्लाह)

(हवाला 1: तक़वीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुम्बई, स0,99)

(हवाला 2: तक़वीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,99)

(4) "जैसा हर क़ौम का चौधरी और गावं का ज़मीन्दार, सो इन मानों कर हर पैग़म्बर अपनी उम्मत का सरदार है और हर इमाम अपने वक़्त के लोगों का और हर मुजतहिद अपने ताबेओं का"

(हवाला 1: तक़वीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,105)

(5) मोलवी अशरफ़ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही और क़ासिम नानोतवी के दादा हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की के पीर व मुर्शिद मियाँ जी नूर मोहम्मद के मुतअल्लिक़ थानवी ने कहा:

"मियाँ जी नूर मोहम्मद सरापा नूर ही नूर थे"

(हवाला 1: हसनुल अज़ीज़,जि0,2 हिस्सा,1मल्फ़ूज़,84 स0,217)

(6) बक़ौल थानवी, गंगोही (रशीद अहमद)"हर पहलू में कामिल थे मैंने किसी शख़्स को ऐसे आदात व सिफ़ात का नहीं देखा"

(हवाला 1:,जिल्द,1 हिस्सा,1 मल्फ़ूज़,97 स0,101)

(7) बक़ौल थानवी,"डेढ़ दोसो वर्ष से हाजी इमदादुल्लाह जैसा मुहक़क्कि़ पैदा नहीं हुवा वह फ़न्ने तसव्वुफ़ के मुजतहिद थे"
(हवाला 1:हसनुल अज़ीज,जिल्द,1 हिस्सा,1मल्फ़ूज़,2 स0,36)

(8) मोहतमिम दारुल उलूम देवबंद मोलवी रफी उद्दीन के क़ौल के मुताबिक़ मोलवी क़ासिम नानोतवी की ख़िदमत में, 25 वर्ष तक मैं बे वजू नहीं गया (अल अयाज़ु बिल्लाह)
(हवाला 1:,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,242 स0,259)
(हवाला 2:,अरवाहे सलासा हिकायत न0,242 स0,240)
(हवाला 3:,सवानेह क़ासमी जिल्द न0,1 स0,130)

(9) बक़ौल थानवी"हाजी इमदादुल्लाह हुज्जतुल्लाहे फ़िल अर्ज़ और ज़िल्लुललाहे फ़िल अर्ज़ थे"
(हवाला 1:ख़ातिमतुस्सवानेह स0,128)

(10) मोलवी इसमाईल देहलवी के पीर व मुर्शिद सय्यद अहमद राय बरेलवी के लिए मछलियाँ, चूँटियाँ दुआ करती थीं और उसको जानवर और दरख़्त पहचान्ते थे।(मअज़अल्लाह)
(हवाला 1:,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,117 स0,151)
(हवाला 2:,अरवाहे सलासा हिकायत न0,117 स0,131)

(11) ख़लील अहमद अंबेठवी ने गंगोही को मलजा मावा रहमतुल लिलआलमीन, ग़ौस व ग़यास वग़ैरह अल्क़ाबात लिखे हैं।
(हवाला 1:तज़किरतुल रशीद जिल्द न0,1 स0,149)

(12) गंगोही अपने ज़माने के औलिया अल्लाह का सरदार था व नीज़ नाइबीने रसूल के गिरोह कि सियादत उसके हवाले थी वह पेशवायाने ख़ल्क़ का इमाम व पेशवा था।
(हवाला 1:तज़केरतुल रशीद जिल्द न0,2 स0,16)

(13) बक़ौल थानवी,"हाजी इमदादुल्लाह की बदौलत ही हक़ वाज़ेह हुवा :
(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़,जि0,1,हिस्सा,2,क़िस्त,17,मल्फ़ूज़,239 स0,237)

(14) बक़ौल थानवी, " हाजी इमदादुल्लाह मुजस्सम रहमत थे।
(हवाला 1: हसनुल अज़ीज़,जि0,1,हिस्सा,1,मल्फ़ूज़,70 स0,72)

(15) क़ाज़ी सना उल्लाह बेहक़ी थे बक़ौल थानवी बहवाला शाह अब्दुल अजीज।
(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़,जि0,1,हिस्सा,1,क़िस्त,17,मल्फ़ूज़,237 स0,336)

(16) थानवी ने अपने ख़लीफ़ा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन से कहा कि आपका लिखा हुवा किरामन कातेबीन से भी ज़्यादा जामे होगा।

(हवाला 1: हसनुलअजीज़,जि0,1,हिस्सा,2,किस्त,17,मल्फूज़,237 स0,304)

(17) बक़ौल रशीद अहमद गंगोही हाजी इमदादुल्लाह की मौजूदगी में हम हज़रते जुनेद की तरफ़ इलतिफ़ात भी ना करें।

(हवाला 1: हसनुल अजीज,जि0,1,हिस्सा,3,किस्त,18,मल0,339 स0,304)

झूट ही झूट

क़ारिईने किराम! आपने मुंदरजा बाला इक़्तिबासात बग़ौर पढ़ लिया होगा, एक तरफ़ निफ़ाक़ व गुमराही की गंगा बह रही है और रसूल दुशमनी का हक़ अदा किया जा रहा है और दूसरी जानिब अक़ीदत व मुहब्बत के गुल्दस्ते में अकाबेरीने देवबंद के लिये गुल बूटे सजाये जा रहे हैं आप खुद ही फ़ैसला करें कि ऐसे घिनाओं ने अक़ाइद के हामिल अफ़राद किया मुसलमान कहलाने के हक़दार हैं? ऐसा अक़ीदह रखने वाले काफ़िर व मुरतद के सिवा और किया हो सकते हैं उलमा ए देवबंद नबी को अपने जैसा बशर समझते और अपना बड़ा भाई कहते हैं गाँव के चौधरियों जैसा मक़ाम दे रहे हैं जब कि मख़लूक़ात में नबी को बशर कहने वाला सब से पहले शैतान है उसने सब से पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बशर कह के सजदा करने से इनकार किया और कुफ़्र व निख़वत की बुन्याद पर रब के हुक्म का मुन्किर हुवा लिहाजा बात समझ में आई कि अब क़ोई भी नबी को बशर कहे या बराबरी का दावा करे तो समझलो कि वह शैतान की पैरवी करता है शैतान ने हज़रते आदम के ज़ाहिर को देखा था नूर और रूह तक उसकी बसारत ना पहुँच सकी तो जिसकी निगाह नबी की बशरियत पर ही हो उसका अन्जाम बिला शक व शुबा शैतान जैसा हो गा।

अबू जहल ने नबी को देखा अबू लहब ने देखा उतबा और शैबा ने भी देखा मगर शैतानी आँखों से देखा तो बशर कह दिया और उसके बर अक्स अबू बक्र व उमर ने देखा ईमानी निगाहों से देखा तो खैरुल बशर कहा कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन ने मुनाफ़िक़त की निगाहों से देखा तो अपनी तरह कहकर बराबरी का दावा क्या और सहाबा ने फ़ज़्ले इलाही और नूरे ईमानी से देखा तो पुकार उठे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आपका जमाले रिसालत

आईन ए हक़ नुमा है आप जैसा हुस्न व जमाल वाला मेरी आँखों ने देखा ही नहीं आप हर ऐब से पाक व साफ़ पैदा किये गए हैं जैसा आपने चाहा वैसे ही आपकी तख़लीक़ हुई। सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ फाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह ने क्या ही खूब फ़रमाया:

तेरे खुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा तेरी खल्क़ को हक़ ने जमील किया
कोइ तुझसा हुवा है ना होगा शहा तेरे खालिके हुस्न व अदा की क़सम

किस क़दर अफ़सोस का मक़ाम है कि देवबंदी अपने बुजुर्गों के तअल्लुक से इस क़दर गुलू से काम लेरहे हैं किसी को मुजस्सम नूर और सरापा रहमत बता रहे हैं तो किसी को फ़रिश्त ए मुक़र्रब से तशबीह दे रहे हैं और गंगोही जी के ज़िम्म ए करम पर ना ए बीने रसूल की सियादत का इतलाक़ कर रहे हैं थानवी जी अपने ख़लीफ़ह के मुतअल्लिक़ अर्ज़ पैरा हैं कि उनका लिखा हुवा किरामन कातेबीन से भी ज़्यादा जामे है। सय्यद अहमद राये बरेलवी जो मुजस्सम शैतान था बक़ौल इसमाईल देहलवी के उस के लिये मछलियाँ और चूटियाँ दुआ करती थीं और सितम बाला ए सितम ये कि उसको जानवर और दरख़्त पहचान कर सलाम भी करते थे और वह ज़ाते गिरामी जिन्हें दरख़्तों ने सजदा किया जानवरों और पत्थरों ने सलाम का नज़राना पेश किया जिन की उँगली के इशारे से डूबा हुवा सूरज पलट आया,चाँद टुकड़ों में तक़सीम हो गया, उन्हें देहली का चमार, चमार से ज़्यादा ज़लील बता रहा है जबकि मालिके अरब व अजम की ज़ाते मुक़द्दसा को क़ुरआने हकीम में नूर व बशर दोनों फ़रमाया गया है उम्मते मुस्लिमा का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला और अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहे वसल्लम नूर व बशर यानी नूरी बशर थे हक़ाइक़ व मौजूदात पर निगाह डालने से दो क़िस्म के नूर का सुराग़ लगता है एक तो वह नूर जिसको हम अपनी आँखों से देख ते और मुलाहिज़ा करते हैं कि खुद ताबिंदा व दरख़शिन्दा है और दूसरों को ताबिंदगी व दरख़शिन्दगी अता करता है जैसे आफ़ताब खुद रोशन है और माह व अंजुम को रोशनी व ताबानी अता करता

है इस क़िस्म के नूर को नूरे हिस्सी से ताबीर किया जाता है और एक वह नूर है जिसका इदराक व शऊर हमारे हवासे जाहिरी से बाहर है लेकिन अक़्ल के ज़रिये हम इदराक करते हैं कि ये नूर है और अक़्ल उसकी नूरानियत की क़ायल है क़ुरआने हकीम को नूर कहा गया है लेकिन उस नूर की चमक दमक का एहसास हम को नहीं होता बल्कि अक़्ल के ज़रिये उस की नूरानियत के कायल होते हैं और ये वही नूर है जिससे आख़िरत का रास्ता मिलता है और खुदा तक पहुँचने की राह उसके ज़रिये से अयाँ होती है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ऐसे नूर हैं कि जब मुसकुराते तो अंधेरी रात में ऐसी रोशनी पैदा होती कि गुमशुदा सूई तलाश कर ली जाती।

सोज़ने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
रात को सुबहा बनाता है उजाला तेरा

अंबिया की ज़ात मासूम है क्योंकि गुनाह कराने वाला या तो शैतान है या नफ़्से अम्मारा और अंबिया ए किराम के नुफ़ूसे अम्मारा होते ही नहीं, लिहाज़ा अंबिया ए किराम मासूम अनिल ख़ता हैं और औलिया ए कामेलीन की ज़ात महफ़ूज़, मगर दीद ए कोर फ़ितरी नजासत जिसके अन्दर सरायत करचुकी है वही लोग नबी को गुनाह गार, ख़ता कार, अपनी तरह कह रहे हैं लिख रहे हैं और समझ रहे हैं ऐसे गुस्ताख़ों के तअल्लुक़ से अल्लाहतआला ने इरशाद फ़रमाया: وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ और जो अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाखिल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उसके लिये ख़्वारी का अज़ाब है। (कन्जुल ईमान प0,4 अन्निसा,आयत,14)

आफ़ताबे रिसालत माहताबे नबुव्वत की शान में गुस्ताख़ियाँ करना मआज़अल्लाह चमार से भी ज़्यादा ज़लील बताना और पीर व मुर्शिद को मुत्तबिईन को नूर ही नूर साबित करना हदसे तजावुज़ करना है कि नहीं? जिसे रब ने नूर फ़रमाया उसकी इहानत और जिसकी कोई हक़ीक़त नहीं जिन्होंने सारी ज़िन्दगी निफ़ाक़ व

गुमरही बुग्ज़ व कीना का दर्स दिया उसे मकामे आला पर फाइज करने की हत्तल मक्दूर कोशिश है याद रखो सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मजहरे ज़ात, मजहरे अहकाम व अखबार में अल्लाह का नूर इस तरह हैं कि ज़ाते बारी तआला से सब से पहले फैज पाने वाले हैं और आप के ज़रिये से दूसरे लोग फ़ैज़ लेते हैं अब अगर शम ए नूरे मोहम्मदी को कोई बुझाना चाहे तो हर गिज़ नहीं बुझा सकता क्योंकि ये अल्लाह के नूर हैं जैसे चाँद, सूरज की कोई पैमाइश नहीं कर सकता जैसे समन्दर का पानी और हवा जिसका इहाता नहीं ऐसे ही आपके नूर का एहाता करना ग़ैर मुम्किन है आप सरापा नूर हैं कुरआन उसकी दलील है। सरकार आला हज़रत रहमतुल्लह अलैह फ़रमाते हैं:

तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा
मिट गये मिटते हैं मिट जाएंगे आदा तेरे
ना मिटा है ना मिटेगा कभी चर्चा तेरा।

दिल के वसवसों पर मुत्तला होना

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने लिखा है कि

"और इसी तरह कुछ इस बात में भी उन को बड़ाई नहीं कि अल्लाह ने गैब दानी उन के इख़तियार में देदी हो कि जिसके दिल का हाल जब चाहें मालूम करलें"।

(हवाला 1: तक्वीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुंबई, स0,46)
(हवाला 2: तक्वीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,44)

(2) "दूसरी जगह आँ जनाब लिखते हैं तो और दूसरी चीजें जो आदमी में छुपी हैं जैसे ख़्यालात और इरादा नीयत ईमान और निफ़ाक़ को कैसे जान सकते हैं ?और इसी तरह जब कोई अपना हाल नहीं जानता कि कल किया करूँगा तो और किसी का हाल कैसे जान सकता है(ये इबारतें अंबिया व औलिया के तअल्लुक़ से हैं) (हवाला 1: तक्वीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुंबई, स0,43)
(हवाला 2: तक्वीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,40)

(3) मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने कहा कि केराना में एक क़स्साब नेक आदमी मस्जिद में रहते थे वह खुद मुझसे ब्यान करते

थे कि मुझे हाजी इमदादुल्लाह की खिदमत में बैठे बैठे दिल में ख़तरा हुवा कि मालूम नहीं हज़रत हाजी साहिब और हज़रत हाफिज़ में से किस का मरतबा बड़ा है हज़रत हाजी साहिब इस ख़तरे पर मुत्तला हुए और फ़रमाया कि अहले अल्लाह कि निस्बत ये ख़्याल करना कि कौन बड़ा है कौन छोटा बे अदबी है।

(हवाला 1:हसनुल अज़ीज,जि0,1हिस्सा3,किस्त,18 मल्फूज,381 स0,13)
(हवाला 2:हकीमुल उम्मत के हैरत अंगेज वाकेआत (देवबंद)बाब,8(अशरफुल मलफूज) स0,514)
(हवाला 3:अल इफाजातिल योमिया (देवबंद) जि0,4किस्त,19 मल्फूज,761 स0,420)
(हवाला 4:अल इफाजातिल योमिया (देवबंद) जि0,1किस्त,2,मल्फूज,409 स0,209)

(4) मोलवी अशरफ अली थानवी कहते हैं कि शाह अब्दुल रहीम साहिब के पहले पीर का नाम भी शाह अब्दुल रहीम साहिब ही था फरमाते थे कि एक मरतबा मैं अपने पीर का सर दबा रहा था पीर साहिब ने कहा कि खूब अच्छी तरह ज़ोर से दबाओ मेरे दिल में ख्याल आया कि जो बहुत ज़ोर से दबाउँगा तो सर ख़रबूज़े की तरह पिचक जाएगा(कियोंकि शाह साहिब खूब क़वी थे) पीर साहिब ने फरमाया कि नहीं भाई तुम खूब ज़ोर से दबाओ ख़रबूज़े की तरह नहीं पिचके गा फिर फ़रमाया कि वह साहिबे कश्फ़ थे।

(हवाला 1:हसनुल अज़ीज़,जि0,2हिस्सा2,क़िस्त,15मल्फ़ूज़,294 स0,100)

(5) बक़ौल थानवी: मौलाना शाह अब्दुल रहीम बड़े नूरानी क़ल्ब शख़्स हैं मैं उनके पास बैठने से बहुत डरता हूँ कि मेरे उयूब मुनकशिफ न हो जायें।

(नोट) शाह अब्दुल रहीम से मुराद शाह अब्दुल रहीम राय पुरी हैं।

(हवाला 1:हसनुल अज़ीज़,जि0,4हिस्सा 2 क़िस्त,10 स0,214)
(हवाला 2:हिकायातुल औलिया हिकायत,240 स0,234)
(हवाला 3: अरवाहे सलासा हिकायत,438स0,401)

(6) मौलाना क़ासिम नानोतवी, मोलवी मोहम्मद याकूब क़ल्ब के अन्दर जो निहायत बारीक चोर होते हैं उनसे भी खूब वाक़िफ थे

(हवाला 1:हिकायातुल औलिया हिकायत,107 स0,140)
(हवाला 2:अद्देवबंदिया (अरबी)स0,153)
(हवाला 3: अरवाहे सलासा हिकायत,107 स0,121)

(7) अंबिया व औलिया के मुतअल्लिक़ मोलवी इसमाईल देहलवी के क़लम की आवारगी मुलाहिज़ा हो ।"और जो वहम व ख़्याल मेरे दिल मे गुज़रता है वह सबसे वाक़िफ है तो इन सब बातों से आदमी मुशरिक हो जाता है "।

(हवाला 1:तकवियतुल ईमान,दारुस्सलफिया मुंबई, स0,23)
(हवाला 2:तकवियतुल ईमान,कुतुब खाना मराऊदिया देहली, स0,18)

(8) मोलवी रशीद अहमद गंगोही ने अपने शागिर्द मोल्वी वली मोहम्मद के दिल की खुवाहिश जानली पूरा वाकेआ हस्बे ज़ेल हैं।

"मुन्शी कादिर बख्श साहिब बुलंद शहरी तहरीर फ़रमाते हैं कि मौलाना ख़लीलुल रहमान जिनको साबिक़ अमीरे काबुल याकूब जान कहा जाता है उन की बुजुर्गी के सबब हमेशा अपने साथ रखा करते हैं ,फरमाते हैं कि मै जिस ज़माने में हज़रत की खिदमत में हदीस पढ़ता था एक तालिबे इल्म वली मोहम्मद बे चारे बहुत मिसकीन और पारसा शख़्स थे जो थोड़ा सा ख़र्च उनके घर से आया करता बस उसीमें गुज़र किया करते थे कैसी ही जरूरत हो कभी दोस्त या हम जमाअत तक से ज़िक्र ना करते थे एक बार मकान से ख़र्च आने में देर हुई और उनको एक या दो फाक़े की नौबत पहुँची मगर ना उन्होंने किसी से ज़िक्र किया ना किसी सूरत यह हाल किसी पर ज़ाहिर हुवा ऐसी हालत में सुबह के वक़्त बग़ल में किताब दबाये पढ़ने के वास्ते हज़रत की खिदमत में आ रहे थे कि रास्ते में हलवाई की दूकान पर गर्म गर्म हलवा पक रहा था ये कुछ देर वहाँ खड़े रहे कि कुछ पास हो तो खायें मगर पैसा भी न था, इसलिये सब्र करके चल दिये और ख़ानिक़ाह में पहुँचे हज़रत (गंगोही) गोया उनके मुन्तज़िर ही बैठे थे सलाम का जवाब दे तेही फरमाया मोलवी वली मोहम्मद आज तो हलवा खाने को हमारा जी चाहेता है लो ये चार आना लेजाओ और जिस दूकान से तुमको पसंद हो वहीं से लाइयो,ग़रज़ कि मोलवी वली मोहम्मद उसी दूकान से हलवा ख़रीद कर लाए और हज़रत के सामने रख दिया हज़रत ने इरशाद फ़रमाया मियाँ वली मोहम्मद मेरी ख़्वाहिश ये है कि इस हल्वे को तुम ही खालो ,मोलवी वली मोहम्मद इस किस्से के बाद फ़रमाया करते थे कि हज़रत के सामने जाते मुझे डर मालूम होता है क्योंकि क़ल्ब के वसाविस़ इख़तियार में नहीं और हज़रत उन पर मुत्तला होजाते हैं(हवाला 1:तज़केरतुल रशीद जि0,2,स0,226)
(हवाला 2:अद्देवबंदिया तारीफुहा व अक़ाइदुहा (अरबी), स0,151)

मरने का हाल, वक़्त और जगा बताना

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने तक़वीयतुल ईमान फ़स्ल दोम इशराक फ़िल इल्म के रद में लिखा है कि "और इसी तरह जब कोई अपना हाल नहीं जानता कि कल किया करूँगा तो और किसी को कैसे जान सकता है और जब अपने मरने की जगा नहीं जानता तो किसी और के मरने की जगा कैसे जान सकता है।

(हवाला 1:तकवियतुल ईमान,दारुस्सलफ़िया मुंबई, स0,43)
(हवाला 2:तकवियतुल ईमान,कुतुब खाना मसऊदिया देहली, स0,40)

(2) मोलवी सादेकुल यक़ीन की मौत का वक़्त गंगोही ने बताया ये वाक़ेआ हर्फ़ बा हर्फ़ हसबे ज़ेल है।

"हज़रत मौलाना सादेकुलयक़ीन साहिब एक बार सख़्त अलील हुए वाक़ेफ़ीन अहबाब भी ये ख़बर सुन कर परेशान हो गए और हज़रत (यानी गंगोही) से अर्ज़ किया कि दुआ फ़रमादें हज़रत ख़ामोश हो रहे और बात को टाल दिया जब दोबारा अर्ज़ किया गया तो आपने तसल्ली दी और यूँ फ़रमाया मियाँ वह अभी नहीं मरेंगें और अगर मरेंगें तो मेरे बाद चुनाँचे ऐसा ही हुवा कि उस मर्ज़ से सिहत हासिल हो गई और हज़रत के विसाल के बाद उसी साल माहे शव्वाल हज्जे बैतुल्लाह के लिये अरब रवाना हुए, मक्का मोअज़्ज़मा में बीमार हुए मर्ज़ ही में अरफ़ात का सफ़र किया यहाँ तक कि शुरू मुहर्रम में वासिले बहक़ होकर जन्नतुलमुअल्ला में मदफ़ून हुए हज़रत इमाम रब्बानी (यानी गंगोही)और मौलाना सादेकुलयक़ीन साहिब के विसाल में कुछ दिन कम व बेश सात माह का तफ़ावुत रहा"

(हवाला 1:तज़किरतुल रशीद जिल्द,न0,2 स0,209)

(3) बक़ौल थानवी मोलवी क़ासिम नानोतवी जब ब मर्ज़े मौत बीमार हुए तो मोलवी याक़ूब नानोतवी ने बज़रिये मुराक़ेबा मालूम किया कि मोलवी क़ासिम नानोतवी की उम्र कितनी है "चुनाँचे" 49,साल की उम्र हुई और मौत हो गई।

(हवाला 1:हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,क़िस्त,15 मल्फ़ूज़325,स0,121)

(4) मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने कहा कि हज़रत मुज़फ़्फ़र हुसैन काँधल्वी हज को तशरीफ़ ले गए और मदीना जाना चाहते थे. कि

सख़्त बीमार हो गए,डरे कि अब मदीना न जासकूँगा शायद यहाँ ही मर जाउँगा और तमन्ना थी मदीने में मरने की उन्होंने हाजी साहिब (इमदादुल्लाह) से पूछा हज़रत ने फ़रमाया कि आप मदीना पहूँचेंगे और यहाँ नहीं मरेंगे इतमीनान रखये चुनाँचे ऐसा ही हुवा ।

(हवाला 1:हकीमुलउम्मत के हैरत अंगेज़ वाकेआत (देवबंद)स0,555)
(हवाला 2:हिकायातुल औलिया हिकायत,201 स0,221)
(हवाला 3:अरवाहे सलासा हिकायत,201 स0,201)
(हवाला 4: अलइफ़ाज़ातुल योमिया जि0,3किस्त,17मल्फ़ूज़,374 स0,185)
(हवाला 5:तज़केरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0, स0,102)

(5) मोलवी नज़र मोहम्मद ख़ाँ ने एक मरतबा परेशान होकर गंगोही से कहा कि हज़रत फ़लाँ शख़्स जो वालिद साहिब से अदावत रखता था उनके इन्तिक़ाल के बाद मुझसे नाहक़ अदावत रखता है बे साख़्ता गंगोही ने कहा वह कब तक रहेगा चंद रोज़ गुज़रे कि दफ़अतन वह शख़्स इन्तिक़ाल कर गया।

(हवाला 1:तज़केरतुल रशीद जि0,2 स0,214)

मोहतरम हज़रात मुंदरजा बाला इबारतों को खूबखूब पढ़िये और तसफिया कीजिये

वह लोग जो नबी ए ग़ैब दाँ सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मुन्किर हैं और इल्मे मुस्तफ़ा अलैहित्तहिय्यतो वस्सना को मजनून और पागल के मिस्ल बता कर शैतान के इल्म को ज़ियादा साबित कर रहे हैं वही लोग अपने अकाबिरीन और मोआसेरीन को इल्मे ग़ैब और कश्फ व मुराक़ेबा में यकता ए रोज़गार बता रहे हैं गंगोही जी जो सारी ज़िन्दगी तन्क़ीसे अंबिया और गुस्ताख़ि ए रसूल करना अपना महबूब मशग़ला तसव्वुर करते थे वही गंगोही जी मौत और ज़िन्दगी का पता बता रहे हैं, यही गंगोही अपने शागिर्द के हालात जान कर ख्वाहिश की तकमील हल्वा के ज़रिये कर रहे हैं हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुज़फ्फ़र हुसैन काँधलवी की तमन्ना पूरी कर रहे हैं और मोल्वी इसमाईल देहलवी ये साबित कर रहे हैं कि कोई शख़्स अपने या पराये के मरने और दफ़्न होने की जगह कैसे मालुम कर सक्ता है थान्वी साहिब ने मौलाना अब्दुल रहीम को बड़े नूरानी क़ल्ब वाला शख़्स करार दे कर साहिबे कश्फ़ बताया ऐ देवबंद के मोल्वियो!तुमहें

किया हो गाया है तुम ने लिखने से पहले अपने दिमाग़ का इलाज क्यों न किया गंदे और ग़लीज़ लोगों के मरातिब और दरजात इस क़दर बढ़ा दिये और वोह ज़ाते गिरामी जो कायेनात में सबसे मोअज़्ज़म और मोहतरम है जिसके ज़िक्र को रबने अपना ज़िक्र फ़रमाया जिसकी इताअत को अल्लाह तआला ने अपनी इताअत फ़रमाई जो शाफ़ ए यौमुन्नुशूर हैं मालिके कुल कायेनात हैं ,ताजदारे दो आलम हैं जब जब मोअज़्ज़िन सदाए तौहीद बलंद करेगा अल्लाह की किबरियाई के साथ रसूल की रिसालत का ज़िक्र होगा उनकी शाने अक़दस में गुस्ताख़ी और बे अदबी कर के रसूल दुशमनी मोल लेने वालो! कुछ तो सोचा होता तारीख़ की किताबों का मुताला किया होता क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जंगे बद्र में आक़ा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम रात ही में चन्द जाँनिसारों के हमराह मैदाने जंग का मुआयेना करने के बाद अपनी मुबारक छड़ी से ज़मीन पर लकीर बनाते हुए इरशाद फ़रमाते हैं कि यहाँ फ़लाँ काफिर का क़त्ल होगा यहाँ फ़लाँ काफिर का क़त्ल होगा यहाँ अबू जहल की लाश तड़पे गी,यहाँ उतबा हलाक होगा, यहाँ शैबा को अपने खून में नहाना होगा चुनानचे ऐसा ही हुवा आपने जिन जिन जगहों पर जिस जिस काफ़िर की क़त्ल गाह बताई उस काफिर की लाश उसी जगह पाई गई!

उनमें से किसी काफिर ने बाल बराबर भी तजावुज़ न किया रसूले खुदा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने मरने वाले काफिर और उसकी क़त्ल गाह से मैदाने जंग में जो ख़बर दी किया वहाबी के पेशवाओं को उस से इन्कार है ?अगर इन्कार नहीं है तो फ़िर इल्मे मुसतफ़ा पर तनक़ीस व तौहीन किस लिये किया जाराहा है। सरकारे आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं

करे मुस्तफ़ा की एहानतें खुले बंदो उस पे ये जुरअतें
कि मैं किया नहीं हूँ मोहम्मदी अरे हाँ न्हीं अरे हाँ नहीं

हयात बादे मौत

(1) मोलवी अहमद हसन साहिब अमरोही और फ़ख़रुल हसन

गंगोही में आपस में इख्तेलाफ़ था दारुल उलूम देवबंद के सदरुल मुदर्रेसीन मोलवी महमूद हसन देवबंदी गैर जानिब दार रहने के बजाए एक जानिब झुक गए उसी दौरान दारुलउलूम देवबंद के मोहतमिम रफ़ीउद्दीन ने एक दिन अलस्सुबह बाद नमाजे फज्र मोलवी महमूदुल हसन को अपने हुजरे में जो दारुल उलूम देवबंद में था वहाँ बुलाया मोलवी महमूद हसन गए तो मोलवी रफ़ी उद्दीन ने कहा कि वाकेआ ये है कि अभी अभी मौलाना नानोतवी (रूह) जस्दे उंसुरी के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए थे जिससे मैं एक दम पसीना पसीना हो गया और मेरा ये लिबादा तर हो गया उस वक्त मोसम सख़्त सरदी का था मौलाना नानोतवी ने मुझसे फरमाया कि महमूद हसन को कहदो कि इस झगड़े में न पड़े पस मैंने ये कहने के लिये बुलाया है मोलवी महमूद हसन ने कहा कि हज़रत मैं आपके हाथ पर तोबा करता हूँ कि इसके बाद इस क़िस्से में कुछ ना बोलूँगा।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत 247 स0,261)
(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत 247 स0,242)

(2) मोलवी अशरफ़ अली थानवी अपने दादा सुलतान शहाबुद्दीन का एक वाक़ेआ इन्तेक़ाल के बाद ज़िन्दा होकर अपने घर आने का इस तरह बयान करते हैं।

"शहादत के बाद एक अजीब वाक़ेआ हुवा शब के वक़्त अपने घर मिस्ल ज़िन्दा के तशरीफ़ लाए और अपने घर वाली को मिठाई लाकर दी और फ़रमाया कि अगर तुम किसी से ज़ाहिर ना करोगी तो इसी तरह रोज़ आया करेंगे लेकिन उनके घर वाली को ये अन्देशा हुआ कि घर वाले जब बच्चों को मिठाई खाते देखेंगे तो मालूम नहीं किया शुबा करें इस लिये ज़ाहिर कर दिया और फिर आप तशरीफ़ नहीं लाए यह ख़ानदान में मशहूर है।"

(हवाला: अशरफुस्सवानेह जिल्द 1 स0,12)

(3) बादे मौत मिस्ल ज़िन्दा होने का वाक़ेआ मोलवी अशरफ़ अली थानवी की ज़बानी।

"मौलाना इसमाईल साहिब शहीद के क़ाफ़िले में एक शख़्स शहीद होगए जिनका नाम बेदार बख़्त था वह देवबंद के रहने वाले थे उनकी शहादत की ख़बर आचुकी थी उनके वालिद हसबे मामूल

एक रात तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठे तो घर के बाहर घोड़े की टापों की आवाज़ आइ और फिर एक शख़्स ने दरवाज़ा खोला देखा तो उनके लड़के बेदार बख़्त हैं यह देखकर हैरान होगए कि उनके मुतअल्लिक तो मालूम हो चुका था कि शहीद हो चुके हैं यह कैसे आगए बेदार बख़्त ने कहा कि जल्दी कोई फ़र्श वग़ैरह बिछाइये मोलवी इसमाईल साहिब और सय्यद साहिब यहाँ: तशरीफ़ ला रहे हैं उनके वालिद ने फ़ौरन एक बड़ी चटाई बिछादी एक मजमा उस फ़र्श पर आ बैठा बेदार बख़्त से उनके वालिद ने कहा तुमहारे कहाँ तलवार लगी थी ? उन्होंने अपना ढाटा खोला और निस्फ़ चेहरा अपने दोनों हाथों में लेकर अपने बाप को दिखाया कि यहाँ तलवार लगी थी उनके बाप ने कहा कि बाँध लो मुझसे देखा नहीं जाता थोड़ी देर बाद यह हज़रात वापस तशरीफ़ लेगए सुबह को बेदार बख़्त के वालिद को शुबा हुवा कि कहीं ख़्वाब तो नहीं था मगर चटाई पर देखा तो ख़ून के क़तरे मौजूद थे यह वह क़तरे थे जो बेदार बख़्त के चेहरे से गिरे हुए उनके वालिद ने देखे थे उन क़तरों को देखने से वह यह समझे कि यह बेदारी का वाक़ेआ है।''

(हवाला:1,अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि 4 कि0, 24 मल0,312स0,371)

(4) एक और वाक़ेआ थानवी जी की ज़बानी सुनये।

''एक साहिबे कशफ़ हज़रत हाफ़िज़ साहिब (ज़ामिन थानवी) के मज़ार पर फ़ातिहा पढ़ने लगे बादे फ़ातिहा कहने लगे कि भाई ये कौन बुजुर्ग हैं बड़े दिल लगी बाज़ हैं जब मैं फ़ातिहा पढ़ने लगा मुझसे फ़रमाने लगे फ़ातिहा किसी मुर्दे पर पढ़यो यहाँ जिंदों पर फ़ातिहा पढ़ने आए हो ये किया बात है कि जब लोगों ने बतलाया ये शहीद हैं (लानतुल्लाहे अललकाज़िबीन)

(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,205स0,223)
(हवाला:2,अरवाहे सलासा हिकायत न0,205स0,202)

(5) एक और दिल लगी मुलाहिज़ा हो:

''मोलवी इलयास काँधलवी(बानी तबलीगी जमाअत)के वालिद मोलवी इसमाईल साहिब का इन्तेक़ाल हुवा और जनाज़ह की नमाज़ पढ़ने में देर हुई तो मोलवी इसमाईल अपने को जल्दी रुख़्सत करने के लिये कह रहे हैं जनाज़ह में इतना हुजूम और ऐसी कसरत थी

कि लोगों ने बार बार नमाज़ पढ़ी जिसकी वजह से दफ़न में कुछ ताख़ीर हुई इस अरसे में एक साहिबे इदराक बुज़ुर्ग ने देखा कि मोलवी इसमाईल साहिब फ़रमाते हैं कि मुझे जल्दी रुख़सत करदो मैं बहुत शरमिन्दा हूँ कि हुज़ूर सल्ललाहे अलैहे वसल्लम सिहाबा के साथ मेरे इन्तेज़ार में हैं।

(हवाला:1,मौलाना इलयास और उनकी दीनी दावत(देहली)स0,47)

(हवाला:2,अल्कौलुलबलीग फ़ित्तहरीर मिन जमाअतित्तबलीग(अरबी)स0,139)

देवबंदी मुल्लाओं की बाज़ी गरी

वाह वाह बाज़ी गरी ऐसी कि अक्ल भी हैरान किसी की रूह अपने उंसुर के साथ वापस आ रही है और कोई अपनी ऐहलिया के लिये मिठाई का डिब्बा ला रहा है और बेदार बख़्त ने तो कमाल ही कर दिया बेचारे चटाई बिछवा रहे हैं और कटे हुए दस्त व बाज़ू का मुशाहिदा भी करवा रहे हैं सादा लौह मुसलमानों को फ़रेब देना आसान है मगर अक्ल व ख़िरद को धोका देना बईद अज़ क़यास है आईये हम मोलवी इसमाईल देहलवी से सवाल करते हैं कि बादे मौत मिस्ल ज़िन्दा होना आपके नज़दीक कैसा है? आँ जानाब अपनी खुबासत का इज़हार इस तरह कर रहे हैं हुज़ूर सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया यानी कि मैं भी एक दिन मरकर मिट्टी में मिलने वाला हूँ।

(तक़वियतुल ईमान,दारुस्सलफ़िया मुंम्बई स0100)

मोलवी इसमाईल देहलवी के अक़ीदे के ऐतिबार से हुज़ूर मरकर मिट्टी में मिलगए (मआज़अल्लाह) तो अकाबिरीने देवबंद क्यों कर बादे मुर्दन ज़िन्दा हैं ये फ़रेब और धोका नहीं तो और किया है? जिनकी ज़िन्दगी की बशारत क़ुरआन दे रहा हो उनको मरकर मिट्टी में मिलजाने को बताया जा रहा है और जिनकी ज़िन्दगी ज़हनी अय्यारी और फिकरी अय्याशियों में गुज़री हो जिनके मुरतद और काफ़िर होने का फ़तवा अरब व अजम के उलमा व फ़ुक़हा ने दिया हो उनके मरने के बाद हयात का नग़मा पढ़ा जा रहा है बात समझ से बाला तर है कि अपने नबिये मुहतरम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात व सिफ़ात को तनक़ीद व तनक़ीस का निशाना बनाने वाले

अपने फिक्र व एतेकाद के बुजुर्गों की शानमें कसींदे पढ़ पढ़ कर उनके घटिया और नाकिस वजूद को रिफअत व बलंदी के आला मीनारे पर फाइज़ करते हैं।

जब कि मोमिन का ईमान अपने नबी से वालेहाना मोहब्बत और ताज़ीम का दर्स देता है मेरे सरकार आला हजरत रजियल्लाहु अनहो अपने आका सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुस्ताख़ों की तरफ़ निगाहे गलत उठाकर देखना भी तौहीन के जुमरे में तसव्वुर करते थे और सारी दुनया को पैगाम देते रहे कि

शिर्क ठहरे जिसमें ताज़ीमे हबीब
उस बुरे मज़हब पे लानत कीजिये

रसूले गिरामी वक़ार के तअल्लुक़ से गुम गशतऐ राह मुल्लाओं कि हट धरमियाँ और उनकी रेशा देवानियाँ पढ़ कर गैरत को भी पसीना आ जाता है अगर मुल्लाओं के आबा व अजदाद और खानदानी बुजुर्गों के बारे में यही अलफ़ाज़ इसतेमाल कर लिए जायें तो चराग़ पा हो कर बर सरे पैकार हो जायें मगर ये लोग उस रसूल के बारे में लब कुशाई की जुरअत करते हैं जो इन्सानों का, फ़रिश्तों का हूर व गिल्माँ का यहाँ तक कि नबियों का भी रसूल है और अल्लाह की तरफ़ से भेजा गया आखिरी ताजदार है जिस पर रब तआला खुद दुरूद भेजता है जिसकी बैअत अल्लाह की बैअत, जिसके हाथ को अपना हाथ जिस की इताअत को अपनी रज़ा क़रार दे रहा है। इमामे ऐहले सुन्नत सरकार आला हज़रत रजियल्लाहो अन्हो ने किया ही खूब फ़रमाया

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू किया जाने
खुसरवा अर्श पे उड़ता है फ़रेरा तेरा

अल्लाह तआला ने बा ऐतेबार तफ़ावुते दरजात अपने मक़बूल बंदों की जो तरतीब कुरआने करीम में बयान फ़रमाई है उसमें पहले अंबिया फ़िर सिद्दीक़ीन उसके बाद शुहदा व सालेहीन का ज़िक्र किया है शुहदा को ज़िन्दा मान्ने का हुक्म है जो इबारतुन्नस से साबित है और सुल्हा में सबसे पहले आमिले बिल कुरआन हैं इमाम जलालुद्दीन सियूती अलैहिर्रहमा ने शरहुस्सुदूर में हज़रत जाबिर इबने अब्दुल्लाह अंसारी से नक़्ल करते हैं कि उन्होनें हुजूर

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से यह फरमाते सुना कि जब आमिल बिलकुरआन हाफिज मरता है तो अल्लाह तआला जमीन को हुक्म देता है कि ऐ ज़मीन तु इस जिस्म को मत खाना। ज़मीन अर्ज़ करती है खुदाया मैं ऐसे को किस तरह खा सकती हूँ जिसके जौफ़ में तेरा कलाम मौजूद है अब इंसाफ से बताइये किसी शौ पर अमल उस शौ की फ़रा है और वह शौ वह कलामे इलाही है जो ज़बाने नुबुव्वत से सादिर हुवा हो तो नबी जिस की ज़बान सब कुन की कुन्जी है वह किस तरह मरकर मिट्टी में मिल सकता है जबकि अल्लाह ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि वह अंबिया का जिस्म खाए कैसे कहा जाए की वहाबियों के अकाबेरीन ने ये हदीस नही पढ़ी होगी लेकिन जब किसी को अज़मत व रिसालत से हसद हो तो उसका किया इलाज।

आँखें अगर हैं बंद तो फिर दिन भी रात है
इसमें भला कुसूर किया है आफताब का

हयातुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तअल्लुक़ से तफसीरे अज़ीज़ी स0,518देखिये रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नूरे नबुव्वत के साथ अपने दीन में दाख़िल होने वाले हर शख़्स के अहवाल से मुत्तला हैं वह कौनसा अमल है जो आपसे पोशीदा है यहाँ तक कि दरजाते आमाल और अख़लाक़ व निफ़ाक़ को भी जानते हैं ये मुशाहिदा अब भी बेऐनेही क़ायम व दायम है जिस तरह ज़ाहिरी हयाते मुक़द्दसा में था आज भी पेश किये जाते हैं मशहूर ताबई हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ियल्लाहो अनहो फ़रमाते हैं

ليس من يوم الا وتعرض على النبى صلى الله عليه وسلم اعمال امته غدوه و عشيه بسيما هم و اعمالهم فلذالک يشهد عليهم

(अलमवाहिबे लदुन्निया जि02,स0,387)ऐसा कोई दिन नहीं गुज़रता जिसमें सुबह व शाम रसूले अकरम सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमते बाबरकात में उम्मत के अहवाल व आमाल पेश न होते हों हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने उम्मतयों को उनकी सूरतों और आमाल के साथ जानते हैं यही वजह है कि क़यामत के रोज़ उन पर गवाही देंगे ग़ौर व फिक्र का मुक़ाम है कि आमाल का पेश

होना और उसका मुशाहिदा फ़रमाना और फिर उनकी सूरतों को जानना ये तमाम चीजें क्या आपकी हयात पर रोशन दलील नहीं हैं ? और फिर बरोजे हश्र अपनी उम्मत पर गवाही देंगे यकीनन दलाइल की बुनयाद पर हयाते नबी का मसला पाए सुबूत को पहुँच गया दूसरी अहेम बात जो इन दलाइल व बराहिन से सबित होती है वह आपका इल्म व इदराक है कि उम्मती जिस हाल में हो ख़्वाह फ़िस्क़ व फजूर से तअल्लुक़ रखता हो और अल्लाह जल्ला शानहू की ना फ़रमानियाँ करता हो या नेक अमल करने वाला हो सबका एहसास और इल्म आपको है बंदा गुनाह का मुरतकिब है तो आपको तकलीफ़ होती है जिस तरह जिस्म के आज़ा के हर हिस्से की कैफ़ियात को ज़हेन महसूस करता है ठीक उसी तरह पियारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे असल्लम अपने उम्मतियों की तकलीफ़ को महसूस करते हैं अब वह लोग बतायें जो नबी के इल्म को शैतान और पागल के इल्म से तशबीह देते हुये शैतान के वुसअते इल्म को साबित करके अपनी खुबासत का इज़हार करते हैं किया उन महसूसात का इल्म व इदराक नबी के अेलावा किसी को हो सकता है ? जबकि महसूसात का इल्म ग़ैब दानी पर मुन्तबिक़ होता है .जाहिल और कोरे बातिन मुल्लाओं से मेरा सवाल है कि अगर महसूसात के इल्म पर तुम्हारे पास कोई शैतानी दलील हो तो पेश करो वरना गुमराहियत से तोबा करके तौहीने मुस्तफ़ा सल्लल्लोहे अलैहे वसल्लम से बाज़ आजाओ और अपने अकाबिरीन की अनकही बातों से तोबा करके वफ़ादाराने पैग़म्बर की जमाअत में शामिल होकर अपनी गुलामी का सुबूत पेश करदो ताकि कड़े अज़ाब से निजात पाजाओ और आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान में एलान करदो ।

मैं मुजरिम हूँ आक़ा मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले

अल्लाह और रसूल ने चाहा कहना ग़लत है

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने अपनी किताब तकवियतुल ईमान में लिखा है कि "यूँ ना बोलिये कि अल्लाह व रसूल चाहेगा तो फलाँ काम हो जाए गा क्योंकि जहाँ का सारा कारोबार अल्लाह ही के चाहने से होता है रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता "

(हवाला:1,तकवियतुल ईमान,दारुस्सलफिया मुंबई स0,96)

(हवाला:2,तंकवियतुल ईमान,कुतुब खाना मसऊदिया देहली स0,96)

(2) मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने लिखा है कि "यूँ कहना कि खुदा और रसूल सल्ललाहो अलैहे वसल्लम अगर चाहेगा तो फ़लाँ काम हो जाएगा शिर्क है।

(हवाला:1बहिश्ती जेवर,रब्बानी बुक डिपो देहली हिस्सा,1स0,35)

(3) मोलवी अशरफ़ अली थानवी का अपने पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की के मुतअल्लिक एतेकाद कि उनका चाहा हुवा टल नहीं सकता ,हस्बे ज़ेल इबारत उस की शहादत दे रही है।

"मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने कहा हज़रत हाजी(इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की) ने एक मरतबा मुझसे फ़रमाया कि तुम्हारी ख़ाला तुम्हारे लिये औलाद की दुआ करने को कहती थी ,मैंने कह दिया कि मैं दुआ करूँगा लेकिन तुम्हारे लिये इसी हालत को पसंद करता हूँ जैसा कि मैं खुद हूँ यानी बे औलाद सामान सब कुछ हुए मगर चाहा तो बड़े मियाँ ही का हुवा ,अल्लाह तआला का उनके साथ ख़ास मुआमिला था वह कहाँ टल सकता था"

(हवाला:1,अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,3क़िस्त,14मल0,707,स0,439)
(हवाला:2,अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,1क़िस्त,1मल0,111,स0,60)
(हवाला:3,अशरफुस्सवानेह जि0,1स0,188)
(हवाला:4,हसनुल अज़ीज़_जि0,1 हिस्सा 3,कि0,18 मल0,409,स0,39)
(हवाला:5,अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,क़िस्त10,मल0935,स0,523)

अकाबिरीने देवबंद का दावा ए अज़्मत व अनानियत

(1) गंगोही जी ने खुद अपने मुतल्लिक कहा कि
"सुनलो हक वही है जो रशीद अहमद की जबान से निकलता है और ब कसम कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं हूँ मगर इस ज़माने में हिदायत व निजात मौकूफ है मेरे इत्तेबा के बगैर"
(हवाला: तज़केरतुर्रशीद जि0,2,स0,17)

(2) थानवी को इल्मे ज़रूरी के दरजे में एहसास था कि अल्लाह तआला ने थानवी को हुज्जतुल्लाहे फ़िल्अर्द बनाकर दुन्या में भेजा है
(हवाला:,अशरफुस्सवानेह जि0,1स0,84)

(3) दारुल उलूम देवबंद के मोहतमिम रफ़ीउद्दीन के हलक़ए तवज्जो में थानवी शिरकत करते थे और उस शिरकत के असर के तअल्लुक़ से थानवी ने खुद कहा "मुझको उस ज़माने में ऐसा मालूम होता था जैसे मुझमें नफ़सानियत का शाइबा भी नहीं रहा और मैं बिल्कुल फ़रिशता हो गया"
(हवाला:1,अशरफुस्सवानेह जि0,1स0,172)

(4) मोलवी इसमाईल देहलवी के पीर व मुर्शिद अहमद राय बरेलवी ने खुद अपने मुतअल्लिक़ कहा कि अलहमदो लिल्लाह मैं अल्लाह का वह बन्दा हूँ जिसके लिये मछलियाँ पानी में और चूँटियाँ सुराख़ों में दुआ करती हैं और जिस तरफ़ को मैं निकल जाता हूँ वहाँ के दरख़्त और जानवर तक मुझे पहचानते और सलाम करते हैं "
(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,117,स0,151)
(हवाला:2,अरवाहे सलासा हिकायत न0,117,स0,131)

(5) थानवी साहिब ने कुछ नए उसूल व ज़वाबित तशकील दिये थे जिस की वजह से लोगों में चेमीगोईयाँ हो रही थीं इस ज़िम्न में थानवी ने कहा कि "हज़रत उमर फ़ारूक़ ने जो हद क़ायम की थी वह हुज़ूर के ज़माने में ना थी इसी तरह मेरे यह मामूलात अपने बुज़ुर्गों में ना थे तो अगर मुझ पर कोई एतराज़ करे कि वह काम करता है जो बुज़ुर्गों ने नहीं किया तो उस का जवाब हज़रत उमर की तरफ़ से जो होगा वही जवाब इस उमर यानी मेरी तरफ़ से ख़्याल कर लिया जावे"।
(हवाला:1,अल इफ़ाज़ातुल योमिया (देवबंद)जि0,1क़िस्त,1मल0,240,स0,136)

(6) थानवी जी कहते हैं

''तरीक़ मुर्दा हो चुका था अहया की हक तआला ने मुझे तौफ़ीक अता की''

(हवाला:1,अल इफ़ाज़ातुल योमिया जि0,2किस्त,1मल0,220,स0,127)

(7) एक शख़्स ने थानवी से कहा कि मुनकर नकीर के सवाल का जवाब तो आसान है मगर आपके सवालात का जवाब मुश्किल है जवाब में थानवी ने कहा बिल्कुल सही है।

(हवाला1:अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त4,मल0889,स0,450)
(हवाला2:अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,किस्त7,मल0353,स0,193)
(हवाला3:अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त1,मल091,स051)

(8) थानवी ने नवाब ढाका का क़ौल नक़्ल करके अपने मुतअल्लिक़ कि जिसने सहाबा को न देखा हो वह थाना भवन जा कर देखले.

(हवाला:1,अल इफ़ाजालि योमिया (देवबंद)जि0,3किस्त,17मल0386,स0192)
(हवाला:2,अल्कलामुल हसन जि0,1किस्त9,मल0185,स0,88)

(9) थानवी की वजह से थाना भवन ग़र्क होने से सलामत रहा।

(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,430 स0,413)
(हवाला:2,अरवाहे सलासा हिकायत न0,,430 स0,391)

(10) थानवी ने कहा कि तरीक़ मुर्दा हो चुका था मुद्दतों बाद दो बारा ज़िन्दा हुवा अब सदयों तक तजदीद की ज़रूरत नहीं ,मेरे जैसे पीर की ज़रूरत है।

(हवाला:1,अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,2किस्त,8मल0580,स0308)
(हवाला:2,अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,किस्त10,मल0937,स0,323)
(हवाला:3,अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,3किस्त14,मल0525,स0357)

(11) थानवी ने अपने ख़लीफ़ा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन से कहा कि मैं एक ही जलसे में तालिब को खुदा तक पहुँचा देता हूँ।

(हवाला:1,अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त1,मल011,स018)

(12) एक मरतबा गंगोही ने मजमए कसीर में ये अल्फ़ाज़ कहे कि ये जो मेरा तरीक़ा है बेऐनेही सहाबा रजियल्लाहो अन्हुम का तरीक़ा है इस पर साबित क़दम रहना और इस को हाथ से न देना।

(हवाला:1,तज़केरतुल रशीद जि02,स034)

चे निस्बत ख़ाक रा बाआलमे पाक

मुदर्रजा बाला दोनों इबारतें पढ़कर तसफ़िया कीजिये। देवबंदियों के यहाँ अल्लाह व रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता और ये कहना ग़लत ही नहीं बल्कि शिर्क के दरजे में है इसके बावजूद अशरफ़ अली थानवी इक़रार कर रहे हैं कि हाजी इमदादुल्लाह साहिब ने जो कह दिया वही हुवा ,गंगोही जी अपनी इत्तेबा को सनदे निजात साबित कर रहे हैं ,थानवी जी हुज्जतुल्लाहे फ़िलअरदीन बनाकर भेजे गए ,किसी के लिए मछलियाँ और चूँटियाँ दुआ कर रही हैं तो कोई कह रहा है कि हमें जानवर और दरख़्त पहचान कर सलाम करते हैं (नऊजु बिल्लाहे मिन ज़ालिक)ये ऐसे लोग हैं जिनसे तौहीने अंबिया साबित है पैग़म्बरे इस्लाम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम को दरो दीवार सलाम अर्ज़ करें दरख़्त सजदा करें ,जानवर कलाम करें, सारी मख़लूक़ात हाजत रवा जानें उन्हीं के तअल्लुक़ से ये अक़ीदा कि उनके चाहने से कुछ नहीं होता और अल्लाह और रसूल साथ में मिलाकर बोलना संगीन जुर्म बताया जा रहा है कुरआने हकीम में रब तआला ने इरशाद फ़रमाया"

"اطیعو اللہ و اطیعو الرسول" ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का। इस आयते करीमा में अल्लाह जल्ला शानुहू ने अपने महबूब की इताअत हर हुक्म में वाजिब क़रार दिया है ,अगरचे किसी को कुरआन के ख़िलाफ़ ही क्यों न हुक्म दें वाजिब के दरजें में होगी जैसे हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को हजरते फतिमह ज़हरा रज़ियल्लाहो अन्हा की मौजूदगी में दूसरी औरतों से निकाह की इजाज़त न थी हज़रते ख़ुज़ेमा अंसारी रज़ियल्लाहो अन्हो की तनहा गवाही दो के बराबर तसलीम की गई और ऐसा क्यों न हो हुज़ूर हाकिमों के हाकिम, सुल्तानों के सुल्तान , जो फ़रमादें और जिसके लिए फ़रमा दें वही उसके लिये क़ानून बन जाए सरकार की इताअत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इताअत है यही वजह है कि जिन लोगों ने उस से अलग जाना वह मुर्तद और गुमराह हुए और उसकी सज़ा क़त्ल मुतअय्यन हुई दीने इस्लाम क़ुबूल करने के बाद जब कोई ज़रूरी अक़ाइद का इन्कार करे और तोबा न करे तो उसे शरई इस्तिलाह में मुर्तद कहा जाता है और उसकी सज़ा शरीअत में क़त्ल है और ये उसूल है कि क़ानून का

मुन्किर गद्दार और बागी कहलाता है और दुन्या के कानून में गद्दार की सजा कत्ल है देखो बिशर मुनाफिक ने रसूले करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के फैसले से रू गरदानी की तो सय्यदुना हजरत उमर फारुक रजियल्लाहो अन्हो ने उस मुर्तद का सर कलम करके " اطیعوا الله و اطیعوا الرسول " का अमली मुजाहिरा फरमाकर ये पैगाम दिया कि जब भी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फैसले को ना मान्ने वाली जमाअत के अफराद से मुलाकात हो तो जरूर सर कलम कर दिया जाए। देखो! अगर बिशर मुनाफिक का सर कलम करके उसको गुस्ताखी की सजा देना अज़ रूए शरा दुरुस्त न होता तो ज़रूर खून बहा अदा किया जाता ,मगर जब इस कज़या पर बारगाहे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में हज़रते उमर रज़ियल्लाहो अन्हो की तलबी होती है सरकार ने इरशाद फ़रमाया क्यों उमर तुमने एक मुसलमान को कत्ल कर दिया है किया इसलाम इसकी इजाज़त देता है ? हज़रते उमर रज़ियल्लाहो अन्हा ने अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह सल्लल्लोहो अलैहे वसल्लम मैं ऐसे को मुसलमान समझता ही नहीं हूँ जो आपके फैसले को मुस्तरद करदे मैंने मुसलमान का नहीं एक मुनाफ़िक़ का सर क़लम किया रब्बे क़दीर ने फ़ारूक़े आज़म के इस फैसले को सराहा और उनकी मवाफ़ेक़त में कुरआन की आयत नाज़िल फ़रमाई " ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनायें

(कंज़ुल ईमान ,पा05 अन्निसा आयत,64)

मज़कूरा आयत में ईमान की नफ़ी है नाकि कमाले ईमान की यानी वह बे ईमान और गुमराह मुर्तद ,बद दीन अक़ाइदे बातेला और ख़्यालाते फ़ासेदा रखने वाले लोगों को अस्ल ईमान ही नसीब न होगा मोमिन अगरचे गुनाह करे मगर क़तअन वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी नहीं कर सकता है ,अपने को ना हक़ ज़ालिम गुनाहगार जानता है लिहाज़ा ईमान से ख़ारिज नहीं, हाँ जो कलेमा पढ़ने के बावजूद इसलामी अहकाम में नक़्स निकाले वह ज़रूर इस्लाम से ख़ारिज है देवबंदी, वहाबी, सुलेह कुल्ली और इन जैसे दीगर फिरक़े के लोग जो बज़ाहिर मुसलमान होने का ढंडोरा पीटते हैं किया ये लोग कुरआन की नज़र में मोमिन हैं ?

जिसके यहाँ अल्लाह व रसूल के चाहने जैसे अल्फ़ाज़ का इस्तिमाल शिर्क है और सितम ये है कि अल्लाह व रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता उसके बर अक्स अकाबिरीने देवबंद का चाहा कभी टल नहीं सकता ऐसे ही लोगों के लिए इमामे इश्क़ व मोहब्बत सरकार आला हज़रत रजियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं ।

तेरी दोज़ख़ से तो कुछ छीना नहीं
ख़ुल्द में पहुँचा रज़ा फिर तुझको किया

लक़्ब रहमतुल लिलआलमीन

(1) लफ़्ज़े रहमतुल लिलआलमीन सिर्फ़ ख़ास्स ए रसूल सल्लललोहो अलैहे वसल्लम की नहीं बल्कि दीगर औलिया ,अंबयिा और उलमा ए रब्बानिय्यीन भी मूजिबे रहमते आलम होते हैं अगरचे जनाबे रसूल सल्लललाहो अलैहे वसल्लम सबसे आला हैं लिहाज़ा अगर दूसरे पर इस लफ़्ज़ को बतावील बोल देवे तो जाइज़ है'' फ़क़त।

(हवाला:1,फतावा रशीदिया (1987,ई0)स0,104)
(हवाला:2,फतावा रशीदिया (1363 हि0,)जि0,2 स0,9)

(2) बकौल रशीद अहमद गंगोही हाजी इमदादुल्लाह रहमतुल लिलआलमीन हैं।

(हवाला:अलइअफाज़ातुल योमिया (देवबंद)जि0,1कि0,1मल0 135,स0,88)

(3) जब हजरत हाजी साहिब का इन्तेक़ाल हुवा तो हमनें एक वक़्त का भी खाना नहीं छोड़ा इतना कहने के बाद थानवी नें कहा कि मगर मौलाना को दस्त लग गए कई रोज़ तक खाना नहीं खाया उस ज़मानें में लोगों ने अकसर कहते सुना कि वाक़ई रहमतुल लिलआलमीन वाक़ई हाजी साहिब की शान रहमत ही रहमत है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1हि0,4मल0 ,593 स0,50)

(4) थानवी जी नें कहा कि हम तो हाजी साहिब (इमदादुल्लाह)को ऐसा समझते हैं कि अगर कोई यह कहे कि हज़रत हाजी साहिब की पैदाइश से पहले और आसमान व ज़मीन थे,खुदा तआला नें हाजी साहिब की खातिर नया आसमान और नई ज़मीन पैदा फरमादी है तो हम उस का भी यक़ीन कर लें हम तो हाजी साहिब को ऐसा ही समझते हैं। (हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1हि0,4 मलफूज़,593स0,51)

ज़ाते आफताबे रिसालत को निशाना

मज़कूरह बाला इबारात को बग़ौर पढ़िये और फैसला कीजिये फतावा रशीदया की इबारत वाज़ेह तौर पर बता रही है कि रहमतुल लिलआलमीन का इतलाक़ आम इनसान पर हो सकता है इस इबारत से आफताबे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शाने आला को निशाना बनाने की कोशिश की गई है और दूसरी इबारत में हाजी इमदादुल्लाह साहिब को सर ता पैर रहमत ही रहमत साबित किया जा रहा है, यहाँ तक कि हाजी साहिब की ऐसी जात है जिन की ख़ातिर रब तआला ने आसमान व ज़मीन पैदा फरमादी। अगरचे उन का वजूद नई सूरतों में हुवा देवबंदियों नें रसूल के रहमतुल लिलआलमीन होने के बजाए अपने अकाबिरीन को मुजस्सम रहमत से ताबीर किया जबकि रब्बे क़दीर ने अपनें महबूब के बारे में इरशाद फरमाया: وما ارسلناك الارحمة اللعالمين और हमने तुमहें नहीं भेजा मगर रहमत सारे जहानों के लिए। यह आयते करीमा बेशक व शुबहा इस बात की दलील है कि जाने कायेनात फख़रे मौजूदात हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सबसे पहले पैदा किया गया क्योंकि आप कायेनात के हर फर्द के लिए रहमत का सबब हैं। जहाँ जहाँ रब की रबूबियत है वहाँ वहाँ हुज़ूर की रहमत है और आप की रहमते पाक का दायेरा बिला इस्तिसना आलमीन के हर फर्द के लिए है। और यह बिल्कुल अयाँ है कि जिस तरह हर फर्दे आलम अपनी बक़ा और इरतेक़ा के लिए रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुहताज है इसी तरह अपनी ईजादात में भी आपकी रहमत का मुहताज है और यह क़ायेदा कुल्लिया है कि मुहताज इलैह का वजूद मुहताज से पहले हुवा करता है। लिहाजा नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आलमीन के हर फर्द से पहले पैदा किया जा चुका था आपकी रहमत मुतलक़ है, कामिल है, आम है आलमे ग़ैब व शहादत को घेरे हुए है और दोनों जहाँ में दाइमी तौर पर मौजूद है। हुजूर की रहमते आम्मा रिज़्क़ वगैरा हर काफिर व मोमिन को पहुँचती है और रहमते खास्सा ईमान व इरफान वगैरह सिर्फ

मोमिनों को।

दिलों में कदूरत रखने और मुनाफिकत का जहेर फैलाने वाले हजरात भी आपकी रहमते आम्मा से मुस्तफीज़ हो रहे हैं वरना अगली कौमों की तरह इन ज़ालिमों का भी हश्र वही होता। यह सदका है रहमते आलम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के नालैने मुबारक का कि कम अज़ कम दुनिया में अज़ाबे इलाही से महफूज़ है।

वह हर आलम की रहमत हैं किसी आलम में रह जाते
यह उन की महेरबानी है कि यह आलम पसन्द आया

फहश हिकायात व इरतिकाब

(1) खानिकाहे गंगोह में मुरीद और शागिरद की मौजूदगी में रशीद अहमद गंगोही और कासिम नानोतवी एक ही चार पाई पर लेट गए नानोतवी का शरमा जाना और गंगोही से कहना कि मियाँ किया कर रहे हो लोग किया कहेंगे लेकिन गंगोही का कहना कि लोग कहें तो कहने दो

(हवाला:1 अरवाहे सलासा हिकायत,305 स0,289)
(हवाला:2, हिकायाते औलिया,हिकायत,305 स0307)

(2) मोलवी मनसूर अली तिलमीज़ नानोतवी का एक लड़के से इश्क था, नानोतवी की फरासत ने भाँप लिया। आपस में गुफतगू के दौरान नानोतवी का उस लड़के का जिक्र छेड़ना फिर मोलवी मनसूर का इक़रार नानोतवी नें दिल जोई करते हुए कहा कि यह हालत तो उस पर आती है। फिर मोलवी मनसूर का इक़रार कि अब मैं निकम्मा हो गया हूँ नानोतवी का कहना कि थक गए जोश खत्म हो गया बिलआखिर गंगोही नें मनसूर को अर्श के नीचे पहुँचाया।

(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत ,251स0 264)
(हवाला:2,अरवाहे सलासा,हिकायत 251,स0 254)

(3) हाफिज ज़ामिन मछली का शिकार कर रहा था किसी नें कहा हजरत हमें मारा, ज़ामिन, थानवी नें कहा कि अबके मारुँ तेरी।

(हवाला1: हिकायातुलऔलिया,हिकायत210,स0 225)
(हवाला2:तज़किरतुल रशीद,जि0 2,स0270)

(4) कानपुर में थानवी के हैदराबादी मामूँ से वाज़ करने की दरख्वास्त,कहा इस शर्त पर वाज़ करूँगा कि मैं बिल्कुल नंगा होकर बाज़ार से निकलूँ इस तरह कि एक शख्स आगे से मेरे अजूए तनासुल को पकड़ कर खींचे और दूसरा पीछे से उँगली करे,साथ में लड़कों की फौज हो और वह यह कहते जाएं कि भड़वा है रे भड़वा भड़वा है रे भड़वा उस वक्त मैं हकाइक़ व मआरिफ बयान करूँगा।

(हवाला1:अलइफाज़ातुल योमिया (दिवबंद)जि04,किस्त22,मल0112 स0 128)
(हवाला2:अलइफाज़ातुल योमिया (थाना भवन)जि0 9,हिस्सा1,मल्फूज़96,स0142)

(5) मोलवी फैजुल हसन का छत्ता की मस्जिद में इसतिन्जा के लोटों की टोटियाँ टूटी हुई देख कर कहना कि सारे लोटे मुखन्नस हैं यह सुनकर नानोतवी का कहना कि मुखन्नसों से डरना किया और आप को बड़ा इसतिन्जा करना नहीं।

(हवाला1: हिकायातुल औलिया,हिकायत 244,स0 259)
(हवाला:2,अरवाहे सलासा,हिकायत 244,स0 241)
(हवाला3: सवानेह क़ासमी,जि01,स0465)

(6) थानवी के मामूँ का थानवी से मिलने के लिए आने पर नंगा होकरआने की शर्त, थानवी का कहना की मेरा किया बिगड़ता है मैं आँखें बन्द कर के मुसाफह कर लेता।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमया (देवबंद)जि04,किस्त22,मल0 112,स0129)

(हवाला2:अलइफाजातुल योमिया (थानाभवन)जि09,हि01,कि027,मल096,स0144)

(7)एक दिहाती ने भरे मजमे में गंगोही से पूछा कि औरत की शरमगाह कैसी होती है,जवाब में गंगोही ने फरमाया जैसे गेंहूँ का दाना

(हवाला:तज़किरतुल रशीद जि02,स0100)

(8) हाफिज्जी के निकाह की हिकायत, लड़कों नें कहा निकाह में बहुत मज़ा है। हाफिज्जी नें निकाह किया रात भर रोटी लगा लगा कर खाई और कहा कि हमैं तो न नमकीन, न मीठी, न कड़वी मालूम हुई लड़कों नें कहा मारा करते हैं, जूते से मारा मुहल्ला जमा हो गया रुसवाई हुई तब लड़कों नें खुल कर बताया फिर उस पर अमल किया और कहा वाक़ई बहुत मज़ा है।

(नोट) यह हिकायत थानवी ने शरीअत के अहकाम पर अमल करनें में सुकून है समझाने के लिए हवाला1और हवाला2 में वहदतुल वजूद की हक़ीक़त की मिसाल समझाने के लिए बयान की।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,किस्त14,मल0537,स0362)

(हवाला2:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त2,मल0381,स0192)

(हवाला3:अलइफाजातुल योमिया(देवबंद)जि01,कि05,मल01004,स0497)

(हवाला4:अलइफाजातुल योमिया (थानाभवन)जि02,हि01,कि042,मल0280,स0244)

(हवाला5:हसनुल अज़ीज़ जि04,हि01,कि010,स0101)

(9) थानवी के खलीफा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने थानवी से कहा कि काश मैं औरत होता और आप के निकाह में जवाब में थानवी ने कहा कि यह आप की मुहब्बत है सवाब मिलेगा, सवाब मिलेगा।

(हवाला1:अशरफुस्सवानेह जिल्द2,स028)

(10)गंगोही नें कहा कि एक मरतबा मैंने ख्वाब देखा कि मोलवी क़ासिम नानोतवी दुल्हन की सूरत में हैं और उन से मेरा निकाह हुवा सो जिस तरह ज़न व शौहर में एक दूसरे से फ़ायेदा पहुँचता है उसी तरह मुझे उन से और उन्हें मुझसे फायेदा पहुँचा है।

(हवाला1:तज़किरतुलरशीद जिल्द2,स0289)

(हवाला2:तज़किरतुलरशीद जिल्द1,स0245)

(11) मोलवी यहया काँधलवी के फिराक़ में गंगोही का आशिकाना शेर सुनिये।

मत आइयो ओ वादा फरामोश तू अब भी
जिसतरह कटा रोज, गुजर जायेगी शब भी

(हवाला1:हिकायातुल औलिया,हिकायत338,स0325)
(हवाला:2,तजकिरतुर्रशीद जिल्द2,स076)
(हवाला:3,अरवाहे सलासा हिकायत338,स0307)

(12)पड़ोसी के मकान में एक औरत बन ठन कर बैठी थी थानवी जी खिड़की से देखते हैं

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि015,म0153,स029)

(13)थानवी के मामूँ शौकत अली नें एक तालिबे इल्म को बुलाया कि यहाँ आओ कुछ कहना है, वह आया तो दूसरी तरफ चले गये और वहाँ बुलाया ग़रज़ कि इधर उधर बुलाने के बाद कान में कहा कि आज अब्र है यानी मोसम अच्छा है तालिबे इल्म नें कहा ला हौला वला कुव्वता इस बात के लिए मुझे इतनी देर इधर उधर घुमाया।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि02,कि015,म0182स047)

(14)एक बड़े पेट वाले नें कहा मुऐ ज़ेरे नाफ लेने में मौक़ा नज़र नहीं आता फलाँ मोलवी साहिब नें कहा कि बीवी से उतर वालिया करो इस पर थानवी नें कहा कि अगर बीवी ख़फा हो जाए और उस्तरे से सफायी करदे (अजू काटदे) तो फिर बड़ा मज़ा हो।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,क़िस्त17,मल0385,स0190)

(15)थानवी जी कहते हैं कि एक मोटे पेट वाले को किसी मोलवी ने यह रायदी थी कि बीवी से मूए ज़ेरे नाफ उतर वालिया करो थानवी ने फिर कहा कि मैंने उसको चूना हड़ताल का नुसख़ा बताया वह बहुत खुश हुवा

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि01,कि019,मल0623स0133)
(हवाला2:कमालाते अशरफिया 1995बाब,2मल0201स0385)

(16)थानवी साहिब एक हिकायत बयान करते हैं आप भी सुनिये कि अपनी माँ से ज़िना करने वाले ने कहा कि जब मैं सारा ही उसके अन्दर था तो अगर मेरा एक जुज़ उस के अन्दर चला गया तो किया हरज हुवा थानवी ने कहा कि यह हुक्म भी तो अक़लियात में से हो सकता है।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,कि013,मल0464,स0322)
(हवाला2:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,क़िस्त16,म060,स041)
(हवाला3:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि04,क़िस्त22,मल0129,स0146)

(17) इसलाहे अवाम का अनोखा नुसखा थानवी इस्तिन्जा के लिए बैतुल ख़ला जा रहे थे लेकिन लोगों ने मुसाफह शुरु कर दिया उस पर एक शख़्स ने लोगों को टोका कि अब तो ज़रा ठहेर जाओ इस्तिंजा के लिए जा रहे हैं उस पर थानवी ने कहा कि क्यों मना करते हो आने दो ये तो मेरे साथ पाखाने के अंदर ही जायेंगें मुझे इस्तिंजा करते दे खेंगें आख़िर इस्तिंजे की कैफियत भी किसी तरह सीखें। (हवाला1:हसनुल अज़ीज जि04,कि010,हि01 स0218)

(18) थानवी जी अपने बचपन की शरारत का ज़िक्र फख़रिया अंदाज़ में करते हैं इबतेदाए बुलूग़ में मुझे एहतेलाम हुवा फूफाके यहाँ मेहमान था घरमें शर्म कि वजह से नहा न सका मस्जिदें तलाश करता फिरा एक मस्जिद में ठंडे पानी से सख्त सर्दी का मोसम होने के बावजूद हिम्मत करके नहा ही लिया।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि04,हिस्सा1,कि010, स0,218)

(19) देहली के सफर में सुबह को हवा ख़ोरी के लिये थानवी का निकलना कई लोग साथ हो गये तो थानवी ने तमाम को साथ चलने की ममानेअत की सब रुक गये रुकनें वालों के साथ थानवी के ख़लीफा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन का भी रुक जाना, लेकिन थानवी ने सिर्फ उनको अकेले को साथ लिया और कहा कि हर औरत यह चाहे कि मेरे साथ बीवी का तअल्लुक़ रखा जाए तो उस की हिमाक़त है। (हवाला: अशरफुस्सवानेह जिल्द 2, स0,114)

(20) थानवी ने अपने ख़लीफ़ा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन के तवील ख़त को तूले ज़ुल्फ़े महबूब कहा।

(हवाला: अशरफुस्सवानेह जिल्द 2, स0,30)

(21) अपनी महफिल में थानवी ने खाए बग़ैर किसी चीज़ की हक़ीक़त मालूम नहीं होती ये बात समझाने के लिए एक फ़हश हिकायत बयान की, बहुत सी सहेलियाँ आपस में जमा रहती थीं और ये वादा था की जिसका पहले बियाह हो जाए वह उस मज़े से सब को आगाह करे एक सहेली का बियाह हुवा शब गुज़र जाने पर सुबह को सहेलियों ने उससे मज़ा पुछा तो वह कहती है कि बियाह यूँ ही जब तुम्हारा हो जाए गा तब मज़ा मालूम सारा हो जाए गा।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जि0,1,कि0,5 मल01004 स0497)

(22) एक मौके पर थानवी जी के ख़लीफ़ा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने औरत और थानवी की मन्कूहा होने की तमन्ना की थानवी ने कहा कि ये आपकी मोहब्बत है सवाब होगा इस हिकायत के तअल्लुक़ से ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने कहा हज़रते वाला अपने मजलिस में अहक़र के इस मोहब्बत आमेज़ क़ौल को बा लुत्फ़ नक़्ल फ़रमा फ़रमा कर मज़ाहन फ़रमाया करते हैं कि ग़नीमत है इस के अक्स की ख़्वाहिश नहीं की।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि02,स028)

(23) थानवी जी एतेराफ़ करते हैं कि किसी ना बालिग़ लड़की के सर पर शफ़क़त से हाथ रखने के थोड़ी देर बाद नफ़्स की आमेज़िश होने लगती है।

(हवाला1:अशफ़ुस्सवानेह जि02, स0327)

(24) थानवी के ख़लीफ़ा अज़ीज़ुल हसन ने टिरेन में बिस्तर लपेट कर बांधा, जब उठाया तो उस में घड़ी निकल पड़ी थानवी ने कहा कि ये इस्क़ात क़ब्ल अज़ वक़्त हुवा।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि04,हिस्सा 2,कि011,स031)

(25) थानवी जी एक लग़ो और फ़हश हिकायत ब्यान करते हैं कि एक चौधराइन का आबे दस्त नौकरानी करती और बाज़ मोटे आदमियों का आबे दस्त कपड़े के थान से किया जाता है दो आदमी खड़े होकर इधर उधर को खींचते हैं और सिक़ा पानी डालता है।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि04,हिस्सा 2,कि011,स086)

(26) थानवी साहिब अपनी बीवी से कहते हैं कि हम दिन भर के काम के बाद थके थकाए अपने दिमाग़ को राहत देने तुम्हारे पास आते और तुम उस वक़्त भी अपने काम में लगी रहती हो।

(हवाला1:अशफ़ुस्सवानेह जि03,स0105)

(27) थानवी जी का क़ौल मुलाहिज़ा हो मैंने हसीनों को देखा है झुंझलाते और मुंह चिढ़ाते वक़्त ऐसे अच्छे लगते हैं कि बस फ़िदा हो जाओ।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि01,हिस्सा 4,कि019,मल0624,स0138)

(28) थानवी सर्दी में दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे एक शख़्स मिलने गया लेकिन थान्वी ने मना किया वह चला गया फिर थानवी

ने कहा मैं ज़रा आराम करने लेटा था कि बस आ मौजूद हो गए रंडवे जब बैठने दें तब तो रांडें बैठें उस शख़्स को बादे नमाज़े जोहर पूछने पर उसने अपने जाने का यह उज्र बताया कि पर्दों के अंदर से हज़रत की गुफ़तगु करने की आवाज़ आ रही थी इस वजह से मैं चला गया था इस पर थानवी ने कहा कि अगर आवाज़ सुनकर जाने की इजाज़त होने पर इस्तिदलाल किया जाए गा तो मियाँ बीवी की ख़लवत में भी जा घुसें गे।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि015,मल0329,स0122)

(29) थानवी कहते हैं कि पीराने कलयर के मुसाफ़िर खाने में एक शख़्स ज़िना में मश्गूल था इत्तिफ़ाक़न चंद मुसाफिर आए और दरवाज़ा खट खटाया ज़िना में मश्गूल शख़्स ने अंदर से कहा कि यहाँ जगा कहाँ यहाँ तो आदमी पर आदमी पड़ा है उसके इस जवाब की तारीफ़ करते हुए थानवी ने कहा कि सच्चा आदमी था झूट नहीं बोला ज़ेहानत का जवाब था।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया(देवबंद) जि02,कि012,मल0274,स0216)

(30) थानवी एक और फहश हिकायत ब्यान करते हैं और इस हिकायत में ज़ौजए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रते ज़ुलेख़ा की शान में ना ज़ेबा अलफ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं मुलाहिज़ा हो।

"कानपुर में मुक़ीम भोपाल की रईसा का लड़का एक उसताद से पढ़ता था सबक़ में हज़रते ज़ुलेख़ा का क़िस्सा आया तो उस लड़के ने उसताद से पूछा कि हज़रते ज़ुलेख़ा की छातियाँ कैसी थीं उसताद ने जवाब में कहा कि जैसे तेरी माँ की छातियाँ लड़के ने अपनी माँ से शिकायत की उसताद से लड़के की माँ ने पूछा तो उसताद ने कहा कि इसने मेरी माँ की तौहीन की तो मैंने उसकी माँ को कह दिया माँ ने लड़के को डाँटा

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया(देवबंद) जि03,कि018,मल0584,स088)

(31) एक मर्तबा थानवी को खाँसी हुई थी एक शख़्स ने कहा कि मैं आप के लिए शरीफ़ा(फल)लाऊँगा आपके लिए मुफ़ीद रहेगा थानवी ने कहा शरीफ़ को लाओ शरीफ़ा को मत लाओ मेरी दो दो मन्कूहा हैं किया फौज खड़ी करनी है।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया, जि01,कि01,मल063,स0,42)

(32) एक शख़्स ने थानवी से आहिस्ता आवाज़ से तावीज़ माँगा

थानवी ने उससे कहा कि क्या तुम औरत हो?औरत की आवाज़ फ़ितना है कोई आशिक़ ना हो जाए ।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया(देवबंद) जि01,कि03,मल0448,स0372)

(33) एक मर्तबा थानवी ने कहा कि किसी को तकना अच्छा नहीं मालूम होता, इससे तबअन ना गवारी होती है फिर मज़ाहन फ़हश जुमला कहा फिर वह नाग दार(साँप के मुशाबह) हो जाता है।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया(देवबंद) जि01,कि05,मल01043,स0513)

(34) एक मोल्वी साहिब देहली से थाना भवन आए और थानवी से कहा कि मैं देहली ग़ैर मुक़ल्लिदों से मुनाज़ेरा करने के लिए गया था लेकिन वह आमादा नहीं हुए उस पर थानवी ने उस मोल्वी साहिब से कहा कि आप को ये ऐलान करदे ना था कि,आ, मादह, नर, आ गया।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया(देवबंद) जि02,कि015,मल0826,स0470)

(35) मोल्वी क़ासिम नानोतवी मोल्वी याकूब नानौतवी के लड़के जलालुद्दीन से बड़ी हँसी किया करते थे कभी टोपी उतार लेता और कभी कमर बंद खोल देता था।

(हवाला1:हिकायातुल औलिया,हिकायत न0275,स0287)
(हवाला2:सवानेह क़ासमी जि01,स0466)
(हवाला3:अरवाहे सलासा,हिकायत न0275,स0268)

अकाबेरीने देवबंद का ज़ौक़े तबा

"मज़कूरा बाला इबारतों को पढ़िये और उन ज़ालिमों के तअल्लुक़ से फ़ैसला किजिये।

अकाबेरीने देवबंद ने किस क़दर फहश कलामी और उरयानियत व बे हयाई का मुज़ाहिरा किया है हमने अस्ल इबारत पेश करके फैसला आप पर रख छोड़ा है मेरा इन वहाबी, देवबंदी मुल्लाओं से सिर्फ़ ये कहना है कि अगर बुज़ुर्गों से ग़ल्तियाँ सरज़द हुई और उन लोगों ने इरतेकाबे जुर्म किया है तो क्या ज़रूरत थी बयान करने की मगर ختم الله على قلوبهم و على سمعهم و على ابصارهم غشاوة के मिसदाक़ उन कोरे बातिन को किया सूझा कि अपने मुल्लाओं की ख़ताओं को बतौरे करामत ब्यान कर दिया आज भी वह सभी किताबें दसतियाब हैं जिन में मजकूरा फहश हिकायात को करामतों से तशबीह दी गई है। अपने पेश वाओं की इज़्ज़त व हुर्मत को सरे

बाजार नीलाम करके चटख़ारे ले रहे हैं: लेकिन इज़्ज़त व हुरमत उस की नीलाम होती है, इसमतें उस की दागदार होती हैं जिसके पास इश्के रसूल जैसी अज़ीम दौलत हो, यह मक़ाम मोमिनीन के लिए है नाकि मुर्तद और गुमराह अक़ाइदे बातिला व रज़ीला रखने वालों के लिए। देवबंदी मकतबे फिक्र के सभी मुल्लाओं और उनके मुत्तबेईन के लिए कितना बड़ा अलमिया है।

इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

आज हम ऐहले सुन्नत व जमाअत को झगड़ालू बताया जा रहा है इमाम ऐहले सुन्नत आक़ाए नेमत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बिदअतों का मोजिद क़रार दिया जा रहा है जब कि आला हज़रत ने बिदअतों का रद्दे बलीग़ फ़रमाया है यक़ीनन ये लोग इख़्तिलाजे क़ल्ब जैसे ख़तर नाक मर्ज़ के शिकार हैं इनके क़ल्बी नज़रियात यानी अक़ीदे न दुरुस्त थे न हैं अगर्चे यह लोग कलेमा गो और नमाज़ी थे और हैं मगर फ़रमाने इलाही के बमोजिब मोमिन नहीं क्योंकि अक़ीदा दिल के पुख़ता और मज़बूत इरादे का नाम है और आयाते कुर आनी साफ़ बता रही है कि जिसका अक़ीदा ठीक न हो वह नमाज़ रोज़े का कितना ही पाबंद क्यों न हो हरगिज़ मोमिन नहीं हो सकता आज वहाबी धरम के ठेकेदारों की किताबें पढ़ने के बाद उस घिनाओ ने मज़हब से तोबा करके बेज़ारी का ऐलान क्यों नहीं किया जा रहा है ? मर्द व औरत नौजवान नस्ल किस क़दर ज़हनी इन्तेशार का शिकार होते जा रहे हैं किया इस का अंदाज़ा है ?

अगर वहाबी धरम के लोगों से सवाल किया जाए कि किया ये इबारतें सही हैं तो वह यक़ीनन सर खुजा कर बग़लें झाँकते हुए नज़र आयेंगे या अपना रास्ता इख़्तियार कर लेंगे या ये कहकर दामन बचाने की कोशिश करेंगे कि सुन्नी मोल्वियों ने बदनाम करने के लिए किताबें छपवाकर तक़सीम की हैं ऐसे मौक़े पर आपगिरेबान पकड़ लिजिये और कहिये ज़ालिम अगर तेरे क़ौल में सदाक़त है तो ऐलान करदे कि मज़कूरा किताबों से देवबंदी आलिमों का कोई वास्ता नहीं है और ऐसे गंदे ज़हन व फिक्र के लोग गुमराह, बद दीन, गुसताख़े रसूल हैं और उन की किताबें गुमराह कुन हैं , मगर ऐसा

न हो सकेगा क्योंकि क़ल्ब व सीना सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत से ख़ाली है।

पहले जनाबे शेख़ ने देखा इधर उधर
फिर सर झुका कर दाख़िले मैख़ाना हो गए

फ़ुहश मिसालें और फ़ुहश कलामी

(1) बक़ौल थानवी "मियाँ बीवी ख़त के ज़रीये इज़हारे मोहब्बत करें लेकिन मिलें नहीं तो औलाद ना होगी, इसी तरह समराते खास्सा के लिये सोहबते शेख़ जरूरी है।

(हवाला1:हसनुल अ़ज़ीज़ जि01, हि0,1 कि016, मल0,19, स024)
(हवाला2: कमालाते अशरफिया (1995)बाब1, मल0754, स0193)

(2) अपना कोई हाले बातनी किसी पर ज़ाहिर करने वाले को थानवी ने कहा कि शर्म न आई अपनी बीवी को गै़र की बग़ल में देना किसी को गवारा हो सकता है?

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि01,कि016, मल062,हिस्सा 1 स0,62)

(3) थानवी का क़ौल मुलाहिज़ा हो लोगों से लड़कों का मिलना ऐसा है जैसे लड़कियाँ ग़ैर लोगों से मिलीं।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि01, हि01, मल0,66, स070)

(4) निकाहे सानी के ज़िम्न में थानवी कहते हैं कि दिया सलाई की नोक पर जो लगा रहता है वह सब में मौजूद है बहुत सो में रगड़ लग गयी है हम में रगड़ नहीं लगी।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि01, हि02, कि017 मल0,149, स0169)

(5) कहीं मुलाज़िमत करनें वाले को थानवी नें कहा तुम बड़े तेज़ हो निकाह कर लो सब जोश निकल जायेगा।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि01, हि02, कि017 मल0,110, स0125)

(6) थानवी से एक शख्स नें पूछा कि आप के पास रेन्डी तो कोई नहीं आती कहा कि रेन्डे तो आते हैं वह एक ही हैं चाहे रेन्डी हो या रेन्डे।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि01, हि02, कि017 मल0,170, स0189)

(7) थानवी कहते हैं कि बाज़ लोग ऐसे आते हैं कि खुद जी चाहता है कि यह हम से मुरीद हो जायें लेकिन खुद कहनें में शरम आती है जैसे कि लड़की के निकाह में हमारी लड़की से निकाह करलो कहने में शर्म आती है।

(हवाला:हसनुल अजीज जि01, हि03, कि018 मल0,450, स0,74)

(8) इबादत के लिये थानवी जी का नुस्खा मुलाहिजा हो: तरीक में अगर लज्जत मकसूद है तो बीवी को बगल में लेकर जिक्र करें खुदा की कसम बहुत लज्जत आयेगी एक जर्ब इधर हो एक जर्ब उधर हो।

(हवाला:हसनुल अजीज जि01, हि03, कि018 मल0506, स0154)

(9) बे दिली से तालीम करने के जिम्न में थानवी का मुजर्रब नुस्खा कि सोहबत के वक्त औरत मर्द दोनों को शहवत होना चाहिये और हमल करार पाने के लिये तवाफुके इनजालैन शर्त है वरना हरकात मुतइबा हो ही जाएगी लेकिन नस्ल नहीं चलेगी खुवाह मखुवाह बेचारी को तंग किया, जाड़े में नहाने की तकलीफ दी इसी तरह बे दिली से तालीम करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे बिला शहवत सोहबत करना।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि01, हि03, कि018 मल0538, स0192)

(हवाला2:कमालाते अशरफिया बाब1,मल0928,स0232)

(10) बक़ौल थानवी निकाह करते वक्त मर्द और औरत का एक दूसरे से बच्चा जनवाने का वादा लेना नादानी है इसी तरह मुरीद का पीर से कोई चीज़ हासिल करा देने का गुमान भी नादानी है।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि01, हि04, कि019, मल0,619, स0,96)

(11) थानवी कहते हैं कि बूढ़ों के मक़ाबले में जवान में इसमत ज़्यादा होती है बूढ़ों में शहवत ज़्यादा होती है लिहाज़ा बूढ़े आदमी से औरतों को ज़्यादा बचाओ।

(हवाला1:हसनुल अजीज़ जि01, हि04, कि019, मल0623, स0,129)

(12) थानवी कहते हैं कि ज़िक्रे लिसानी से लोगों की जान निकलती है बस यही कहते हैं कि मज़ा नहीं आता मैंनें इस पर कहा था कि मज़ा तो मज़ी निकलनें में आता है लोहे के चनेंचबाने में मज़ा कहाँ।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि03, हि03, कि014, स0,6)

(13) थानवी जी की खुबासत मुलाहिजा फरमाइये कि औरतें बहलानें के लिये हैं रोटियाँ पकानें के वासते नहीं।

(हवाला: अलइफाजातुल योमियया(देवबन्द)जि02,कि10,मल0892,स0502,)

(14) बक़ौल थानवी कुंवारी लड़की और बेवा से निकाह करनें में यह फर्क़ है कि कुंवारी लड़की को जिस रंग में चाहो ले आओ लेकिन बेवा में अगले शौहर का असर होता है इसी तरह जो शख्स पहले किसी का मुरीद रह चुका हो उसमें अगले शेख का कुछ ना कुछ

असार जरूर रहता है।

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द)जि03,कि018,मल0543,स0059)

(15) याकूब नानोतवी कहते हैं दुनयादार का एतकाद ऐसा है जैसे गधे की फलाँ चीज बढ़ता है तो बढ़ता चला जाता है और घटता है तो घटता ही चला जाता है यहाँ तक कि नर व मादा का भी इमतियाज नहीं रहता (मनकूल अज़ थानवी) (नोट) गधे की फलाँ चीज से मुराद उसका अज़ू ए तनासुल है।

(हवाला:1 हसनुल अजीज जि03,कि0,14हिस्सा 3,स0,26)

(हवाला:2 अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द)जि02,कि07,मल0344,स0191)

(हवाला:3 मआरिफे याकूबी स0,83)

(16) बकौल थानवी:माँ के पेट से निकलने को कब जी चाहता था दाई ने टाँगें पकड़ कर जबर दस्ती खींच लिया।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द)जि01,कि05,मल01005,स0498)

(17) ज़ौकी उमूर के ज़िम्न में थानवी ने कहा कि कोई कितना ही बड़ा आलिम हो वह इन उमूर से ऐसा ही अजनबी है जैसे अैनिन(बमाना नामर्द)औरत की लज़्ज़त से अजनबी होता है।

(हवाला:1 हसनुल अजीज़ जि03,कि014हिस्सा 3,स0113)

(18) थानवी कहते हैं कि अैनिन (नामर्द)क्या जाने कि निकाह में किया मजा है और मन्कूहा कैसी काबिले क़द्र चीज़ है इसी तरह जिनकी बातनी आँखें पट हैं वह बातनी दौलत की हकीक़त किया समझें।

(हवाला:कमालाते अशरफिया(1995) बाब1,मल0104,स046)

(19) बकौल थानवी जिस को जवानी में लज़्ज़त हासिल हो चुकी हो बुढ़ापे में उसकी लज़्ज़त कम नहीं होती जैसे पुरानी जोरू में उन्स की ज़्यादती होती है।

(हवाला:कमालाते अशरफिया(1995) बाब1,मल0118,स049)

(20) थानवी कहते हैं बच्चों पर और औरतों पर सब आशिक़ होते हैं मगर बूढ़ों पर इश्क़ होते हुए उन्हीं हजरात में देखा ऊपर से अक़ली इश्क़ तो होता है मगर बहुत से हजरात को अपने मुर्शिद से तबई इश्क़ भी होता है। और ये तो मुशाहिद हैं फिर भी खुदा तआला से तबई मुहब्बत नहीं होती तो उस मुनकिर की मिसाल ऐसी है। जैसे अैनिन(ना मर्द) कहे कि औरत में लज़्ज़त नहीं।

(हवाला: हसनुल अजीज़ जि03,हि01,कि012,स0,203)

(21) बेवा से निकाह करना सुन्नत है ये कहने वाले को थानवी कहते हैं कि चाहे सुन्नत (अजूए तानासुल)ही के लिए करते हैं।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हि03,कि018,मल0509,स0159)

(22) थानवी कहते हैं कि फासिक़ फाजिर की शहवत कुछ आँख की राह से कुछ ख़्यालात की राह से निकल जाती है मुत्तक़ी का सब ज़ख़ीरा कोठरी में रहता है उन्हें कुव्वत ज़्यादा होती है लिहाजा औरतों को बुजुर्गों से बचाना चाहिये।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हिस्सा04,कि019,मल0623,स0,130)

(23) थानवी ने एक मोल्वी से सुरीन (चूतड़) का अरबी लफ़्ज़ पूछा मोल्वी साहिब ने कहा अरबी में सुरीन नहीं होता फिर उसकी अरबी कहाँ से हो।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि015,मल0377,स0146)

(24) थानवी का शरारती क़ौल कि इन्ज़ाल के वक़्त जबकी बीवी के सिवा और कोई चीज़ नज़र में नहीं उस वक़्त ख़ुदा को याद रखो।

(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) जि01,कि04, मल0949,स0474)

(25) मोल्वी अशरफ़ अली थानवी कहते हैं कि शौहर कि दस्तख़त न हो ऐसा किसी औरत का ख़त पढ़ना ऐसा है कि जैसे बिला शुबह शौहर की मौजूदगी में आस पास बैठकर उससे बातें करना

(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) जि04,कि024,मल0309,स0368)

(26) थानवी ने कहा कि औरत के इश्क़ में जुल्मत होती है और मर्द के इश्क़ में जुल्मत शदीद होती है औरत तो अमले तमत्तो हैं लेकिन हर अमले तमत्तो फितरतन हैं ही नहीं।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हि01,मल026,स026)

(27) थानवी का कहना है कि किसी हसीन औरत को देखकर बुरा ख़्याल आए तो बदसूरत का मुराक़ेबा करे वह ख़्याले बद जाता रहेगा।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हि01,मल029,स028)

(28) कम उम्र वाले से पर्दा करने पर थानवी ने कहा कि जब वह छोटासा (बच्चा)आ जाएगा तब मालूम होगा कि ये कैसा छोटा है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हि01,मल054,स041)

वफ़्क़ीहे तब्आए देवबंद

मोहतरम हज़रातः आपने फ़हश कलामी और उसी तरह की मिसालें पढ़लीं मनचले और आशिक़ मिज़ाज़ लोगों ने किस क़दर बेहयाई का मुज़ाहिरा किया है थानवी जी ने कभी बूढ़ों के इश्क़ का तज़किरा किया तो कभी बीवी के साथ इन्ज़ाल होने के फ़वाइद से आगाह फ़रमाते हैं तो दूसरी जानिब अपने मुरीदों और पैरु कारों को अपनी अपनी लड़कियों को बूढ़ों और बुजुर्गों से बचाने का पैग़ाम दे रहे हैं।

वह ज़बानें कितनी गलीज़ और कितनी शातिर व अय्यार रही होंगी जिसने फहश मिसालें इश्क़ि या जुमलों और नाज़ेबा कलेमात से मोतक़ेदीन को समझा कर उनके ज़ौक़े तबा का सामान फ़राहम किया है।

मुंदरजा बाला इबारात में कितने ख़ामोश इशारे पोशीदा हैं उसके इज़्हार की ज़रूरत नहीं, ताहम ये सवाल अपनी जगा बरक़रार है कि अगर मुरीदों की ज़बानें बे क़ाबू हो गईं थीं तो पीर को ज़रूर एहतियात करनी चाहिए हाला कि पीर व मुरीदीन और मोतक़िदीन किसी की ज़बान बे क़ाबू नहीं थी सिर्फ लज़्ज़ते नफ़्स का मुआमिला था वरना ये कहने की किया जरूरत थी कि बीवी को बग़ल में लेकर ख़ुदा का ज़िक्र करो क़सम ख़ुदा की लज़्ज़त आएगी एक ज़र्ब इधर हो एक ज़र्ब उधर। (मआजअल्लाह)

दर हक़ीक़त नजिस ख़मीर का नतीजा है रब तआला का इरशाद है। الخبيثت للخبيثين و الخبيثون للخبيثت و الطيبت للطيبين والطيبون للطيبت (तर्जुमा) गंदियाँ गंदों के लिए और गंदे गंदगियों के लिए और सुथरियाँ सुथरों के लिए और सुथरे सुथरियों के लिए

(कंजुल ईमान प0,18 अन्नूर, आयत 7)

मालूम हुवा कि ख़बीस लोग ख़बीस ख़स्लतें इख़तियार करते हैं और अच्छे लोग अच्छी खस्लतें इख़्तियार करते हैं यही वह अशरफ़ अली थानवी हैं जिन की तालीमात को आम किया जाता है जिनकी तसनीफ़ात को तक़सीम क्या जा रहा है। ईमान दारी से बताईये अगर गंदी इबारतों की जगा क़ुरआन व हदीस से मिसालें दी जातीं तो किया क़बाहत होती किया यह सब इस्लामी तालीमात के

मवाफ़िक हैं? है किया ख़िलाफ़े शरा अफ़आल सरज़द नही हुए? किया इसका इरतेकाब करने वाले मुजरिम नहीं हैं?
जरूर हैं। और ये सब बातें कुछ जिद्दत व बिदअत पसंद लोगों को इस तरह भागई हैं कि आज इस्तिआरा बन गई हैं।
सरकारे आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं:

नजदी तुझको उसने मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मुर्तद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की ﷺ

तवाइफ़ और अकाबेरीने देवबंद

(1) मेरठ में एक रेंडी का नानोतवी के पास अपनी लड़की के हमराह आकर कहना "कि मेरी छोकरी बीमार है और मेरी बसर औक़ात इसी पर है आप तावीज़ दो" नानोतवी ने उसको मकान की ऊपर वाली मंज़िल में ठैरे हुए मोल्वी याकूब नानोतवी के पास भेजा मोल्वी याकूब ने रेंडी को तावीज़ दिया और दुआ कर दी लड़की को आराम हो गया, रेंडी का धंदा शुरू हो गया तो रेंडी शुकरिया में मिठाई लाई और मोल्वी याकूब को देकर चली गई।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत 367 स0 339)
(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत 367 स0 322)
(हवाला:3 मआरिफ़े याकूबी स0 74)

(2) रेंडी के बनाए हुए कुंए का पानी पीना और वजू व गुस्ल करना दुरुस्त है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया स0 571)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया(पुरानी1363हि0)जि0,2 स0 98)

(3) थानवी के मामूँ से उनके पीर भाई ने कहा कि हमारे पीर साहिब के पास रात में रेंडियाँ आती हैं, मामूँ ने कहा अल्लाह आप को जज़ाए ख़ैर दे पीर साहिब ने निकाह नहीं किया था मुझे शुबा था कि ये अैनिन(ना मर्द) हैं और ये हज़रात वारिस होते हैं अंबिया के और अंबिया मर्दे कामिल होते हैं लेकिन पीर साहिब के मुतअल्लिक़ अैनिन होने का शुबा एक नक़्स था लेकिन आपके कहने के मुताबिक़ रेंडियाँ आती हैं तो मालूम हुवा कि पीर कामिल हैं आपने मेरे शुबा को रफ़ा कर दिया अब रहा ये कि रंडियाँ आती हैं ये एक गुनाह है तोबा

करके पाक व साफ हो जायेंगे।
(हवाला 1: अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,कि02, मल0437,स0220)
(हवाला 2: अलइफ़ाजातुल योमिया(थानाभवन)जि02,हि0,1कि042,मल0436,स0395)
(4) ज़ामिन अली जलाल आबादी जिन के मुतअल्लिक गंगोही ने कहा कि ज़ामिन अली की सहारनपुर की तमाम रेंडियाँ मुरीद थीं एक मर्तबा वह सहारनपुर में एक रेंडी के यहाँ ठहरे हुए थे सब मुरीदनियाँ मिलने आयीं लेकिन एक नहीं आयी फिर जब वह आयी तो पीर साहिब नें ना आने की वजह पूछी तो कहा रूसियाही की वजा से ज़्यारत को आते हुए शरमाती हूँ पीर नें कहा शरमाती क्यों हो करने वाला कौन और कराने वाला कौन वह तो वही है। रेंडी यह सुनकर आग हो गयी लाहौल पढ़ी और कहा मैं गुनहगार हूँ लेकिन ऐंसे पीर के मुंह पर पेशाब भी नहीं करती यह कह कर वह रेंडी उठकर चली गयी।
(हवाला1:तज़किरतुल रशीद जि02,स0242)
(हवाला2:अद्देवबंदिया(अरबी)स040)
(5) घिस्सन शाह को मिलनें थानवी तवाइफ के कोठे पर गये वहाँ जाकर मिठाई पेश करके दुआ की दरख्वास्त की।
(हवाला:अशरफुस्सवानेह जि01,स0120)
(6) थानवी नें किस्सा ब्यान किया कि सन्दीला नाम की बस्ती में कहेत के साल रेंडियों की दुआ के सबब बारिश हुयी।
(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया (देवबंद)जि03,क़िस्त14,मल0568,स0376)
(7) थानवी कहते हैं कि एक हसीन औरत का शौहर किसी बदसूरत रेंडी पर आशिक है उसकी बीवी नें ख़ादिमा के ज़रीए तहक़ीक़ की तो मालूम हुआ कि वह जब जाता है तो भड़वा कहकर जूते मारती है बीवी नें भी इसी तरह किया तो उसने रेंडी को छोड़ दिया।
(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया (देवबंद)जि03,कि013,मल0323,स0246)
(8) बक़ौल थानवी:"मोल्वी और रेंडी के मुलाज़िम बे फिक्र होते हैं क्योंकि हर दो फिरक़े मख़्दूम होते हैं दोनों के ख़ादिम बहुत होते हैं एक को काम कहो दस दौड़ते हैं बस मुलाज़िम नवाब बन जाते हैं।
(हवाला: हसनुल अजीज़ जि02,हि01,मल08,स0168)
(9) कश्फ़ क्या कसबी है पूछने वालों को थानवी ने कहा कि कस्बी(यानी रेंडी) तो फ़िर भी किसी की मतलूब है और अगर रेंडी से निकाह कर लो तो बे खतरा भी होगी लेकिन कश्फ तो निरा

तबल्ची और पुर ख़तर है कश्फ़े कसबी को थानवी ने रेंडी (कस्बी) पर इस्तिदलाल किया।
(हवाला:अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देबंद)जि03,कि014,मल0767 स0448)
(10) बकौल थानवी : "थानवी के भाई अकबर अली ने ट्रेन के सेकंड किलास में रेंडी के हमराह सफ़र क्या रेंडी अपने साथ खाना लाई थी वह अकबर अली ने खाया।
(हवाला:अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देबंद)हि03कि018,मल0597 स093)
(11) नये आने वालों के साथ थानवी जी जल्द तवज्जो नहीं करते थे इस की वजह बयान करते हुए मिसाल में थानवी ने कहा कि रेंन्डी और घिरस्तन में फ़र्क होता है रेन्डी दो चार रूपये में राज़ी हो जाएगी लेकिन घिरस्तन ज़रा मुश्किल से रज़ामंद होती है।
(हवाला:अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देबंद)जि03कि018,मल0619,स0110)

लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

अकाबरीने देवबंद जिस में ख़ास कर अशरफ़ अली थानवी को तवाइफ़ों से कैसा गहरा तअल्लुक़ और उन्स था ये वही लोग समझें जो उनके पैरु कार हैं हमें सिर्फ़ उनके कारनामों को अवाम तक पहूँचा कर अदालत में मुजरिमों को खड़ा करना है इस उम्मीद से कि आप का फ़ैसला हक़ बजानिब होगा।

आप गौर करें, एक शरीफ़ुन्नफ़्स और शरीफ़ुत्तबा इन्सान ऐसी बदनाम गुंज़र गाहों से गुज़रना भी तौहीन समझता है मगर आँ जनाब तवाइफ़ के कोठे पर जाकर दुआ की दरख़्वास्त कर रहे हैं रेंडियों का पेशा किया होता है उस को सभी लोग जानते हैं ,थानवी ने उन्हें मुस्तजाबुद्दावात साबित किया और कहते हैं उन की दुआओं से क़हेत साली का मोसम जाता रहा और उस इलाक़े में कसरत से बारिश हो गई।

पीर साहिब की मर्दाना कमज़ोरी का इलाज और उनके मरदे कामिल होने के शुब्हे को तवाइफ़ों की आमद पर महमूल किया जा रहा है और मुरीद कह रहा है ये गुनाह है लेकिन तोबा से पाक साफ़ हो जायेंगे।थान्वी के भाई अकबर अली रेन्डियों के साथ सफ़र के दौरान उन तवाइफ़ों का खाना भी साफ़ कर जाते हैं और ज़ामिन अली जलाला बादी तो शराफ़त की सारी हदों से तजावुज़ कर गए

जो तबलीग़ का तरीक़ ए कार बताया यक़ीनन उनकी कमीनगी और ख़्बासत की अलामत थी।

यह वह लोग हैं जिनकी तालीमात को आम किया जा राहा है और उनकी किताबों को घरों की अलमारियों में सजाने का पैग़ाम दिया जा राहा है यहाँ तक कि उन किताबों को लड़कियों को जहेज़ में देना और पढ़ने की तलक़ीन करना कारे सवाब बताया जा रहा है। होश के नाखून पैदा करो और उन बे लगाम और ग़लीज ज़बान इस्तिमाल करने वालों से पूछो ऐ ज़ालिम! अगर तेरी किताबों को दुख़्तराने इस्लाम पढ़ेंगी तो किया असर क़बूल करेंगी? लेकिन उन्होंने अपने घर की बहू बेटियों को भी तबलीग़ का तरीक़ ए कार वही बता रखा है जो किताबों में दर्ज है।

अगर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ ना लाते तो मिल्लत की दो शीज़ाओं का किया हाल होता किया लड़कियाँ ज़िन्दा ज़ेरे ज़मीन दफ़्न नहीं की जा रही थीं?किया औरतों के साथ वहशी जानवरों सा सुलूक रवा न था ? किया औरतें शौहरों की चिताओं पर ज़िन्दा ना जलाई जाती थीं ? किया औरतें नागिन ना कहलाती थीं ? किया लड़कियों का वजूद मन्हूस ना था? ज़रूर था ये सदक़ा और करम है ताजदारे दो आलम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम का आज वहाबी देवबंदी हज़रात के घरकी औरतें चली है तबलीग़ करने जिसके पीछे रसूल दुशमनी कार फ़रमा होती है, तबलीग़ी निसाब, फ़ज़ाइले आमाल, बहिश्ती ज़ेवर घरों में पढ़कर सादा लौह ख़्वातीन को गुमराह करती हैं और तेज़ी के साथ अक़ाइद को बिगाड़ कर वहाबियत के रंग में रंगने की कोशिश कर रही हैं लेकिन फ़ज़ाइले आक़ाइद से नाबलद हैं। जबकि अक़ीदे के बगैर ईमान नहीं। अक़ीदा अस्ल है पहले ज़हेन व फिक्र और क़ल्ब व जिगर की तत्हीर होनी चाहिये बादुहू हुब्बे रसूल की नग़मा सराई,फिर दर्स व तदरीस का अनोखा तरीक़ा आज़माना चाहिये मगर ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जब अक़ीदा सही हो जाएगा तो देवबंदियत का माजून बेअसर हो जाएगा और वहाबियत का चोखा रंग फ़ीका पड़ जायेगा और शोब्दा बाज़ अपना

कमाल दिखाने से क़ासिर हो जायेंगे यहाँ तक कि मौदूदियत का जादूई चराग़ बुझकर मुहब्बते रसूल की शमा जल उठेगी फिर सहीहुल अक़ीदा आला हज़रत की ज़बान में पुकार उठेंगे।

गैज़ मे जलजायें बेदीनो के दिल।
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिए

तबर्रुकात

(1) जुब्बा शरीफ़ और मूए मुबारका सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि ज़ियारत और बुज़ुरगाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत के मुतअल्लिक़ थानवी की ख़ब्तुल हवासी मुलाहिज़ा फ़रमाइये कि: "अव्वल तो उन तबर्रुकात की कोई सनद नहीं और अगर सनद हो जब भी जमा होने में बहुत ख़राबियाँ हैं।

(हवाला: बहिश्ती ज़ेवर जिल्द 6 स0, 387)

(2) थानवी कहते हैं कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात के साथ शग़फ़ नहीं मसलन कुर्ता वग़ैरा ये ख़्याल होता है कि इसमें किया रखा है।

(हवाला:1 कमालाते अशरफ़िया(1995ई0) बाब1,मल01004,स0251)
(हवाला:2 हसनुल अज़ीज जि01,हि04,कि019,मल0634,स0147)

(3) थानवी का कहना है कि लोगों ने आज कल तबर्रुकात के मुतअल्लिक़ एतेक़ाद व अमल में जो गुलू कर रखा है उसको मैं नाजाइज़ समझता हूँ।

(हवाला अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द,2 स0, 302)

(4) मोल्वी इसमाईल देहलवी अपने पीर सय्यद अहमद राय बरेलवी की जूतियाँ ताज़ीम के लिए अपने साथ रखते थे।

(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि01,कि01,मल0164,स0103)

(5) मोल्वी इसमाईल देहलवी अपने पीर के घोड़े का अदब इस तरह करते थे कि लखनऊ से देहली तक घोड़े की लगाम थाम कर पैदल चले आये और घोड़े पर सवारी ना की।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत,77 स0,117)
(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत,77 स0,98)

(6) बक़ौल मोल्वी रशीद अहमद गंगोही जब मैं इबतिदा अन ख़ानिक़ाहे गंगोह में आया तो ख़ानिक़ाह में बोल व बाराज़ (पाख़ाना पेशाब) ना करता था बल्कि बाहर जंगल जाता था (ख़ानिक़ाह के आदाब को मल्हूज़ रखते हुए)

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत,304 स0,306)
(हवाला:2 अरवाहेसलासा हिकायत,304 स0,388)
(7) गंगोही ने अपने पीर का कुर्ता आँखों से लगाया और सर पर रखा फिर हाज़ेरीन के सरों पर यके बाद दीगरे रखा, कहा पीर का तबर्रुक है।
(हवाला:तजकिरतुल रशीद जिल्द,2 स0,167)
(8) तीन साल तक मर्ज़े इरहाल(दस्त) की मरीजा यानी तबलीगी जामाअत के बानी मोल्वी इल्यास की नानी उनके पाखाना और निजासत से आलूदा कपड़ों में बदबू की जगा खुश्बू और निराली महक थी कि एक दूसरे को सुँघाता था, हर मर्द व औरत तअज्जुब करता था चुनाँचे बग़ैर धुल्वाये उन को तबर्रुक बनाकर रख लिया गया।
(हवाला:1 तज़किरतुल ख़लील (मेरठ)स0,50)
(हवाला:2 तज़किरतुल ख़लील (सहारनपुर)स0,79 बारे अव्वल,1395हि0)
(हवाला:3 तज़किरतुल ख़लील (सहारनपुर)स0,96 बारे दोम,1411हि0)
(9) मोल्वी अहमद हुसैन अमरोही के यहाँ थानवी महमान बनकर गए रात में थानवी को बड़े इस्तिंजा की हाजत हुई। जनाना मकान के बैतुल ख़ला में मोल्वी अहमद हुसैन ने इस्तिंजा के ढेले और पानी रख दिया थानवी ने कहा ये तो आबे ज़म ज़म है अब इस्तिंजा काहे से करूँ। (हवाला:1 कमालाते अशरफिया (1995)बाब,2 मल0, 96स0,342)
(हवाला:2 हसनुल अज़ीज जि02,हि02, किस्त16,मल0,709 स0,84)
(10) बैतुल खला में मोल्वी अहमद हुसैन अमरोही के हाथों से रखे हुए इस्तिंजा के ढेले के लिए थानवी नें कहा कि यह ढेले तो तबर्रुक हो गए अब इस्तिंजा काहे से क्या जावे।
(हवाला: अशरफुस्सुवानेह जि01,स0157)
(11) थानवी कहते हैं कि तबर्रुकात में असर के मुतअल्लिक मुझे शुबा था लेकिन केराना के एक बुजुर्ग नें मुझको एक चोगा भेजा जिसको रात को तबर्रुकन पहना था जबतक चोगा बदन पर होता गुनाह का वस्वसा ना आता था।
(हवाला:1 हसनुल अजीज जि04,हि01, क़िस्त10, स0203)
(हवाला:2 हसनुल अजीज जि03, हि01, क़िस्त12,स062)
(12) थानवी को उन के मुरीद हाजी अब्दुल रशीद ने एक चोगा

भेजा बकौल थानवी जबतक उसे पहने रहता गुनाह का वस्वसा तक भी नहीं आता कई मर्तबा आजमाया है ऐसे मुरीद कि वजह से निजात हो गई। (हवाला:1 हसनुल अजीज़ जि0,1 हि0,2 कि0,17 मल0,185)

(13) बुजुर्ग का जहाँ हाथ लगाहो वही तबर्रुक है थानवी का फिर कहना अजी खाना खुद तबर्रुक है ना मिलता हो उसको पूछो कैसा तबर्रुक है।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जि0,1 हिस्सा,2 कि0,17 मल0,317 स0,291)

(14) अपनी चीज़ को तबर्रुकन देना हराम है।

(हवाला:1 अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) जि0,4कि0,23 मल0,242स0271)

(15) थानवी अपने पुराने कुरते क़ता करवाकर छोटे बच्चों के लिए चंद छोटे छोटे कुरते बतौरे तबर्रुक देने के लिए रखते थे ताकि तबर्रुक की दरख्वास्त परं फ़ौरन निकाल कर दिया जा सके।

(हवाला:1 अशरफुस्सवानेह जि0,2स0303)

(16) थानवी जी अपने जूते को बतौरे तबर्रुक देते वक़्त जूते को धोकर और पाक व साफ़ करके देते थे।

(हवाला: अशरफुस्सवानेह जि0,3 स0,8)

(17) थानवी ने एक शख़्स को अपना इस्तिमाल करदा कुरता ये कह कर दिया कि बतौर यादगार मुहब्बत अपने पास रखिये इसपर थानवी से कहा गया कि वोह तो इस को तबर्रुक समझेंगे जवाब में कहा कि वह जो कुछ चाहें समझें।

(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) जि0,4कि0,23 मल0,242स0271)

(18) एक शख़्स ने थानवी से बतौरे तबर्रुक कुरता मंगवाया, थानवी ने उस को खत लिखकर कहा कि दो आना का टिकिट में वहाँ पहुंच सकता हे अगर मंगवाना हो दो आना के टिकिट भेज दो चुनाँचे उस शख़्स ने थानवी को टिकिट भेज दिये. इस ज़िम्न में एक शख़्स को हाज़िरीन में से कहा कि अच्छा तरीका तो ये है कि खुद कोई चीज़ लाकर दे दे. दो चार रोज़ इस्तेमाल करा के बतौरे तबर्रुकलेले (हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि01,हि03,कि018,मल0497,स0148)

(19)एक शख़्स ने अपनी तसबीह बनियते तबर्रुक थानवी को पढ़ने के लिये दी थानवी ने कहा कि ये अच्छी तदबीर है तबर्रुक बनाने कि।

(हवाला: अलइफाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि0,1 कि0,1 मल0,161 स0,99)

(20) थानवी की मौजूदगी में लोगों ने हाजी इमदादुल्लाह की

चादर को बतौरे तबर्रुक चूमा और आँखों से लगाया थानवी ने कहा कि मना करने को दिल गवारा नहीं करता कि मेरे पीर का मल्बूस है किस दिल से कुछ कहूँ।

(हवाला:1 हसनुल अजीज जि0,2 हि0,1 मल0,48 स0,192)

(21) थानवी कहते हैं कि मेरे सामने हज़रत गंगोही का दिया हुवा अमामा एक शख्स ने हाजी इमदादुल्लाह की खिदमत में पेश किया तो हज़रत हाजी साहिब ने उसको आँखों से लगाया, सर पर रखा और फ़रमाया कि मौलाना का तबर्रुक है।

(हवाला: अलकलामुल हसन मल0,190 स0,90)

(22) मोल्वी अबुन्नसर के लिए गंगोही का पाखाना संदल और पेशाब गुलाब था।

(हवाला:1 तज़किरतुल रशीद जि0,1 स0,209)

(23) तबर्रुक के मुतअल्लिक़ थानवी कहते हैं कि कोई कहाँ तक तक़सीम करे उम्दा तरकीब ये है कि जो चीज़ तबर्रुकन लेनी हो वह लाकर देदे और फिर बादे इस्तिमाल लेले।

(हवाला:1 हसनुल अजीज़ जि0,4 हि0,1कि0 10, स0,203)

(24) थानवी का कहना है कि अगर हाथ चूमना बरकत के लिए है तो कोठरी में बंद करके सारा बदन थूक वग़ैरा चाटो ताकि खूब बरकत हासिल हो।

(हवाला:1 हसनुल अजीज़ जि03,हि01,कि012,स0,62)

(25) रशीद अहमद गंगो ही ने एक मर्तबा मोल्वी इसमाईल को मदीना तय्यबा की मिट्टी खाने के लिए दी मोल्वी इसमाईल ने कहा कि हज़रत मिट्टी खाना तो हराम है इस पर गंगोही ने कहा यहाँ वह मिट्टी और होगी।

(हवाला:1 तज़किरतुल रशीद जि0,2 स0,48)

(26) रशीद अहमद गंगो ही ने मोल्वी इसमाईल को मोम बत्ती का एक टुकड़ा और एक मर्तबा गिलाफ़े काबा के रेशम का एक तार दिया और कहा इस को खालो।

(हवाला:1 तज़किरतुल रशीद जि0,2 स0,49)

(27) बीमार मोल्वी अहमद अली ने गंगो ही के ख़ादिम से कहा कि गंगोही का बचा हुवा खाना मुझको देना शिफ़ा होगी।

(हवाला: हसनुल अजीज़ जि02,हि02,कि015,मल0360,स0139)

(28) दारुल उलूम देवबंद के मोहतमिम से थानवी मिलने आते हैं यक्के के किराए के पैसे देने के लिए थानवी ने अपने ख़ादिम नियाज़ को कहा इस पर मोहतमिम ने थानवी को कहा कि वह पैसे मुझे दे दीजिये ताकि तबरुकन मैं उन्हें अपने पास रख लूँ। चुनाँचे किराए के पैसे थानवी ने मोहतमिम को दिये मुहतमिम ने यक्के वाले को किराया अपनी जेब के पैसे से दिया और थानवी के दिये हुए पैसे को अपने पास तबरुकन रखा।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि015,मल0123,स015)

(29) मोल्वी मुज़फ्फर हुसैन काँधलवी की लुंगी बतौरे तबरुक मुरीदीन में तक़सीम की गई।

(हवाला: 1 हिकायातुल औलिया हिकायत न0,201 स0,222)
(हवाला:2 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर) बारे दोम 1411हि0 स0,102)
(हवाला:3 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर) बारे अव्वल 1395 हि0 स0,85)
(हवाला:4 अरवाहे सलासा हिकायत 201स0,201)

नजिस तबीअतें

न तुम सदमें हमैं देते न हम फ़रयाद यूँ करते
न खुलते राज़ सरबस्ता न यूँ रुस्वाईयाँ होतीं।

क़ारिईने किराम! पढ़लिया आपंने देवबंदी बुर्जुगों के तबरुकात और उनके इस्तेमाल का तज़किरा किसी की लुंगी तबरुक बनाकर तक़सीम हो रही है तो किसी के पाख़ाना व पेशाब को(मआज़ल्लाह) संदल व गुलाब से तशबीह दी जा रही है। यहाँ तक कि इसमाईल देहलवी अपने पीर सय्यद अहमद राये बरेल्वी की जूतियाँ अपने साथ हर वक़्त हुसूले बर्कत के लिए रखते थे। पढ़ते जाईये और हँस्ते जाईये । अब फ़ैसला आपको क़रना है कि जो लोग तबरुकात को र्शिक व बिदअत क़रार दे रहे हैं वही लोग बहुस्न व ख़ूबी बकौले खुद शिर्क व बिदअत जैसे जुर्म का इरतिकाब कर रहे हैं उनके यहाँ तबरुकात चाहे अंबिया अलैहिमुस्सलाम के हों या किसी बुजुर्ग के हों सबके सब बिदअत व नाजाइज़ उमूर में दाख़िल हैं और उनसे इस्तिफ़ादा करना गुमराही की अलामत। मगर ये लोग अपने बुजुर्गों के पाख़ाना पेशाब जैसी ग़लाज़त को तबरुक समझ रहे हैं

जैसा कि मोल्वी इल्यास की नानी का वाकेआ गुज़रा कि पाख़ाना और निजासत से भरपूर कपड़ों में बकौल उनके खुशबू और निराली महक आ रही थी और वहाबी धर्म के लोग यके बाद दीगरे सूंघ सूंघ कर मशामे जाँ को मोअत्तर कर रहे थे इस ग़लाज़त आलूद पैराहन की खुशबू से दिल व दिमाग के लिए सुकून राहत व क़रार फरहत व इंबिसात बता रहे थे। और बग़ैर धुलवाए बतौरे तबर्रुक महफ़ूज़ भी कर लेते हैं।

पाख़ाना और पेशाब वाले कपड़े से खुशबू महसूस करने वालों के गुरू मोल्वी अशरफ़ अली थानवी कहते हैं कि जुब्बा व अमामा शरीफ या मूए मुबारका सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ियारत हो या दीगर तबर्रुकाते औलियाए किराम हों उन सबके तअल्लुक़ से कोई सनद नहीं और उनके जमा होने में बहुत सी ख़राबियाँ हैं इन अक़्ल के अंधों को नानी के पाख़ाना और पेशाब जैसी नजासत में ख़राबियाँ नज़र ना आईं नए नए फितनों के जन्म दाता तबर्रुकात से पैदा होने वाली ख़राबियों की निशान्दही वाज़ेह तौर पर न कर सके ताकि लोग इस गुनाह और बिदअत से महफ़ूज़ रहते।

ज़हेर अफ़शानी, इफतिराक़ व इन्तेशार के अलावा और किया कहा जा सकता है उन तबर्रुकात की अज़मत व तक़दीस और उनसे इआनत का चिराग़ फूँक मारने से क़तअन नहीं बुझ सकता। बिदअत की हक़ीक़त व माहियत समझे बग़ैर हर बिदअत को बिदअते सय्या से ताबीर करना इन्तेहाई दरजे की जिहालत है। तबर्रुकात तक़सीम करना खुद शारऐ इस्लाम अलैहिस्सलाम की पाकीज़ा सुन्नत है जुमला आसार व तबर्रुकात में से आप के मूए मुबारक शरीफ को बड़ी फज़ीलत और अहमियत हासिल है। शायद अर्ज़े गीती का कोई इलाक़ा कोई ख़ित्ता ऐसा हो जहाँ मुसलमानों की आबादी हो और मूए मुबारक न हो, अहले ईमान के कुलूब में इस की बड़ी अज़मत है। जो यक़ीनन आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुहब्बत की

शनाख़्त और दलील है।

हज़रते अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज्जाम को बुलाकर सरे मुबारका के दाहनी जानिब बाल उतार ने का हुक्म दिया फिर हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहो तआला अन्हु को बुलाकर वह सब बाल शरीफ़ उनको अता फरमा दिये उसके बाद बायें तरफ़ के बालों को मूंडने का हुक्म दिया हज्जाम ने बाल शरीफ़ उतारे पस वह हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हु अबू तल्हा को दे दिये और फ़रमाया ये लोगों में तक़सीम कर दो। अब आप ही बताईये कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का भेजा हुवा तबर्रुक दुनिया का कौनसा मुसलमान है जो सीने से ना लगाएगा यही वजह है कि आशिक़ाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस अज़ीम तबर्रुक को हिरज़े जाँ बनाकर रखा और इमामे ईश्क़ व मुहब्बत सय्यदुना आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं ।

जो सर पे रखने को मिलजाए नाले पाके हुज़ूर
तो फिर कहेंगे कि हाँ ताजदार हम भी हैं।

ईमान में मज़ीद पुख़्तगी के लिए एक हदीस और पढ़िए हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बकर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से मरवी है उन्हों ने (हज़रते अस्मा ने) एक ऊनी जुब्बा केसर वानी साख़्त का निकाला जिसकी पलेट रेश्मी थी और दोनों चाकों पर रेशम का काम था। अर्ज़ किया ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का जुब्बा है जो हज़रते आयेशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के पास था उनके इन्तेक़ाल के बाद मैंने लिया सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इसे ज़ेब तन फ़रमाते थे। हम इसे धो धो कर बीमारों को पिलाती हैं और इससे शिफ़ा तलब करती हैं मुंकिरीने आसारे मुबारका बतायें हज़रते अस्मा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के इस फ़ेले मुबारक पर उनका किया फ़त्वा है जबकि हदीसे मज़कूर बुज़ुर्गों के तबर्रुकात से हुसूले बरकात की बय्यिन दलील है। रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मलबूसे मुबारक धोकर मरीज़ों को पिलाना और उसके तवस्सुल से शिफ़ा तलब करना उन पाक बाज़

ख़्वातीन का तरीक़ए कार था जिनके लैल व नहार शब व रोज का लम्हा लम्हा वही ए इलाही की छाओं में गुज़रते थे। इसी हदीसे पाक की शरह में इमाम नोदी अलैहिर्रहमा फरमाते है।

دليل على استحباب التبرك باثار الصالحين و ثيابهم

(शरेह मुस्लिम लिन्नवी जि02,स0191,बहवाला माहनामा अशरफिया जून 1976 स0.17)

इस हदीस में सालेहीन के आसार और उनके मलबूसात पे हुसूले बर्कत के मुस्तहब होने का सुबूत है।

इश्क़े रसूल की वादियों में जीवन बिताने वाले हज़रते ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हु की दास्ताने इश्क़ पढ़िए :

हज़रते ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो अन्हो की तलवारों में से एक तलवार थे। मैदाने जंग में हमेशा अपनी टोपी सरपर रखते थे एक मर्तबा जंगे यरमूक में घमसान की जंग हो रही थी नेज़ों की बौछार थी आपकी टोपी गुम हो गई लड़ाई छोड़कर उसकी तलाश में दीवाना वार मुनहमिक हो जाते हैं लोगों ने देखा कि तीर बरस रहै हैं तलवारें और नेज़े अपना अपना काम कर रहे हैं मौत सामने खड़ी है मगर जनाब ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हु टोपी की तलाश में सरगरदाँ और परेशान हैं आख़िर कार टोपी मिल जाती है तो खुशियों से बाछें खिल जाती हैं और फ़खरिया अंदाज़ में फ़रमाते हैं कि भाईयो! मुझे ये टोपी क्यों इतनी अज़ीज़ है जानलो कि मैंने आज तक जितनी जंगें जीती हैं इसी टोपी के तुफ़ैल में, सब इसकी बरकतें हैं क्योंकि मैंने इस टोपी में रहमते दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाले मुबारक सी रखे हैं।

हज़रात! ग़ौर कीजिए हज़रत ख़ालिद वह सिहाबी हैं जिनकी पूरी ज़िंदगी मैदाने जंग में कुफ़्फार व मुशरिकीन से लड़ते हुए गुज़री है अगर तबर्रुकात की सनद ना होती और उससे फ़वाईद हासिल करना बिदअत होता तो आप हरगिज़ ऐसा न करते। सावन के अंधों से मेरा सवाल है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और दीगर सिहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के तअल्लुक़ से किया राये क़ायम करते हैं मेरे सरकार आला हजरत रहमतुल्लाह अलैह

फ़रमाते हैं। सुन्नियो उन से मदद माँगे जाओ
पड़े बकते रहें बकने वाले।

मज़ारात पर हाज़री

(1) अंबिया व औलिया के मज़ारात का क़स्द करके जाने के तअल्लुक़ से मोल्वी इसमाईल देहलवी ने अपनी खुबासत का इज़हार इस तरह किया है।

"फिर जो कोई किसी पीर व पैगम्बर या भूत परी को या किसी सच्ची या झूटी क़ब्र या किसी थान या किसी जगह या किसी मकान या तबर्रुक या निशान या ऐसे मकानों का दूर से क़स्द करके जाए तो उसपर शिर्क साबित होता है"
(हवाला:1 तक़वियतुल ईमान (दारुस्सलफिया मुंबई) स0,24)
(हवाला:2 तक़वियतुल ईमान (कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली) स0,21)

(2) सवाल: मेला हुनूद व उर्स मुसलमान में जैसा हरीद्वार और पीराने कल्यर व अजमेर वासते सौदागरी या ख़रीदने किसी शए ज़रूरत के ख़ास व आम को जाना कैसा है ?

जवाब: मेलों में हुनूद व मुस्लमानों के जाना तिजारत के वास्ते भी हराम है।"

(हवाला: फतावा रशीदया (जदीद) स0,556)

(3) बक़ौल रशीद अहमद गंगोही:

" क़ुबूरे बुज़ुर्गान की ज़ियारत को सफ़र करके जाना मुख़्तलिफ फ़ीह है बाज़ उलमा दुरुस्त लिखते हैं और बाज़ मना करते हैं ये मसला मुख़्तलिफ़ है इसमें नज़ा व तकरार नहीं चाहिए मगर हाँ उर्स के दिन ज़ियारत को जाना हराम है।

(हवाला: फतावा रशीदया (जदीद) स0,555)

(4) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही से एक दिन एक शख़्स ने ज़ियारते क़ुबूर के लिए हुक्म दरयाफ़्त किया कि जाइज़ या नाजाइज़ गंगोही ने कहा कि इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है बंदा फ़ैसला नहीं कर सकता।

(हवाला: तज़किरतुल रशीद जि02,स0,286)

(5) देवबंद में मोल्वी कासिम नानोतवी की क़ब्र के मुतअल्लिक ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने कहा कि बड़ी बरकत की जगह होगी मैं वहाँ ज़रूर जाऊंगा उस पर थानवी ने कहा हाँ किया हरज है।

(हवाला: हसनुल अजीज जि04,हि02,कि011,स0110)

(6) थानवी कहते हैं कि अपने सिलसिले के बुज़ुर्गों के मज़ार पर बड़ा फैज़ होता है।

(हवाला: हसनुल अजीज़ जि04,हि01,कि010,स0,107)

(7) थानवी साहिब अजमेर जाते हैं वहाँ की कैफियत यूँ ब्यान करते हैं कि मालूम होता था कि तमाम शहेर पर अनवार बरस्ते थे।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि04,हि010,स0106)

(8) बक़ौल थानवी कभी कभी क़ब्र से फ़ैज़ हासिल करके लोग बुज़ुर्ग होगए।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि02,हि0 3,कि016,मल0591,स0,34)

(9) झुंनझाना में थानवी अपने दादा पीर मियाँ जी के और सय्यद शाह महमूद के मज़ार पर रोज़ाना हाज़री देते मियाँ जी के दाहिने पहलू पर एक पुख़्ता क़ब्र के सिरहाने रूमाल बिछाकर उस पर बैठकर थानवी मुराक़ेबा करते और कहते कि सुकून की कैफियत पैदा हो जाती है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1 हि02 कि0 17 मल0,299 स0,882)

(10) थानवी का अजमेर शरीफ़ ज़ियारत की ग़रज़ से जाना और कहना कि वहाँ तमाम शहेर में वहाँ की ज़मीन व आसमान में रौनक़ है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1 हि0 3 कि0 18 मल0,469स0,458)

(11) थानवी कहते हैं कि शाह विलायत के उर्स में हर साल सूफियों के लिए वालिद साहिब देग भेजा करते थे वालिद साहिब की वफात के एक साल बाद जब मैं यहाँ आया तो मैंने मौक़ूफ किया कि ये वाहीयात है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1 हि0 3 कि0 18 मल0, 542 स0,203)

(12) थानवी का इसतिदलाल मुलाहिज़ा हो कि उर्सों की तरफ़ रेन्डी भड़वों को ज़्यादा मैलान होता है इसलिए ज़ाहिर है कि वह

अम्र बुरा है वरना नेक लोग क्यों मुतवज्जे नहीं होते।
(हवाला: हसनुल अजीज जि0,1 हिस्सा 3 किस्त 18 मल0, 488 स0,138)

मुनाफ़िक़ते देवबंदियत

मोहतरम हजरात! मज़कूरा बाला इबारात पढ़ने के बाद आप बातिल अकाइद के लोगों की ज़हनी अय्यारी ज़रूर महसूस किये होंगे ऐहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब ये है कि अंबिया व औलिया के मज़ारात व मक़ाबिर पर हाज़री के लिए सफ़र करना और इकतिसाबे फ़ैज़ के लिए हाज़िर होना जाइज़ व मुस्तहसन है सहाब ए किराम के ज़माने से लेकर आजतक तमाम मुसलमानों का इस पर अमल रहा है।

अहादीस और बुज़र्गों की किताबों से साबित है हदीस शरीफ़ में है कि हज़रते कअब हज़रते आइशा रज़ियल्लाहो अन्हो के यहाँ हाज़िर हुए तो हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का ज़िक्र हुवा आपंने कहा कि सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की क़बरे अनवर पर 70 हज़ार फरिश्ते सुबहो शाम हाज़िर होकर रौज़ ए अनवर का तवाफ़ करते हैं अब आप बताईये अगर ज़ियारत के लिए सफ़र करना बिद्अत और हराम होता तो अल्लाह के नूरानी मासूम फ़रिश्ते करोड़ों मील का सफर तै करके क्यों हाज़िर होते देवबंदी वहाबी हज़रात के नज़दीक महबूबाने बारगाहे इलाही के मज़ारात पर हाज़री देना शिर्क है जैसा कि रुस्वाए ज़माना किताब तक़वीयतुल ईमान में मोल्वी इंसमाईल देहलवी ने लिखा है किसी क़ब्र पर दूर दूर से सफ़र की रंज व तकलीफ़ उठा कर पहुँचना और उसके गिर्द व पेश के जंगल का अदब करना और उनसे कुछ दीन व दुनिया के फ़ायेदे की उम्मीद रखना शिर्क है।एक ही सिक्के के दो पैहलू।

एक तरफ़ शिर्क बताया जा रहा है मगर दूसरी जानिब उसी शिर्क को बड़ी खूबसूरती के सा थ अपनाया जा रहा है जबकि मुंदरजा

बाला इबारतों से ज़ाहिर हुवा कि हाज़री के साथ साथ उसके फ़वाइद से भी आगाह किया जा रहा है अशरफ़ अली थानवी कहते हैं कि कभी कभी क़ब्र से फ़ैज़ हासिल करके लोग बुज़ुर्ग हो गए हैं. कासिम नानोतवी की क़ब्र को ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन बड़ी बरकत की जगह कह रहे हैं और दूसरी तरफ़ थानवी जी आइने में अपनी शक्ल देख कर कह देते हैं कि वहाँ भड़वों और तवाइफ़ों का ज़्यादा मैलान होता है अलअमान वलहफ़ीज़ उलमाए देवबंद के दोनों रुख़ मुलाहिज़ा फ़रमाने के बाद फ़ैसला आप पर है कि एक जगह जो चीज़ शिर्क व हराम है वही शिर्क दूसरी जगाह जाइज़ व मुस्तहसन कैसे? दोनों रुख़ों के तअल्लुक़ से जो इबारतें मौजूद हैं उससे नतीजा यही निकलता है कि देवबंदी मज़हब तज़ाद व फ़साद का मजमुआ है हज़रत सय्यदुना अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूले कौनैन सल्ललाहो अलैहे वसल्लम अपनी वालिदा माजिदा सय्यदा आमिना रज़ियल्लाहो अन्हा की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और वहाँ जाकर ख़ुद भी रोए और साथियों को भी रुलाया हज़रत मोहम्मद बिन नोमान रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम सल्ललालोहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स जुमा के रोज़ अपने वालिदैन की या उनमे से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत करे तो उसकी मग़फ़िरत करदी जाती है और उस शख़्स का नाम नेको कारों की फ़ेहरिस्त में शामिल कर लिया जाता है । (मिशकात शरीफ़ बाबे ज़ियारतुल क़ुबूर)

सरवरे दो जहाँ राहते इन्स व जाँ सल्लल्लोहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं जो शख़्स मेरी ज़ियारत को आए और ज़ियारत के अेलावा उसकी दूसरी नियत न हो तो मुझ पर हक़ हो गया कि उसकी शफ़ाअत करूँ ज़ियारते क़ुबूर को जाइज़ बताने वालों को बिदअती मुशरिक रज़ाख़ानी क़ब्र परस्त कहने वाले बग़ौर मुताला करें मेरे सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ऐसे शख़्स को

शफ़ाअत की ज़मानत दे रहे हैं और बादे वफ़ात ज़िंदगी का सुबूत भी हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो अन्हो की क़ब्र पर हाज़री दी है बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने औलियाए किराम के अेरास के मौक़ों पर हाज़िर होकर रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात हासिल किए हैं

हसनुल अज़ीज़, फ़तावा रशीदिया की इबारतों से वाज़ेह होता है कि उन लोगों के कुलूब मुहब्बत व ईमान से यक्सर ख़ाली थे वरना ऐसा न कहते और ना मुत्तबिईन को हुक्म देते। बुज़ुर्गाने दीन का उर्स मनाना तमाम उम्मत का मामूल रहा है और सालिहीन का तरीक़ए कार रहा है और यही हक़ और मुस्तहसन है इस के खिलाफ कहने और लिखने वाले सबके सब गुमराह, बद्दीन, मुर्तद हैं खुवाह अकाबिर हों या असागिर। बरेली के ताजदार सरकार आला हज़रत रहमतुल्ला अलैह फरमाते हैं

जो तेरे दर से यार फिरते हैं।
दर बदर यूँ ही ख़्वार फिरते हैं

कव्वा खाने का जवाज़

(1) जिस जगह ज़ागे मारुफा को अकसर हराम जानते हों और खाने को बुरा जानते हों तो ऐसी जगह उस कव्वा के खाने वाले को सवाब होगा। (हवाला1:फतावा रशीदिया (मुबव्वब)1987ई0स0597)
(हवाला2:फतावां रशीदिया (क़दीम)1363हि0 जि02,स0130)

(2) गंगोही की महफिल में एक शख़्स ने कहा की कव्वे गल्ले को बहुत नुक़सान पहुँचाते हैं इसपर गंगोही नें कहा की हाँ खाना शुरु कर दो तो कम हों।
(हवाला: तज़किरतुल रशीद जि02,स0177)

(3) गंगोही से पूछा गया की यह देसी कव्वा उमूमन बस्तियों में पाया जाता है वह हलाल है या हराम जवाब में गंगोही नें यह कहा की यह कव्वा जो इन बस्तियों में पाया जाता है इसके हलाल होनें में शुबा नहीं बल्कि अगर तहक़ीक़ ना भी होतो भी इसकी हिल्लत में शुबा नही (हवाला:तज़किरतुल रशीद जि01,स0178)

(4) जिस जमानें में कव्वा खाने के मसाले का शोर व गुल था, थानवी से एक शख़्स नें पूछा कि क्या कव्वा खाना जाइज़ है, थानवी ने साइल से पूछा कि क्या खाओगें? उसने कहा कि नहीं तो, कहा कि जब खाओगे नहीं तो पूछते क्यों हो न तुम को पूछना फर्ज है और न मुझको बताना फर्ज़ है।

(हवाला1: अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द) जि01,कि03,मल0673,स0337)
(हवाला2: आदाबे इफता व इस्तिफता स052)

(5) थानवी से एक शख़्स नें पूछा कि कव्वे की कै किस्में हैं?थानवी ने कहा कि मुझको मालूम नहीं अगर आप फरमायें तो आदमी की किस्में ब्यान करुँ और यह भी अर्ज करदूँ कि आप कौनसी किस्म में दाखिल हैं।

(हवाला:मजीदुलमजीद मल010,स06)

(6) कव्वे की हिल्लत के फ़तवे में गंगोही ने बहुत बड़े अज्र की उम्मीद की जिसका अंदाज़ा आप खुद लगाइये हक़गोई में आप किसी मलामत का अंदेशा नहीं फ़रमाते थे बल्कि अगर हक़ गोई पर लोग आपको बुरा कहते थे तो उस पर निहायत फरहत व सुरूर होता था आपने देसी कव्वे की हिल्लत का फ़तवा दिया उस पर जोहला में शोर व ग़ोग़ो उठा है तो आपने फ़रमाया कि मुझको किया ख़बर थी कि इस में हक़ तआला ने इस क़दर अज्र रखा था।

(हवाला:तज़किरतुल रशीद जिल्द 2,स0,64)

उम्र भर शौक़ से खाते रहे काला कव्वा
हमने मुर्ग़ा जो खिलाया तो बुरा मान गए

नऊज़ू बिल्लाहे मिनज़ालिक : ये धरम है तौहीद के अलमबरदारों और पुजारियों का जिनके यहाँ हराम चीज़ भी हलाल है और हलाल चीज़ हराम है मोहर्रम की सबीलें और मोहर्रम का खिचड़ा नाजाइज़, शबे बरात का हल्वा ना जाइज़, फ़ातिहा जिस खाने पर पढ़ दिया जाए वह खाना हराम,महाफ़िले मीलाद के तबर्रुकात, शीरीनी सब हराम व नाजाइज़ है। कहते हैं दिल सियाह होजा ता है मगर कव्वा खाने से बक़ौले अकाबिरे देवबंद दिल रोशन और मुनव्वर हो जाता है इस के अेलावा बड़ा अज्र व सवाब बताकर खाने पर आमादा किया

जा रहा है लगता है कि कव्वों ने किसी जमाने में उन बुजुर्गों के साथ कोई बड़ा भोंडा मजाक किया था जिस जुर्म की पादाश में सज़ा देने की तजवीज़ पेश की गई अभी तक देसी घी और देसी मुर्ग के खाने की लज़्ज़तों से आशना थे अब देसी कव्वों पर हमला कर दिया जो ग़ल्ले को नुक़सान पहुँचाते हैं।

अरे नादान! कव्वा ख़्वाह देसी है या बिदेसी उसका खाना कैसे जाइज़ हो जाएगा ? किया फुक़हाये मिल्लत और अइम्म ए मुजतहेदीन ने कोई सूरत बताई है मसले की तौज़ीह के लिए हवाले के साथ मुफ़स्सल बयान करना चाहिए ताकि लोग समझते कि उसके जवाज़ में फुक़हा का क़ौल है, या बस जो चीजें नुक़सान का सबब बनें उनकी हिल्लत का फ़तवा दे दिया जाए अगर ऐसा ही है तो कुत्ते किया कम नुक़सान पहुँचा ते हैं जिसको काट लेते हैं उसे बड़े बड़े हकीमों और डॉक्टरों की दहलीज़ पर हाज़िरी देनी पड़ती है बसा औक़ात कुत्ते का काटा हुआ आदमी हलाक भी हो जाता है परिंदों में उक़ाब गिध वगैरा जो मुर्दार खाते हैं जिनका निशाना बहुत कम ख़ता करता है अपने शिकार के हुसूल पर इस क़दर हरीस होते हैं कि अगर शिकार से बाज़ रखने की कोशिश कीजिये तो आँखें जा़ए कर देते हैं ऐसे बहुत से दरिंदे और जानवर मिलेंगे जिनसे शदीद नुक़सानात होते हैं मसनदे इफ़ता को ग़लत इस्तिमाल करने वाले कव्वा ख़ोर मोल्वी रशीद अहमद गंगोही जिनके फतवे से बुग़्ज़ व इनाद, दग़ा, व फ़रेब, मक्र व जालसाज़ी की बू आती है खुद कितने कव्वों को लुक़म ए तर बनाए होंगे आँ जनाब ने विटामिन का कौनसा माद्दा महसूस क्या जिसके खाए बग़ैर चार ए कार ना था मगर खुदा जब दीन लेता है तो अक़्लें छीन लेता है।

इस्लामी उसूलों और शरीअते मुस्तफ़ा को पामाल करने वाले खुद साख़्ता मुफ़तियाने देवबंद ने अपनी किताबों में जिस तरह मसाइले शरीआ की धज्जियाँ फ़िज़ाए बसीत में बिखेरी हैं उसे पढ़कर एक

आम से आम मुसलमान भी बरदाश्त नहीं कर सकता है मगर उनके पैरु कार आज भी बहती गंगा में गुस्ल कर रहे हैं उनके सामने अगरचे हवालों और दलाइल के अंबार लगा दीजिये मगर उनके सरो पर जूँ तक नहीं रेंगती है सच फरमाया है ताजदारे बरेली ने।

तेरी दोजख़ से तो कुछ छीना नहीं
खुल्द में पहूँचा रजा फिर तुझको किया

शिर्क फ़िल असमा

अब्दुल नबी, पीर बख़्श वग़ैरा नाम रखना

(1) मोल्वी इस्माईल देहलवी शिर्क की मुख़तलिफ़ शकलों के ज़िम्न में रक़म तराज़ हैं कि कोई अपने बेटे का नाम अब्दुल नबी रखता है कोई अली बख़्श, कोई मदार बख़्श, कोई सालार बख़्श, कोई गुलाम मुहिय्युद्दीन (ऐसा नाम रखना शिर्क है)

(हवाला1: तक़वियतुल ईमान (दारुस्सलफ़िया मुंम्बई) स0, 16)
(हवाला2: तक़वियतुल ईमान (कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली) स0,10)

(2) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने फ़तवा दिया के नबी बख़्श, पीर बख़्श, सालार बख़्श,मदार बख़्श नाम रखना मूहिमे शिर्क हैं मना है उनको बदलना चाहिये।

(हवाला:1 फतावा रशीदया (मुबव्वब) 1987 ई0 स0,69)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम) 1363 हि0 स0,59)

(3) रशीद अहमद गंगोही के दादा का नाम पीर बख़्श था।

(हवाला:1 तज़किरतुल रशीद जिल्द 1,स013,15,17)
(हवाला:2 सवानेह क़ास्मी जिल्द 1,स0,69)

(4) रशीद अहमद गंगोही के नाना का नाम फ़रीद बख़श था।

(हवाला: तज़किरतुल रशीद जिल्द 1 स0,13)

(5) मोल्वी अशरफ़ अली थानवी ने अपनी किताब बहिश्ती ज़ेवर में कुफ्र व शिर्क के उन्वान के तहेत , अली बख़्श, हुसैन बख़्श, अब्दुल नबी वग़ैरा नाम रखना शिर्क में शुमार किया है।

(हवाला:1 बहिश्ती ज़ेवर(रब्बानी बुक डिपो देहली) हि01,स035)

(6) रशीद अहमद गंगोही के उस्ताद का नाम मोल्वी मोहम्मद बख़्श था।

(हवाल: तज़किरतुल रशीद जि02,स0278)

(7) मोल्वी क़ासिम नानोतवी के दादा के वालिद का नाम मोहम्मद बख़्श था। मोल्वी क़ासिम नानोतवी का शजरऐ नसब इस तरह है मोहम्मद क़ासिम बिन असद अली बिन गुलाम शाह बिन मोंहम्मद बख़्श।

(हवाल:सवानेह कास्मी जि01,स0113,115,179)

(8) मोल्वी क़ासिम नानोतवी के पर दादा शेख़ मोहम्मद बख़्श के भाई का नाम ख़्वाजा बख़्श था।

(हवाल:सवानेह कास्मी जि01,स0179)

(9) मोल्वी अशरफ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, मोल्वी क़ासिम नानोतवी के पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की के उस्ताद का नाम कलन्दर बख़्श था।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि03,हि01,कि012,स0199)

(10) मोल्वी ख़लील अहमद सहारनपुरी के बचपन के पीर और तबलीग़ी जमाअत के बानी मोल्वी इल्यास काँधलवी की नानी के वालिद मोल्वी मुजफ्फर हुसैन काँधलवी के वालिद का नाम मोल्वी महमूद बख़्श था।

(हवाला1:हिकायाते औलिया हिकायत191,स0215)
(हवाला2:अरवाहे सलासा हिकायत,91)
(हवाला3:तजकिरतुल ख़लील (सहारनपुर)बारे दूम 1411हि0,स097)
(हवाला4:तजकिरतुल ख़लील (सहारनपुर)बारे अव्वल1395हि0,स079)
(हवाला5:तजकिरतुल ख़लील (मेरठ) स051)

अलक़ाबे क़िब्ला व काबा का इस्तेमाल

(1) बक़ौल मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ख़त में किसी को अलक़ाब क़िब्ला व काबा लिखना दुरुस्त नहीं

(हवाला1: फतावा रशीदया (1987ई0)स0567)
(हवाला2: फतावा रशीदया (1363हि0)स0116जि03)

(2) फतावा रशीदया में मोल्वी रशीद अहमद गंगोही नें फतवा

दिया कि किबला व काबा वगैरा अलफाज व अलकाब किसी की निसबत लिखनें और कहने मकरूह तहरीमी हैं बल्कि जब ज्यादा हदे शाने नबवी से कलिमात आप के वास्ते ममनू हुए तो किसी दूसरे के वास्ते क्योंकर दुरुस्त हो सकते हैं।

(हवाला1: फतावा रशीदया (1987ई0)स0566)
(हवाला2: फतावा रशीदया (1363हि0)स0114,हि02)

(3) बक़ौल रशीद अहमद गंगोही क़िबला व काबा जैसे अलकाब लिखना ममनू है बल्कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के लिए भी ममनू है।

(हवाला: तज़किरतुल रशीद जिल्द1,स0,137)

(4) मोल्वी अशरफ अली थानवी ने हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की को क़िबला व काबा लिखा

(हवाला1: तज़किरतुल रशीद जिल्द1,स0,116)
(हवाला2: तज़किरतुल रशीद जिल्द1,स0,118)

(5) थानवी कहते हैं कि मौलाना फजलुर्रहमान गंज मुरादाबादी मेरे क़िबला व काबा हैं।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि03,हि03,कि14,स0121)

(6) मोल्वी अशरफ अली थानवी के लिए क़िबला का लक़ब इस्तेमाल मुतअदि्दद जगहों पर हुआ है।

(हवाला1:हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि15,मल0,35 स019)
(हवाला2:हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि15मल0,136,स021)
(हवाला3:हसनुल अज़ीज़ जि02,हि02,कि15,मल0,231स074)

(7) बक़ौल थानवी, मोल्वी महमूद हसन देवबंदी मेरे उस्ताद और किबला व काबा हैं।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,कि010,मल0808,स0457)

(8) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के इंतेक़ाल पर दारूल उलूम देवबंद के शेखूलहिंद मोल्वी महमूदुल हसन देवबंदी ने एक मरसिया लिखा जिस में गंगोही को रुहानी और जिसमानी हाजात का किबला लिखा है।

हवाइज दीन व दुनिया के कहाँ ले जायें हम यारब
गया वह किबल ए हाजाते रुहानी व जिसमानी

जिधर को आप माइल थे उधर ही हक़ भी दाइर था
मेरे किबला मेरे काबा थे हक़्क़ानी से हक़्क़ानी
(हवाला: मरसिया गंगोही स07,8)

(9) मोल्वी अशरफ अली थानवी को किबला व काबा लिखा गया।
(हवाला: ख़ातिमतुस्सवानेह स0155)

(10) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही मोल्वी क़ासिम नानोतवी और मोल्वी अशरफ अली थानवी के पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह को मुतअद्दिद मर्तबा किबला लक़ब के साथ हजरत हाजी साहिब किबला लिखा है।

(हवाला1:सवानेह क़ास्मी जि01,स088,एक मर्तबा)
(हवाला2:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,294,एक मर्तबा)
(हवाला3:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,295,एक मरतबा)
(हवाला4:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,297,दो मरतबा)
(हवाला5:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,298,तीन मरतबा)
(हवाला6:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,300,एक मरतबा)
(हवाला7:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,365,एक मरतबा)
(हवाला8:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,368,एक मरतबा)
(हवाला9:सवानेह क़ास्मी जि0,1,स0,447,एक मरतबा)

बिदअतों के परचम तले

(जशने सद साला दारुल उलूम देवबंद)

1981ई0 को दारुल उलूम देवबंद का जश्ने सद साला मनाया गया थां जिसमें वज़ीरेआज़म भारत मिसिज इंदरा गाँधी को शमे महफ़िल क़रार दिया गाया रेडियो, टीवी, अख़बारात वग़ैरा के ज़रिये तआवुन लिया गया और दारुल उलूम देवबंद की मीलाद ख़ुवानी के साथ नज़रियाते देवबंद और अफ़कारे वहाबियत की तशहीर की गई इंद्रा गांधी ने जश्न का इफ़तेताह किया जिन के दीदार और निस्वानी अदाओं से पूरे देवबंद का माहौल मस्हूर हो गया तालियों की सदाओं में इंद्रा गांधी ने अपनी तक़रीर से जश्ने दारुल उलूम देवबंद को मुस्तफीज़ किया और बानि ए देवबंद के नवासे और मदरसा देवबंद के बानी व मोहतमिम क़ारी मोहम्मद तय्यब साहिब ने

इज़्ज़त मआब वज़ीरे आज़मे हिन्दुस्तान कहकर खैर मकदम ही नहीं बल्कि बड़ी बड़ी हसतियों में शुमार किया ' भारत के साबिक सदरे जमहूरिया राजेंद्र प्रसाद के हवाले से देवबंद को आज़ादि ए हिंद का एक मज़बूत सुतून करार दिया इंद्रा गांधी ने दारुल उलूम देवबंद को अपनी पारटी कॉंग्रेस से मुनसलिक क़रार दिया। अफ़सोस सद अफ़सोस मर्दों के झुरमुट में नंगे सर, बरैहना बाजू एक औरत की तक़रीर जश्ने दारुल उलूम देवबंद में करवाई गई इंद्रा गांधी के अेलावा मज़कूरा जश्न में मिस्टर राज नारायण, जग जीवन राम मिस्टर बहूगुणा वगैरा ने शिरकत की और इंद्रा गांधी के बेटे संजय गांधी ने तक़रीबन पचास हज़ार अफ़राद को आला पैमाने पर तीन दिन खाना खिलाया जो पिलास्टिक के लिफ़ाफ़ों में बंद था।

इस जश्न में भारती हुकूमत के अेलावा, दीगर गैर मुस्लिम हिंदुओं ने भी दारुल उलूम देवबंद का तआवुन किया था मज़ीद बराँ कि हिंदुओं की मेज़बानी देवबंदी उलामा फख़्र से कुबूल फ़रमाते और उनके घरों को जा कर कई कई दिन ठहेर कर मेहमानी का शर्फ़ अता फ़रमाते।

जश्न में इख़राजात तक़रीबन डेढ़ करोड़ रुपये तक हुए थे जिसे भारतीय हुकूमत के तआवुन से पूरा किया गया मरकज़ी हुकूमत ने तीन लाख रुपये तज़ईन कारी में सर्फ़ किए जो गिरांट की सूरत में मुहय्या की गई थी दारुल उलूम ने साठ लाख रुपये तक जमा किए थे नई सड़कों की तामीर, बिजली की हाइ पावर लाइन गर्ज़ कि आसाइश का हर सूरत ख़्याल रखा गया तौहीद परस्ती का राग अलाप ने वाले बतायें दारुल उलूम की मीलाद ख़्वानी में जो इख़राजात हुए ये बेजा असराफ़ और फुजूल खर्ची में दाख़िल है कि नहीं ?

नबी ए करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की मीलाद में जश्ने विलादते मुस्तफ़ा में बक़ौल अकाबेरीने देवबंद तज़ईन कारी शिर्क, इख़राजात फुजूल ख़र्ची और बेजा असराफ़ के ज़ुमरे में है मगर जश्ने सद साला दारुल उलूम देवबंद के लिए जाइज़ और मुसतहसन अम्र है ये सिर्फ अपने सच्चे आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अदावत व दुश्मनी की बुनियाद पर है।

कि मोहम्मद का जब योमे मीलाद आए صلی اللہ
तो बिद अत के फ़तवे उन्हें याद आयें। علیہ وسلم

आप बताइये जश्ने सद साला दारुल उलूम देवबंद के तअल्लुक से जो मदद ली गई आपकी शरीअत में उसकी इजाज़त है ? जबकि बुजुर्गो के इस्तिमदाद और उनसे मदद चाहने को अकाबिरीने देवबंद ने बिदअत और

हराम करार दिया है।

मगर इंद्रा हुकूमत से इन ज़ालिमों ने भारी रक़म वसूल करली और पूरे का पूरा हड़प कर गए कल तक जो बुज़ुर्गों के तबर्रुकात खाने से दिल मुर्दा हो जाने की बात कर रहे थे आज वही लोग जश्ने सद साला दारुल उलूम देवबंद से वापसी पर अपने घरों के लिए तबर्रुकाते देवबंद लेकर जा रहे हैं खेलों का सामान, हॉकियाँ क्रिकिट गेंदों के अलावा सेब अंगूर गन्ने अनन्नास नारियल कपड़े जूते मोजे छतरियाँ अहलिया के लिए चूड़ियाँ बे शुमार तोहफे।

ये है किरदारे वहाबिया देवबंदिया उनके मुफ़्ती फ़तवा देते हैं कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के तबर्रुकात मत खाना और ये हैं कि मानते नहीं और इंद्रा गांधी और दीगर ग़ैर मुस्लिम नेताओं के चरणों में होने वाले इजलास की वापसी पर क़िस्म क़िस्म के तहाइफ़ लेकर लौट रहे हैं क्या देवबंद के मुफ़तियों के फ़तवे की रू से ये बिदअत और शिर्क नहीं है ? मगर

नहीं क़ौल से फ़ेल तेरा मुताबिक़

इसी जश्न में तिलावत व तराने के बाद इस्टेज पर ग़ैर मामूली हरकात व सकनात का जब एहसास होने लगा तो मालूम हुवा कि श्री मती इंद्रा गांधी तशरीफ़ ला रही हैं तमाम अरब वुफ़ूद और दीगर मेज़बान देवबंदी उलमा दो रूया खड़े होकर आँजहानी इंद्रा गांधी का इस्तक़बाल बड़े तपाक से करने लगे और इसी जश्न की कैफ़ियत बयान करते हुए सऊदी अख़बारात में इंद्रा गांधी को सय्यदा के लक़ब से नवाज़ा गया।(मआज़अल्लाह)

क़याम व कुऊद की मजलिसों को बिदअत और हराम बताने वाले हज़रात हालते क़याम में किसका इस्तक़बाल कर रहे थे एक नारी का इंद्रा गांधी को सऊदिया के अख़बारात ने लफ़्ज़े सय्यदा लिखा किसी तौहीद परस्त ने एतराज़ नहीं किया मगर तशहहुद के बाद दुरूदे इबराहीमी अल्ला हुम्मा सल्ले अला सय्येदुना में लफ़्ज़े सय्येदुना पर एतराज़ वारिद करते हैं देवबंदी हज़रात कहते हैं कि

लफ़्ज़े सय्येदुना अहादीस की कुतुब में नहीं है लिहाज़ा इस लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा बिदअत है। राक़िमुल हुरूफ़ से कई देवबंदियों ने इस सिलसिले में तमहीदी गुफ़्तगू की और हर ज़ाविये से सय्येदुना के खिलाफ़ अपनी जाहिलाना फ़िक्र इस्तेमाल करते रहे मगर रोज़ नामा अख़बार अल आलमुल इस्लामी 14 जमादियुल अव्वल 1400 हि0 में सऊदी हुकूमत ने इंद्रा गांधी को सय्यदा कह कर अहले ईमान के दिलों को मजरूह किया और किसी वहाबी देवबंदी की जुरअत देखने को ना मिली कि इस पर एतराज़ वारिद करते लेकिन हम अगर दोनों जहाँ के आक़ा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को सय्येदुना कहें तो बिदअत और कहने पर दलाइल तलब किए जायें ये उस गुरूप के लोगों के अहवाल व कवाइफ़ हैं जो हमा वक़्त ग़ैरुल्लाह की इस्तिमदाद व इआनत का इनकार करते रहते हैं और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कहने वाले सहीहुल अक़ीदा सुन्नी मुसलमानों को ख़्वाम मख़्वाह मुशरिक व बिदअती क़रार देने में ज़रा सा भी झिजक महसूस नहीं करते लेकिन एक काफ़िरा मुशरिका की मदह सराई में मजनूना कैफ़ियत का इज़्हार करते हुए सय्यदा तक कह देते हैं (अल अयाज़ु बिल्लाह)

सय्यदी सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि ।

शाख़ पर बैठके जड़ काटनें की फिक्र में है
कहीं नीचा न दिखाऐं तुझे शजरा तेरा।

मुनाफ़िक़ों की निशान दही

हुज़ूरे अकरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम लश्करे इस्लाम में माले ग़नीमत तक़सीम फरमा रहे थे कि एक शख़्स जिसका नाम हरक़ूस बिन ज़हीर (ज़ुलखुयसरा) था कहने लगा या रसूलल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम आप ने अदल व इन्साफ से काम नहीं लिया। रहमते दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ज़ुलखुयसरा

की कड़वी गुफ़्तगू सुनकर ज़बाने फ़ैज़े तरजुमान से इरशाद फ़रमाते हैं मैं अल्लाह का नबी हूँ अगर मैं इन्साफ न करुँगा तो कौन अदल करेगा?

अब निगाहे नुबुव्वत की कुव्वते बसरी देखिये वह लोग जो कहते हैं कि हुजूरे अकरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं (मआजअ़ल्लाह) वह देखें कि ग़ैबदाँ रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निगाहे मुबारका कहाँ तक देख रही है।

सहाब ए किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम से इरशाद फरमाया कि यह अभी (जुलखुयसरा) ज़िन्दा रहेगा और इस की नस्ल से लोग निकलते रहेंगे बादहू जुलखुयसरा के नस्ल की निशा़नियाँ बयान फ़रमाते हैं उन निशानियों को बग़ौर पढ़िए और देखिये कि आपकी पेशीन गोईयाँ किस तरह हर्फ़ बा हर्फ़ पूरी हो रही हैं।

(1) यह लोग सरों पर बाल नहीं रखेंगे यानी सर मुंडवाते रहेंगे (अब तो मोंछें भी साफ़ करवा देते हैं)

(2) पाजामों और शल्वारों के पायेंचे टख़नों से बहुत ऊँचे रहेंगे(बाज़ वहाबी देवबंदी इतना ऊँचा पहेनते हैं कि बजाए पाजामा या शल्वा़र के चड्ढी मालूम होती है)

(3) नमाजें इस क़दर तवील पढ़ेंगे कि दूसरे लोग उन की नमाज़ों के मुक़ाबिल अपनी नमाज़े हक़ीर समझेंगे।

(4) ये लोग कुरआन उम्दगी से पढ़ेंगे, ज़बानों पर होगा मगर हल्क़ से नीचे नहीं उतरे गा।

(5) उनकी ज़बानें शकर की तरह मीठी होंगी मगर दिल भेड़ियों से ज़्यादा सख़्त और बुरे होंगे।

(6)सूरत व शक़्ल से बड़े पारसा नेक मालूम होंगे मगर दीन से इस तरह अलग और बेगाना होंगे जैसे तीर अपने शिकार से निकल जाता है।

(7) ये लोग खुद बुरे होंगे और बुराई ही फैलायेंगे।

मुंदरजा बाला निशानियाँ रहमते दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने चौदह सौ वर्ष पहले इरशाद फ़रमाया जो मिन व अन

पूरी हो रही हैं ऐहले सुन्नत व जमाअत से बर गश्ता हो कर जो भी तन्ज़ीमें, फ़िरक़े वजूद में आए या आते हैं उन में इन निशानियों में से कोई न कोई निशानी ज़रूर होती है हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हो बातिल अक़ाइद वालों ही के तअल्लुक़ से फ़रमाते हैं वह लोग जो काफ़िरों और मुशरिकों के बारे में नाज़िल होने वाली आयतों को मुसलमानों पर चसपाँ करते हैं मख़लूक़ाते इलाही में सब से ज़्यादा बुरे हैं ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हो के क़ौल के मुताबिक़ दौरे हाज़िर में फ़िरक़ ए बातिला का पहचान ना ज़्यादा आसान हो गया है आज जमाअते वहाबिया, देवबंदिया, तबलीग़िया, मौदूदिया, वग़ैरा और उन जैसी तन्ज़ीमें गुमराह कुन, गुमराह गर अफ़राद के ज़रीए इस्लाम की रूह निकालने, जलवए जानाँ सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम से सच्ची मुहब्बत का चराग़ गुल करने में पेश पेश हैं अपने खुतबात और तक़ारीर में वही आयतें पढ़ते हैं जो बुतों या काफ़िरों या मुशरिकों के सिलसिले में नाज़िल हुई हैं और ग़लत तावीलात पेश करके सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमानों पर शिर्क व बिदअत के फ़तवे देकर मुशरिक और बिदअती की सनद अता कर देते हैं हालांकि उन्हें मालूम नहीं कि वह अपने अमले बद से बद तरीन ख़लाइक़ में शुमार किये जा रहे हैं ।

गुमराह कुन किताबें

(1)	हिफ़ज़ुल ईमान	(अशरफ़ अली थानवी)
(2)	फ़तावा रशीदिया	(रशीद अहमद गंगोही)
(3)	आबे हयात	(मो0 क़ासिम नानोतवी)
(4)	तहज़ीरुन्नास	(मो0 कासिम नानोतवी)
(5)	बराहीने क़ातेआ	(ख़लील अहमदअंबेठवी)
(6)	बहिश्ती ज़ेवर	(अशरफ़ अली थानवी)
(7)	तक़वियतुल ईमान	(इसमाईल देहलवी)
(8)	सिराते मुस्तक़ीम	(इसमाईल देहलवी)
(9)	किताबुत्तौहीद	(मो0 बिन अब्दुल वहाबद नजदी)
(10)	तफ़सीर बेलुग़तिल हिरान	(हुसैन अली वाँ बछरानी)
(11)	तसफियतुल अक़ाइद	(मो0 क़ासिम नानोतवी)
(12)	रिसालतुल इमदाद	(अशरफ़ अली थानवी)
(13)	तज़किरतुल रशीद	(मोल्वी आशिक़ इलाही)मेरठी
(14)	मुख़तसर सीरते नबवीया	अब्दुल शकूर (काकोरवी)
(15)	तज़किरतुल ख़लील	(16) अशरफुस्सवानेह
(17)	अलइफ़ाजा़तुल योमिया	(18)हसनुल अज़ीज़

मुंदरजा बाला किताबें वही हैं जिसमें गैबदाँ रसूल और औलियाए उम्मत बुज़ुर्गानेदीन के तअल्लुक़ से बड़ी फ़य्याज़ी के साथ गुसताख़ियाँ की गई हैं और नादार व ना अहेल हज़रात ने ज़बरदस्त गुसताख़ियाँ की हैं लिहाज़ा सहीहुल अक़ीदा मुसलमान हमेशा इन किताबों से अपनी बेज़ारी का अमल जारी रखें और जुमला मुसलमानों से इन किताबों की ख़ामियों और ग़लतियों का तज़किरा करके बचने की तलक़ीन करें।

शरीअत में तबीअत

उलमा ए ऐहले हदीस जो अपने को हदीस पर मुकम्मल अमल पैरा होने का दावा करते हैं उनकी जामा तलाशी के लिए मुंदरजा ज़ेल इक्तेबासात पढ़िए।

(1) नजासते ग़लीज़ा के तअल्लुक़ से लिखते हैं पेशाब पाख़ाना से पानी नापाक न होगा जब तक पानी में तबदीली न आये।

(हवाला: मरफ़ुलजावा स0, 10)

पख़ाना पेशाब जैसी नजासतें पानी को नापाक नहीं कर सकतीं किस बुनयाद पर कितनी मिक़दार में, पानी किस क़दर होगा मसला तौज़ीह से बिल्कुल ख़ाली है मुफ़्ती ए ऐहले हदीस को अपना मौकुफ़ वाज़ेह कर देना चाहिये ताकि अवाम परेशानियों में मुबतेला न होते।

(2)बग़ैर जनाबत का ग़ुस्ल किये नमाज़ दुरुस्त है।(बदरुलअब्लास0,38)

आदमी जुनबी है, नापाक है उस पर ग़ुस्ल वाजिब है मगर आँ जनाब का फ़तवा है कि नमाज़ दुरुस्त है ऐसे मुफ़्तियों और उनके फ़तवों से अल्लाह महफ़ूज़ रखे (आमीन) फ़िक़ह का मसला है कि जुनुबी आदमी हालते जनाबत में न नमाज़ पढ़ सकता है न ख़ानए काबा का तवाफ़ कर सकता है न कुरआने पाक छू सकता है मगर मुफ्ती साहिब के फ़तवे ने तबलीग़ी जमाअत के आसामियों के लिए आसानियाँ फ़राहम करदी हैं कि तबलीग़ के बहाने मस्जिदों को मुसाफ़िर ख़ाना समझ कर फ़ितना व फ़साद बरपा करते हैं और सुबह बग़ैर ग़ुस्ल किए नमाज़ पढ़ लेते हैं।

(3)औरत हैज़ की हालत में कुरआन पढ़ सकती हैं (फ़तावासनाइया,स0555)

तअज्जुब है मुफ़्ती साहिब ने फ़तवे को हवाले से ख़ाली रखा है और वज़ाहत की ज़हमत नहीं की है अल्लाह तआला का इरशाद है: لايمسه الا المطهرون कुरआन बग़ैर ग़ुस्ल के न छुओ ऐसी सूरत में मुफ़्ती साहिब पर क्या हुकुम लगाया जायेगा? ये सब ज़हनी इख़्तिरा

है ऐसे लोग दीन के दाई नहीं हक़ के निगेहबान नहीं बल्कि कुरआन व हदीस के साफ़ और शफ़ाफ़ औराक़ पर गर्द उड़ाने वाले बद अंदेश हैं सऊदी रियाल पेट्रोल और डालर की बुनियाद पर तबलीग़ी अंजुमनें बनाकर सैर व सयाहत करने वाले हज़रात ने जिस क़दर इस्लाम और उसके तअल्लुक़ से खिलवाड़ किया है वह ऐहले बसीरत की निगाहों से पोशीदा नहीं उनके दिलों में सियासी, माली इक़्तेदार की ख़्वाहिश का अलाउ कल भी जल रहा था और आज भी आप अगर गहराई में उतर कर जाएज़ा लें तो बात समझ में आ जायेगी बुजुर्गाने दीन, सलफ़े सालिहीन ने किताब व सुन्नत के अहकामात की जो तशरीहात की हैं आज वहाबिया देवबंदिया और ऐहले हदीस के खुद साख़्ता उलमा उन्हीं के ख़िलाफ़ आम्मतुल मुस्लिमीन के दरमियान बे ऐते मादी और दीनी बेहिसी व जाहिलाना रिवायात का खुद अपना सिक्का राइज करना चाहते हैं मगर उलमा ए हक़ ने फ़ितनए वहाबियत व नजदियत व कुफ़्र व इलहाद की सतहे समंदर पर ऐसा बन्ध बांध दिया है जिससे ऐहले सुन्नत का शीराज़ा बिखरने से महफ़ूज़ हो गया है और इन्तेहाई बेदारी के साथ इमामे इश्क़ व मोहब्बत सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह का पैग़ाम पूरी दुनिया को पहुँचा रहे हैं।

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

मनी आर्डर के अदमे जवाज़ का फ़तवा

(1) सवालः मनी आर्डर करना और महसूल मनी आर्डर का देना शरअन जाइज़ है या नहीं।

अलजवाबः बज़रीये मनी आर्डर रुपया भेजना ना दुरुस्त है और दाख़िले रिबा है (यानी सूद) और ये जो महसूल दिया जाता है ना दुरुस्त है ।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदिया (1987 ई0)स0502)
(हवालाः2 फ़तावा रशीदिया (1363हि0,2)स0128)

(2) सवालः मनी आर्डर और हुंडवी में कुछ फ़र्क़ है या दोनों का एक

हुक्म है ?

जवाबः मनी आर्डर और हुंडवी में कुछ फ़र्क़ नहीं दोनों का एक हुक्म है मनी आर्डर करना सूद में दाख़िल है।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदिया (1987 ई0)स0503)

(हवालाः2 फ़तावा रशीदिया (1363 हि0)हि02,स0,127)

(3) रुपया मनी आर्डर में भेजना दुरुस्त नहीं है ख़्वाह इस में कुछ पैसे दिये जायें या न दिये जायें।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदिया (1987ई0)स0502)

(हवालाः2 फ़तावा रशीदिया (1363 हि0)हि02स0127)

(4) बक़ौल थानवी मनी आर्डर करना हराम है वसूल करना हराम नहीं है।

(हवालाः1 हसनुल अज़ीज जिल्द,3 हि01,क़ि012,स0150)

(5) थानवी जी कहते हैं मनी आर्डर की फ़ीस सूद नहीं है बल्कि जो लिखना पढ़ना पड़ता है उसकी उजरत है उसके बाद थानवी ने कहाः نفعل ثم نستغفر यानी कि हम करते हैं फिर तोबा कर लेते हैं।

(हवालाः1 हसनुल अज़ीज जिल्द3, हि03,क़ि014,स0142)

(6) इन्तिक़ाल के दिन भी थानवी ने मनी आर्डर वसूल किया और वसूली पर खुद दस्तख़त करने चाहे लेकिन लेटे होने की वजा से न कर सके।

(हवालाःख़ातिमतुस्सवानेह जि03, स0233)

(7) थानवी ने अपने ख़लीफा ख़्वाजा अज़ीजुलहसन को सफर ख़र्च के लिये बीस रुपये का मनी आर्डर भेजा था।

(हवालाःअशरफुस्सवानेह जि03,स0233)

(8) थानवी ने क़न्नोज से अपने घर थाना भवन एक सौ रुपये का मनी आर्डर भेजा एक रुपया फीस में ख़र्च हुआ।

(हवालाः1 हसनुल अज़ीज जि04,हि02,क़ि011,स0303)

(9) थानवी ने एक तबीब को तिरेपन रुपया बज़रीआ मनी आर्डर भेजा।

(हवालाःअलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,क़ि018,मल0479,स022)

(10) एक मर्तबा तीन रुपये का मनी आर्डर थानवी के पास आया

थानवी ने मनी आर्डर इस लिए वापस कर दिया कि कूपन की इबारत साफ़ नहीं थी वह मनी आर्डर फ़िर वापस आया उस में कूपन की इबारत साफ थी कहा कि लौटा फेरी में फ़ायेदा हुआ तीन की जगा पाँच रुपये आए।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हि03,कि018,मल0395,स032)

(11) थानवी ने मनी आर्डर वसूल किया!

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि01,हि03,कि018,मल0395,स030)

करन्सी नोट के मुतअल्लिक़ फ़िरक़ ए देवबंदिया का मौक़िफ़

(1)सवाल: नोट की ख़रीद व फ़रोख़्त कमी या ज़्यादती पर जाइज़ है या नहीं बित्तफ़सील इरक़ाम करें।

जवाब: नोट की ख़रीद व फ़रोख़्त बराबर क़ीमत पर भी दुरुस्त नहीं मगर इसमें जहाँ हवाला हो सकता है और बहीला अक़्द हवाले के जाइज़ है मगर कम ज़्यादा पर बै करना रिबा और ना जाइज़ है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (1987 ई0)स0,490)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (1363 हि0)जि01,स047)

(2) थानवी ने कहा कि चाँदी ख़रीदने में मुशतरी अगर बाये को नोट दे तो जाइज़ नही इसलिए कि सुमन और बय का दस्त बदस्त होना शर्त है और नोट रुपये नहीं है बल्कि यूँ करना चाहिये कि पहले कहीं से या खुद बाये से नोट का रुपया ले ले और वह रुपया क़ीमत में दे दे।

(हवाला:1 कमालाते अशरफ़िया(1995 ई0)बाब1,मल0611,स0146)

(3) बक़ौल थानवी अगर नोट से ज़कात दी तो अदा न होगी।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि03,हि02,कि013,स0201)

(4) एक शख़्स ने सवाल किया कि किसी ने ज़कात में नोट दिया तो ज़कात अदा होगी या नहीं जवाब में थानवी ने कहा ये देखना चाहिये कि नोट की हक़ीक़त क्या है हक़ीक़त यह है कि नोट माल नहीं है इसलिए ज़कात अदा न होगी।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि03,हि02,कि013,स0204)

(5) बक़ौल थानवी अगर गिन्नी का तबादला रुपये से किया तो जाइज़ है और अगर नोट से किया तो जाइज़ नहीं क्योंकि नोट माल के हुक्म में नहीं।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जि03,हि02,कि013,स0154)

(6) बक़ौल थानवी नोट से ज़कात अदा नहीं होती इसलिए ग़ल्ला व दीगर अशया ए ज़रूरत से ज़कात अदा करें। एक नवाब साहिब ने ये मसलादरयाफ़्त किया कि आज कल रुपया तो मिलता नहीं सिर्फ़ नोट मिलता है जिससे ज़कात अदा नहीं होती ऐसी सूरत में ज़कात किस तरह अदा की जाए हज़रत अक़दस (थानवी)ने तहरीर फ़रमाया कि ज़कात ग़ल्ला और दीगर ज़रूरत की अशया से भी अदा हो सकती है।

(हवाला:अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि04,मल0262,कि023,स0285)

मसनदे इफ्ता का ग़लत इस्तेमाल

कुरआन व हदीस से मसाइले शरीअह का अख़्ज़ करना और उनके अहकाम को ब्यान करना बिऔनिल्लाहि तआला बग़ैर नामुम्किन है ख़ालिके अर्ज़ व समा जिस पर अपना फ़ज़ले ख़ास फ़रमाता है उसी को अहकामे शरीआ का आलिम बनाता है सरकार अबद क़रार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला जिससे भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में तफ़क़्कुह अता फ़रमाता है रब तबारका व तआला अपने हबीब पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में ऐसे ख़ुशनसीब व सईद हज़रात को दारैन की बादशाही अता फ़रमाता है मुफ़्तियाने किराम के इल्म व फ़ज़्ल और उनकी महारते ताम्मा पर उलमा ए हक़ का एतेराफ़ उनकी फ़ुक़ाहत की दलील होती है।

सवालात का समझना, लब व लहजा सयाक़ व सबाक़ के साथ ही साइल का मुद्दुआ व मंशा और उसकी गहराई तक पहुँचना ये सब काम उसी आलिमे दीन का हो सकता है जो मुकम्मल दस्तरस रखता हो जुज़इयाते फ़िकह पर उनके इस्तिख़राज के तअल्लुक़ से

फ़िक़्ही बसीरत दर कार होती है वरना मसाइल सही तौर पर अख़ज़ ही नहीं किए जा सकते हैं।

मोल्वी रशीद अहमद गंगोही और मुल्ला अशरफ़ अली थानवी ने मनी आर्डर और करंसी नोट के तअल्लुक़ से जो फ़त्वे पेश किए हैं उससे उनकी आलिमाना नहीं जाहिलाना फ़िक्र की निशानदिही हो रही है न तर्ज़े इस्तिदलाल है न फ़क़ीहाना महारत और न कहीं सियासी व समाजी सूझ बूझ पेशे नज़र रखा है बल्कि हक़ीकत यह है कि उनके क़ौल व फ़ेल में तज़ादात की भर मार है मनी आर्डर वसूल भी कर रहे हैं और भेज भी रहे हैं और नाजाइज़ बताते हुए सूद से तश्बीह दे रहे हैं नोटों की ख़रीद व फ़रोख़्त के मुआमिले में अपनी इल्मी नादारी और ला इल्मी का इज़हार करते हुए सुमन बय और बाये व मुशतरी की सिहत पर हमला करके यकसर मुस्तरद कर दिए हैं न उन मुफ़्तियाने किराम की नज़र मुसलमानों की मईशत पर गई न सनअत व हर्फ़त पर।

उलमा ए देवबंद के नज़रिये से इक़तेसादी मनसूबा बंदियों की तकमील के सारे दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल हो गए जबकि इस्लाम में तिजारत को बड़ी फ़ौक़ियत दी गई है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि सच्ची और दयानत दारी से तिजारत करने वाला अंबिया सिद्दीक़ीन और शुहदा के साथ होगा तिजारत के फ़रोग़ के लिए बैंक अहेम किरदार अदा करते हैं क्योंकि सरमाये के बग़ैर तिजारत का तसव्वुर ही बेसूद है सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की फ़िक़्ही बसीरत मुस्तक़बिल को झाँक रही थी और आपने कई साल पहले मुसलमानों की मआशी तिजारती नज़रियात को सामने रखते हुए सरमाया कारी के लिए चार निकाती फ़ारमूले पेश फ़रमाए थे ।

अब रहा सूद तो शरा ने हराम क़तई फ़रमाया है मगर हुसूले नफ़ा के बहुत से तरीक़े हलाल फ़रमाये हैं। इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी ने अपनी मअरेकतुल आरा तसनीफ़ كفل الفقيه الفاهم فى احكام قرطاس الدراهم में मुफ़स्सल इरक़ाम फ़रमा दिया है मुंदरजा बाला रिसाला को पढ़ने

के बाद आला हज़रत की फुक़ाहत व ज़िहानत पर अक़ीदत की गरदनें ख़म हो जाती हैं आपने साबित कर दिया है कि नोट क़ीमती माल है रसीद नहीं इस्लामी निज़ाम के निफ़ाज़ और इक़तेसादी निज़ाम व बैंकों को सूद जैसी लानत से पाक करने के लिए ये एक अज़ीम नेमत है मुस्लिम उलमा में इमाम अहमद रज़ा की तन्हा वह ज़ात है जिन्होंने पहली बार करन्सी नोट के जवाज़ का फ़तवा देकर आलमे इसलाम पर एहसान फ़रमाया है मुफ़्तियाने देवबंद अपने बुजुर्गो की फिकही नादारी पर मातम करें और उनके फ़तवों को कलअदम क़रार देकर इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ की बारगाह में कासा लैस होकर इल्म व फ़न की ख़ैरात माँगें और अपने बुजुर्गो की तहरीरात के ग़लत होने का ऐलान करदें ताकि क़ौमे मुस्लिम धोका व फ़रेब की दल दल से निकल कर कुफ़्र व शिर्क की हर जकड़ से आज़ाद हो जाए और मआशी तौर पर मज़बूत होकर सियासी और समाजी एतेबार से ताक़तवर हो जाए।

उलमाए देवबंद को खाने पीने की हिर्स दावत व हद्ये में बेजा फ़रमाईश

(1) मोल्वी क़ासिम नानोतवी को मर्ज़े मौत में ककड़ी खाने की तमन्ना हुई तमाम खेत छान डाले लखनऊ मोल्वी अब्दुल हई को इत्तेला हुई तो उन्हों ने लखनऊ से ककड़ियाँ भेजीं।

(हवला 1: हिकायातुल औलिया हिकायत न0224, स0246)

(हवला 2: अरवाहे सलासा हिकायत न0224, स0226)

(हवला3: अलइफ़ाज़ातुलयोमिया(देवबंद)ज़ि03, कि013, मल0294,स0234)

(हवला 4: सवानेह क़ास्मी ज़ि01, स0591)

(2) बक़ौल थानवी हमारा मसलक ये है कि अंडा खाओ, मुर्गी खाओ मुरग़्ग़न खाने खाओ और काम करो।

(हवाला हसनुल अजीज़ जिल्द 3 हिस्सा 3 क़िस्त14,स071)

(3) नानो तवी को तआमे हराम से नफ़रत थी लेकिन दावत ब वज्हे दिलदारी हर एक की क़बूल करले ते थे दावत में जाकर खालेते थे फ़िर आकर कै कर ले ते थे।

(हवला 1: हिकायातुल औलिया हिकायत न0231, स0250)
(हवला 2: अरवाहे सलासा हिकायत न0231, स0231)
(हवला 3: सवानेह क़ास्मी जि01, स0365)

(4) थानवी कहते हैं कि दावत और हदये में हलाल व हराम को ज़्यादा नहीं देखता क्योंकि मैं मुत्तक़ी नहीं बस जो फ़त्वा फ़िक़ही रू से जाइज़ हुवा उसे जाइज़ समझता हूँ लेकिन इस का बहुत ख़्याल रखता हूँ कि दीन की इज़्जत में कमी न हो, धोका न हो, बोझ न हो, यानी गुंजाइश से ज़्यादा न हो न हालन न क़ालन यानी देते वक़्त मोहब्बत की वजह से गिरानी महसूस न हो फिर नानी याद आवे कि उफ्फ़ोह दस देदिये।

(हवला 1: कमालाते अशरफिया(1995ई0)बाब2, मल0181,स0378)
(हवला 2: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3 कि018, मल0516 स0162)

(5) थानवी जी कहते हैं कि जिस दिन घर में अच्छी चीज़ पकी होती है उस दिन काम करने में खुशी रहती है कि फ़ारिग़ होकर अच्छी चीज़ खाने को मिलेगी नफ़्स के वास्ते कोई उभारने वाली चीज़ ज़रूर होनी चाहिए।

(हवला: 1हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1, हिस्सा 1, मल0102,स0115)
(हवला: 2 अशरफुस्सवानेह जिल्द 2, स0118)

(6) अख़ीर उर्म में मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के तमाम दाँत गिर चुके थे कुछ अहबाब ने मसनुई दाँत बनाने की दरख्वा़स्त की उस पर गंगोही ने कहा अगर दाँत बन जायेंगे तो रोटियाँ चबानी पड़ेंगी अभी दाँत न होने की वजह से लोगों को रहेम आता है नर्म नर्म हलवा खाने को मिलता है।

(हवला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) ज़ि01, कि03, मल0635, स0315)

(7) एक शख़्स ने मोल्वी अशरफ अली थानवी की और मोल्वी मोहम्मद उमर की एक साथ दावत की खाने में चावल थे थान्वी को

पसंद न आए थान्वी ने कहा कि रोटी क्यों नहीं पकाई. कहा कि रोटी तो नहीं पकाई, थानवी ने कहा हम नहीं जानते जब दावत की है तो खिलाओ कहीं से भी खिलाओ उस ने कहा कि रोटी कहाँ से लाऊँ थान्वी ने कहा कि घर में नहीं तो मुहल्ले से माँग कर लाओ थान्वी की इस फ़रमाइश पर मोल्वी मोहम्मद उमर ने थान्वी से कहा कि मेज़बान की दिल शिकनी होगी इस पर थानवी ने कहा हमारी जो शिकम शिकनी होगी ? वह शख़्स गया और मुसीबत का मारा दाल रोटी लाया थान्वी ने कहा मैंने खूब पेट भर कर रोटी खाइ।

(हवला:1 अलइफ़ाज़ातुलयोमिया(देवबंद)जिल्द 1 किस्त,2 मल0,515 स0,255)

(हवाला:2 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 किस्त,15 मल0,333 स0,125)

(8) थान्वी कहते हैं कि अपना फ़ायेदा इस में है कि सस्ता पीर बनूँ तो बहुत लोग दावत किया करेंगे आज यहाँ क्ल वहाँ रोज़ दावत हुवा करे तीन सो साठ दिन दावत ही में गुज़र जायें।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3 किस्त,18 मल0,456 स0,83)

(9) थान्वी रास्ते में चल्ते हुए अमरूद खा रहे थे रास्ते में एक दोस्त मिला आधा खाया हुवा अमरूद थान्वी ने उसको दिया उसने लेकर खालिया।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 4 किस्त,19 मल0,579 स0,28)

(10) दस्तर ख़्वान के एक ताजिर ने थान्वी को दस्तर ख़ान का हदया दिया जो थान्वी ने ले लिया मगर हदया दे ने वाले को ये कहा कि इस्से बेहतर तो ये था कि इसको फ़रोख़्त करके इस की क़ीमत हदये में दे ते।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 4 किस्त,19 मल0,633 स0,144)

(11) बक़ौल थान्वी देवबंद जमाअत का पेशवा हाफ़िज़ ज़ामिन थान्वी क़साईयों की दावत से बहुत खुश होता कि गोश्त अच्छा खाने को मिले गा।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 1 मल0,36 स0,184)

(12) थान्वी कहते हैं कि लोग मुझको हदये में चीज़ें देते हैं इस के बजाये उसके दाम बेच कर दें कियोंकी हदये में भेजी हुई जीज़ को

मैं फ़ारोख़्त कर ता हूँ तो अच्छी क़ीमत नहीं उठती।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 1 मल0,98 स0,222)

(13) एक शख़्स ने थान्वी को लिखा कि मैं आपके लिये जूते का हदया भेज ना चाह ता हूँ जवाब में थान्वी ने लिखा जूता मत भेजो बादाम भेजो उसने बादाम भेज दिया थान्वी ने खाया।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 1 मल0,93 स0,98)

(हवाला:2 अशरफ़ुससवानेह़ जिल्द 2 स0,283)

(14) थान्वी ने मुहल्ले में ऐलान कर रखा था कि किसी के घर साग पका करे तो मेरे लिए भेज दिया करो।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2क़िस्त,15 मल0,213 स0,63)

(हवाला:2 कमालाते अशरफिया (1995 ईस्वी)बाब 2 मल0 56 स0,330)

(15) थान्वी कहते हैं कि कढ़ाई की दाल बड़े मज़े की होती है जब किसी के यहाँ शादी में पकने की मुझे इत्तिला होती है तो मैं खुद मंगवा लेता हूँ।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2,क़िस्त,15 मल0,213 स0,64)

(हवाला:2 कमालाते अशरफिया (1995 ईस्वी)बाब 2 मल0 56 स0,330)

(16) क़स्बा थाना भवन के क़साईयों की मसजिद के इमाम मोल्वी अब्दुल रहीम गोश्त नहीं खाते थे उन को कोइ क़साई गोश्त भेजता तो वापस कर दे ते थे, थान्वी ने मोल्वी अब्दुल रहीम से कहा कि अगर तुमहैं कोई गोश्त दिया करे तो ले लिया करो वापस क्यों कर दे ते हो मुझे भेज दिया करो मैं खालिया करुँगा।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 1, मल0,36 स0,185)

(17) थान्वी कहते है कि जब सामने खाना मौजूद हो और ख़्वाहिश भी हो तो फ़िर हाथ रोकना बहुत दुशवार है ये बड़ा सख़्त मुजाहिदा है।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2,क़िस्त,15 मल0,410 स0,161)

(18) थान्वी कहते हैं कि ब निस्बत गाये के बकरी का गोश्त अच्छा मालूम होता है।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द1 हिस्सा 2,मल0,221 स0,228)

(19) बक़ौल थानवी: मै दरवाजे पर खड़ा होकर या रास्ते में चलते हुए खाने से परहेज नहीं करता, इस्लामी सल्तनत में मेरी शहादत मकबूल न होगी अदालत में जाने से बच जाऊँगा कोई गुनाह तो है नहीं।

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 2 ,किस्त,8 मल0,447 स0,233)

(20) एक शखस ने थान्वी को गुड़ की दो भेलियाँ दीं थान्वी ने लेलीं और घर पर भेज दी लाने वाले ने कहा एक तुमहारे लिए है एक तलबा के लिए थान्वी ने दोनों वापस करदीं कहा कि अब न तालिबे इल्मों के लिए ली जायेगी न अपने लिए।

(हवाला:1 हसनुल अजीज जिल्द 1 हिस्सा 3'किस्त,18 मल0,395 स0,32)

(21) थान्वी कहते हैं बावजुद इख़तिलाफे मस्लक लोगों से मैं ने बड़ी बड़ी रक़मैं ले लीं ऐसी वसूली को मैं जुरमाना समझता हूँ मुझे जुरमाना करना था कि वह जुरमाना अदा करें फिर उनसे कियों न लूँ।

(हवाला:1 हसनुल अजीज जिल्द 1 हिस्सा 3किस्त,18 मल0,516 स0,163)

(22) मोल्वी फ़ख़्र निज़ामी ने फ.रज़ी रोजे की हालत में बुढ़िया का दिया हुवा शर्बत पीलिया कहा कि दिल तोड़ ने से रोजा तोड़ ना आसान था मोल्वी फ़ख़्र निज़ामी के इस फे़ल का दिफ़ा करते हुए थान्वी ने ब हवाला हाजी इमदादुल्लाह कहा कि फ़र्ज़ रोज़ा तोड़ना तो किसी की दिल शिकनी के ख़याल से जाइज़ नहीं मगर मग़लूबुल हाल थे उस वक़्त उन पर क़ल्ब की हकीक़त मुंकशिफ़ होगई और सोम (रोज़ह) की हकीक़त मुंकशिफ नहीं थी।

(हवाला:1 हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3किस्त,18 मल0,429 स0,54)

(23) एक शख़स ने दस्तर ख़्वान पर सवाल जवाब शुरू किए थान्वी ने कहा कि ये जलसा उसका नहीं है कुव्वते फिकरिया दूसरी तरफ मुतवज्जह न करनी चाहिए नीज़ खाने का जल्सा बे तकल्लुफ़ होना चाहिए मेज़बान को चाहिए कि नये आदमी को मेहमान की इजाजत ले कर साथ खाने बेठाये।

(हवाला:1 हसनुल अजीज जिल्द 2 हिस्सा 2किस्त,13 स0,60)

(24) दावत के मुतअल्लिक़ थान्वी का उसूल कि मेजबान जिसको मेरे साथ खिलाना चाहता हो तो पहले मुझसे इजाज़त ले क्योंकी जिस के साथ दिल खुला हुवा नहीं होता उसके साथ खाने में बे लुतफ़ी हो जाती है लुत्फ़ नहीं आताहै।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 2,क़िस्त,13 स0,123)

(25) सो कोई हदया भेजे और महसूल खुद न दे बलकि थान्वी को देना पड़े तो थान्वी उसको वापस लौटा दे ते और कहते कि मेरा उसूल है कि जिस हदये में मेरा ख़र्च हो मैं नहीं लेता वह हदया किया जिसमें महसूल देना पड़े।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 3,क़िस्त,14 स0,12)

(26) सोते वक़्त आधा सेर दूध पीने का थान्वी का रोज़ का मामूल था।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1,क़िस्त,10 स0,40)

(27) दावत क़बूल करते वक़्त थान्वी जी उमदा खाने की फ़रमाइश करते थे।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1,क़िस्त,10 स0,90)

(28) सफ़र में थान्वी से जुमा पढ़ने के मुतअल्लिक़ मश्वेरा कहा कि जुमा पढ़ने चलें गे क्योंकि आज सुबह खाना खा कर दिल ख़ुश हुवा।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1,क़िस्त,10 स0,144)

(29) थान्वी क़ाफ़िले से पहले बरहल गंज के लिए रवाना होजा ते हैं ताकि बरहल गंज वालों पर खाने का तक़ाज़ा हो।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1,क़िस्त,10 स0,108)

(30) आज़ादी के साथ खाने के लिए थान्वी ने कहा कि हमारे रुफ़क़ा के सिवा यहाँ कोई मौजूद न हो चुनाँचे खाना आने के बाद दरवाज़ा बंद कर लिया गया।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1,क़िस्त,10 स0,197)

(31) एक दिन मोल्वी क़ासिम नानोतवी छत्ता की मसजिद के इहाते में होले भुने खारहे थे दारुल उलूम देवबंद के मोहतमिम

नानोतवी के पास गए तो नानो तवी ने कहा आईये मौलाना खाईये मोल्वी रफ़ी उद्दीन ने कहा कि हज़रत मेरा तो रोज़ा है थोड़ी देर के बाद नानोतवी ने फिर कहा तो मेल्वी रफ़ी उद्दीन फ़ौरन बिला तअम्मुल खाने बैठ गए हालाँकी अस्र की नमाज़ हो चुकी थी और इफ़तार कावक़्त भी क़रीब था।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत,373 स0,342)

(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत,373 स0,326)

(32) थान्वी कह ते हैं कि मैं घर जाकर हवा में खुश्बू सूँघ कर बारहा बतला दिया करता हूँ कि आज क्या चीज़ पकी है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3,क़िस्त,18 स0,26)

(33) थान्वी ने ब हवाला मोल्वी गुलाम ग़ौस अली कहा कि ईमान की सलामती तो ये है कि दो नों वक़्त रोटी मिल जाए और आक़िबत बख़ैर ये है कि पाख़ाना खुल कर हो जाए।

(हवाला 1 फ़ुयूज़ुल ख़लाइक़(क़िस्त,8)मल0,82 स0,42)

(हवाला:2 अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 2क़िस्त,10 मल0,940 स0,526)

(34) अपने घर में खाने की चीज़ों के नाम बिवी से कहलवाने के बाद कोई चीज़ थान्वी ने पकाने को कहा फिर कहते हैं मैं ने फ़रमाइश नउीं की मैं ने इनतिख़ाब किया है।

(हवाला: अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 3क़िस्त,13 मल0,427 स0,303)

(35) थान्वी के उसताद ने अपने इनतिक़ाल के बाद खुवाब में अपने दामाद जो कानपुर में मुक़ीम थे कहा कि ये मुर्ग जो घर में फिर रहा है इसे ज़िबह कर के थान्वी को खिलादो, उनहों ने थान्वी से कहा थान्वी ने मुसकुराकर जवाब दिया कि मैं अब ज़रूर खाउँगा ये तो मौलाना की तरफ़ से दावत है।

(हवाला:1 अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 3क़िस्त,14 मल0,616 स0,399)

(हवाला:2 अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द 1 स0,148)

(36)एक शख़्स ने थान्वी को संतरे का हदया दिया जो थान्वी ने खाने केबाद कहा कि पेट में पत्थर अड़ गए फ़िर संतरे का हदया देने वाले के बारे में कहा कि पहले मुझसे पूछ लिया होता संतरे मेरे काम न आए दूस्रों को तक़सीम करना पड़ेगा और एहसान तो मुझपर

हुवा।

(हवाला: अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 4किस्त,22 मल0,117 स0,136)

(37) थान्वी कहते हैं कि जो लोग पीठ के पीछे मुझे बुरा कह ते है लेकिन जब सामने आते हैं तो 100, 100, रुपये दे जाते हैं ऐसों का हदया बहुत खुशी से ले लेता हूँ।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 4,क़िस्त,19 मल0,619 स0,108)

(38) सीप की क़ीमती तसबीह का तोहफ़ा चार दिन बाद एक दाना टूट गया, तसबीह वापस दे दी कहा इसके अेवज़ आपसे और चीज़ ले लूँगा।

(हवाला: अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द3,क़िस्त,18 मल0276,स0,149)

(39) थानवी का कहना है कि हाजी इमदादुल्ला मुहाजिरे मक्की जब थाना भवन में तशरीफ रखते थे तो कुछ चने कुछ किशमिश मिली हुइ़ी रखते थे सुबह के वक़्त मौलाना शेख़ मोहम्मद साहिब और हाफ़िज़ मोहम्मद ज़ामिन साहिब और हज़रत हाजी जी साहिब साथ मिल कर खाते थे और आपस में खूब छीना झपटी हुवा करती थी भागे भागे फ़िरते थे उस वक़्त मशाइख़ उस मसजिद को दुकाने मारिफ़त कहते थे और उन तीनों को अक़ताबे सलासा।

(हवाला: हिकायातुल अैलिया हिकायत 178 स0,208)

(हवाला: अ़रवाहे सलासा हिकायत 178)

(40) मिठाई का हदया देने वाले को थान्वी ने कहा अगर आप मुझसे मश्वेरा करते तो मैं बताता कि किया चीज़ लाना चाहिए मिठाई मेरे काम की नहीं एहसान मुझ पर हुवा और खायें ऐरे ग़ैरे किया लुत्फ़ हुवा।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 6,क़िस्त,13 स0,13)

(41) थान्वी खड़ाऊँ का मामूली हदया देने वाले को डाँट ते हैं कि ये तो बच्चा को फुस्लाना हुवा क्या आप ने मुझको बच्चा समझ रखा है? आप मेरे साथ हँसी सी कर रहे हैं अगर कोई चीज़ भेजने को जी चाहे तो पहेले दरयाफ़्त कर लो।

(हवाला: अशरफुस्सवानेह़ जिल्द 2 स0,282)

(42) थान्ववी को जूते का हदया, जूता तंग है लिखा फिर दूसरा जोड़ा भेजा वह भी तंग थान्वी ने लिखा कि बेहतर था पहले पैमाना मंगा लेते।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 1,क़िस्त,12 स0,35)

(43) वहाबी तबलीगी जमाअत के शैखुल इस्लाम और दारुल उलूम देवबंद के सदर मुदर्रिस मोल्वी हुसैन अहमद टाँडवी को इन्तिक़ाल के वक़्त सरदह खाने की ख़्वाहिश हुई देहली, सहारन्पुर और मेरठ में सरदह की तलाश की न मिलने पर कराची और लाहोर से मंगवा कर खिलाया।

(हवाला: रोज़ नामा अलजमीअत (देहली) शैखुल इस्लाम न0 शुमारा सनीचर मोरखा 15,फरवरी 1958ई0 मुताबिक़ 25 रजब 1377 हिज्री स0114)

(44) थानवी का कहना हदया का हक़ ये है कि जिस को हदया दिया जा रहा है उसको कोई बार न पड़े एक साहिब ने मुझको रेल से अमरूद भेजे उसमे मेरे आठ आने ख़र्च हुए मैंने लिख भेजा कि मेरे आठ आने ख़र्च हुए भेज दीजिये क्योंकि हदया मुअन्नस नहीं होती है उन्हों ने भेज दिये।

(हवाला:सफर नामा लाहोर व लखनऊ मल031, स0308)

(45) राँन्दीर वालों को थानवी ने कहा कि मुझसे आपके यहाँ का खाना नहीं खाया जाता आइंदा एक बावरची लाऊँगा जिसका ख़र्च आप लोगों को बरदाश्त करना होगा।

(हवाला:हसनुलअज़ीज़ जि02,हि03,क़िस्त16, मल0526,स04)

(46) थानवी ने कहा कि लोग मुझको जो हदया देते हैं उसी पर मेरी गुज़र है।

(हवाला:हसनुलअज़ीज़ जि01,हि01,मल077,स081)

पेट के पुजारी बिचारे वहाबी

हजरात, दावत व हदया के तअल्लुक़ से आपने इबारतें पढ़लीं यक़ीननआप किसी नतीजे पर जरूर पहुँचे होंगे। मुंदरजा बाला इबारतें शिकम परवरी, पेटू, होने की दलील हैं न तो सुन्नतों के

मुताबिक़ हदया व तोहफा वसूल करने का अमल है और न आदाबे दस्तरख्वान की ख़बर है, कुरआन के हलाल करदा को हलाल और हराम करदा को हराम समझने से भी क़ासिर और मुफलिसी का यह आलम की ज़िनदगी के शबो रोज का इनहिसार तहाइफ पर मबनी है।

सरकासरे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नतों को बगौर मुताला किये होते तो शायद ऐसा करने से बाज़ रहते। आदाबे जिंदगी से नावाकिफ हजरात का तरज़े अमल खाने पीने का तरीक़ा हदया व तहाइफ वसूल करने का निराला ढंग लम्बी लम्बी फरमाइशें क़ीमती तोहफों की निशानदही किया यही सुन्नत तरीक़ा है?

इसके बावजूद बड़े तमतराक़ से तालीमात आम करने की तरगीब दी जा रही है अकाबरीने देवबंद की तालीमात कौलन व फेलन जो सादिर हुए हैं खुवाहिशाते नफ्स की तकमील के अलावा दूसरा किया है? क्या ऐसी ही तबलीग़ का हुक्म कुरआन व हदीस में आया है। मरजुलमौत में ककड़ी लखनऊ से जा रही है, मुरग़्ग़न गिजाएँ और मुर्ग खानें की तरबियत दी जा रही है। तआमे हराम से नफरत के बावजूद उम्दा खाना देखकर ऐसे हरीस की खाकर बाद में क़ै भी कर लेते हैं।

थानवी कहते हैं कि दावत व हदया में हलाल व हराम की जियादा तमीज़ नहीं करता हूँ जो भी आता है हड़प कर जाता हूँ अच्छी चीजों की फरमाइश की गरज से काफिले से पहले रवाना हो जाते हैं उनहीं सुन्नतो को अमल में लाते हैं जिसमें ज्यादा फायेदा हो ताकि खाने पीने की ख़्वाहिश मुकम्मल हो सके। कोई कसाइयों की दावत से सिर्फ इस गरज से खुश हो रहा है कि ज्यादा गोश्त खाने को मिलता है , साग की सब्जी की मरगूबियत का यह आलम कि पड़ोस में एलान था जिसके यहाँ साग की सब्ज़ी पके वह हजरत जी के लिए पहुँचादे, बावजूद इख़्तिलाफ मसलक मोटी मोटी रक़में

वसूल करके जुरमाना के नाम से याद किया जा रहा है, मोलवी रफी उद्दीन तो इफतार से कुछ वक़्फा पहले खाने के चक्कर में रोज़ह तोड़ दिये हैं, थानवी साहिब खुशबू सूँघकर बावरची खाने के हालात बता देते थे कि क्या क्या तैयार हो रहा है। खड़े खड़े दरवाजों पर खाने पीने को भी अज रूऐ शरा अपने को आजाद बता रहे हैं यह है देवबंदियों के गुरु घंटालों की ज़िनदगी का अमली नमूना। रब्बेक़दीर ने इरशाद फ़रमाया من عمل صالحا من ذكر او انثى وهو مومن فلنحيينه حية طيبة (कंज़ुल इमान पा0 14 आयत 97) जो अच्छा काम करे मर्द हो या औरत और हो मुसलमान तो जरूर उसे हम अच्छी ज़िन्दगी जिलायेंगे।

इस आयते मुक़द्दसा में अच्छी ज़िन्दीगी से मुतअल्लिक़ मुख़तलिफ़ अक़वाल हैं बाज के नज़दीक इबादात में लज़्ज़त आना अच्छी जिंदीगी है बाज़ के नज़दीक क़नाअत,रज़ा बिलक़ज़ा अच्छी ज़िन्दगी है मोमिन ग़रीब भी हो तो आराम से है काफ़िर मालदार भी हो तक्लीफ़ में है इस्से दो मसअले मालूम होते हैं एक ये कि नेकियों का अच्छा नतीजा कभी दुन्या में मिलता है आख़िरत का बदला इसके अलावा है दूस्रे ये कि ज़िन्दगी अल्लाह की आला नेमत है नेक आमाल के लिए ईमान की क़ैद है अब अगर कोई मुसलमान कुरआन शरीफ़ के हुक्म के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार ना चाहे तो उस के लिए जरूरी है कि वह सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़िन्दगी को अपना शिआर बनाले क्योंकी आपकी ज़िन्दगी बनी नोऔ इन्सानी के लिए बेहतरीन नमूना है।

खाने पीने के तअल्लुक़ से देखिये हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं सीधे हाथ से खाओ और सीधे हाथ्से पिओ, सीधे हाथ से लो और सीधे हाथ से दो क्योंकी शैतान बायें हाथ से खाता है और उसी से पीता है और लेन देन भी उसी से करता है, सरकारे दोआलम सल्ललललाहो अलेहे वसल्लम बग़ैर छने आटे की मोटी मोटी रोटियाँ पसंद फ़रमा ते थे क्या मेरे आक़ाने कभी

खाने की फ़र्माइश की ? ग़रीब व अमीर शाह व गदा के तहाइफ़ और हदयों को किस अन्दाज़ में कुबूल फ़रमाया सीरत की किताबका मुताला किजिए तो पता चले गा कि आक़ाए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किस सादगी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी और आपके पैरु कारों ने किस जज़्बा व अख़लाक़ के साथ आपकी सुन्नतों पर अमल किया है। किस क़दर अख़लाक़ सोज़ इबारतें किताबों में दर्ज कि गई हैं जिसे पढ़ने के बाद दिमाग़ फ़टने लगता है तख़रीब व फ़साद के लिए अपने मान्ने वालों के अंदर ग़ज़ब का जज़्बा पैदा किया है आज वहाबिया देवबंदिया अपने अकाबिरीन की तालीमात आम से आम करने के लिए वक़्त, धन, दौलत, जिस्म व जान की बड़ी से बड़ी कुरबानियाँ पेश करने से भी दरेग़ नहीं करते फ़ितना व शर जंगल की आग की तरह फैलाने में हद दरजा मुनहमिक हैं मुसल्मानों के सामने जो तबलीग़ी तरीक़ा पेश किया जारहा है जिस में सब से पहले तौहीद परस्ती और सुन्नतों पर अमल करने जैसे फ़ारमूले शामिल होते हैं, खुफ़िया तौर पर दिल आज़र जुमलों से फ़ितना परवरी और तबीअत की शर पसंदी का अंदाजा लगाना मुशकिल नहीं है।

अफ़सोस सद अफ़सोस दुनिया भर के मुसलमानों में अपनी निज़ी तालीमात और तरज़े अमल को नाफ़िज़ करने के लिए दौलत व सरवत का सहारा लेकर कितनी बारीकियों और खुफ़या तदबीरों से वाहाबियत और देवबंदियत को आम किया जारहा है अब ज़ुरूरत इस बात की है कि उन की बे ढंगी और ग़लीज़ ज़बानें काट ली जायें ताकि बे ज़बान होकर शरारत से बाज़ आयें उन के नापाक मुँह में लगाम पहनाना चाहिये ताकि गुसताख़ियों के लिए खुल न सकें जी खोल कर उन की तज़लील और तकफ़ीर की जाए ताकि फ़ितनह को हवा न दे सकें जज़्ब ए ईमानी के साथ उनकी किताबों को पढ़िए और देखिए कितनी कारी ज़रबें इस्लाम व सुन्नत पर और ज़ाते अंबिया पर लगाई गई हैं इबलीसी ज़हनियत का वह नंगा

मुजाहिरा किया है जिस पर खुदा की लानत, फ़रिशतों की लानत और तमाम इन्सानों की लानत है सुन्नतों के बयान करने में खुबासतों का सिलसिला ही चल पड़ा है हर लमहा, हर लैहज़ा और निगारशात में दज्ल व फरेब की ईमान सोज शकावतों का अमली मुजाहिरा है। अल्लाह तआला ऐसी तालीमात और ऐसे दज्जालों झूटों और के शर से अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत को महफूज रखे। आमीन।

अशरफ अली का नया कलमा

एक शख़्स ने थानवी को ख़त लिखा और उस ख़त में यह लिखा कि आप से बैअत होने का मुझको ख़्याल हुआ इसकी एक वजह एक ख़्वाब भी है जो हस्बे ज़ेल है।

एक दफ़ा रामपुर रियासत में जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ तो वहाँ एक मस्जिद में एक मोल्वी साहिब जो तालिबे इल्म थे उनके पास ठहेरने का इत्तिफ़ाक़ हो गया और यह भी मालूम हुआ कि मोल्वी साहिब हुजूर (थानवी) से बैअत हैं इसलिए उनसे और भी मुहब्बत हो गई असना ए गुफ़तगू में मालूम हुआ कि उनके पास थाना भवन से दो रिसाला अल इम्दाद और हसनुल अज़ीज़ भी माहवारी आते हैं बंदे ने उनके देखने के वास्ते दर ख़्वास्त की तो उन मोल्वी साहिब तालिबे इल्म ने चंद रिसाले मुझको देखने के वास्ते दिये अलहमदु लिल्लाह जो लुत्फ उनसे उठाया बयान से बाहर है। एक रोज़ का ज़िक्र है हसनुल अज़ीज़ देख रहा था और दो पहर का वक्त था कि नींद ने ग़ल्बा किया और सो जाने का इरादा किया रिसाला हसनुल अजीज़ को एक तरफ़ रख दिया लेकिन जब बंदे ने दूसरी तरफ़ करवट बदली तो दिल में ख़्याल आया कि किताब को पुश्त हो गई इसलिए रिसाला हसनुल अज़ीज़ को उठाकर अपने सर की जानिब रख लिया और सो गया कुछ अरसे के बाद ख़्वाब देखता हूँ। कि कलेमा शरीफ़''लाइलाहा इल्ललाह मोहम्मदुर्ररसुल्लाह पढ़ता हूँ। लेकिन मोहम्मदुर रसूलअल्ललाह की जगह हुजूर (थानवी) का नाम लिया

हूँ। इतने में दिल के अंदर ख़्याल पैदा हुआ कि मुझसे गलती हुई कलेमा शरीफ के पढ़ने में इस को सही पढ़ना चाहिए इस ख़्याल से दोबारा कलेमा पढ़ता हूँ दिल पर तोबा है कि सही पढ़ा जाए लेकिन ज़बान से बे साख़्ता बजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नाम पर अशरफ अली निकल जाता है हालाँकि मुझको इस बात का इल्म है कि इस तरह दुरुस्त नहीं लेकिन बे इख़तियार ज़बान से यही निकलता है दो तीन बार जब यही सूरत हुई तो हुजूर (थानवी) को अपने सामने देखता हूँ और भी चंद शख़्स हुजूर के पास थे लेकिन इतनें में मेरी यह हालत हो गई कि मैं खड़ा खड़ा बवजा इसके की रिक्क़त तारी हो गई ज़मीन पर गिर गया और निहायत ज़ोर के साथ एक चीख मारी और मुझको मालूम होता था कि मेरे अन्दर कोई ताक़त बाकी नहीं रही इतनें में बन्दा ख़्वाब से बेदार हो गया लेकिन बदन में बदस्तूर बे हिसी थी और वह असर न ताक़ती बदस्तूर था लेकिन हालते ख़्वाब और बेदारी में हुजूर (थानवी) का ही ख़्याल था,लेकिन हालते बेदारी में कलेमा शरीफ की गलती का जब ख़्याल आया तो इस बात का इरादा हुआ कि इस ख़्याल को दिल से दूर किया जाए इस वास्ते कि फिर कोई ऐसी गलती न हो जाए बंईं ख़्याल बंदा बैठ गया और फिर दूसरी करवट लेट कर कलेमा शरीफ के गलती के तदारुक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ता हूँ लेकिन फिर भी यह कहता हूँ अल्ला हुम्मा सल्ले अला सय्ये दिना व नबिइयेना व मौलाना अशरफ अली,हालाँकि अब बेदार हूँ ख़्वाब नहीं लेकिन बे इख़तियार हूँ मजबूर हूँ ज़बान अपने काबू में नहीं उस रोज ऐसा ही कुछ ख़्याल रहा तो दूसरे रोज बेदारी में रिक्क़त रही खूब रोया और भी बहुत सी वजूहात हैं जो हुजूर के साथ बाइसे मुहब्बत हैं कहाँ तक अर्ज करूँ।

इस ख़्वाब के जवाब में थानवी ने लिखा कि इस वाक़ेआ में तसल्ली थी कि जिस की तरफ तुम रुजू करते हो वह बेऔनिही तआला मुत्तबे सुन्नत है।(24 / शव्वाल 1335हिजरी)

(हवालाः रिसालतुल इमदाद माहे सफ़र 1336हि0जि03,स0,34)

(2) थानवी का एतिराफ कि रिसाला अलइमदाद वाला ख्वाब का क़िस्सा षवाब तक सवाब समझता हूँ मैं मोतरिज़ीन पर न तो ऐतराज करता हूँ और न मुज़ाहेमत

(हवालाः हसनुल अज़ीज़ जि03,हि01,क़िस्त12,स024)

(3) रिसाला अलइमदाद के ख़्वाब के क़िस्से के मुतअल्लिक़ थानवी के हमख़्याल लोगों नें थानवी को लिखा कि आप यह छपवा दो कि यह शैतानी वसवसा है क्योंकि हमको लोग परेशान करते हैं जवाब में थानवी नें लिखा कि तुम शाया करदो मुझको क्यों मजबूर करते हो। (हवालाः हसनुल अज़ीज़ जि03,हि01,क़िस्त12,स031)

(4) रिसाला अलइमदाद के ख़्वाब वाले क़िस्से के जिम्न में थानवी कहते हैं कि बाज़ नें लिखा कि ख़्वाब देखने वाले को लिख दो कि तजदीदे निकाह करो मैंनें लिखा कि ऐसा तो मैं नहीं कर सकता ख़्वाब देखनें वाला माजूर था।

(हवालाः हसनुल अज़ीज़ जि03,हि01,कि012,स031)

(5) थानवी को बाज़ लोगों नें यहाँ तक लिखा कि बैठे बैठ जो जी चाहे लिख देते हो हम मुसीबत में पड़ जाते हैं पीछा छुड़ाना दुशवार हो जाता है। (हवालाः हसनुल अज़ीज़ जि03,हि01,कि012,स029)

(6) रिसाला अलइमदाद के ख़्वाब के क़िस्से के बाद थानवी का कहना कि मोतरिज़ीन ने वह वह एतिराज़ात किये कि तबीअत बंध गई दिल बुझ गया शुबह हो गया कि मुझ में अहलियत नहीं।

(हवालाः हसनुल अज़ीज़ जि0,3,हि01,क़िसत12,स023)

शुतरे बे मुहार

अशरफ़ अली थानवी के नए कलेमे से रसूल दुशमनी की एक लरज़ा खेज़ कहानी सामने आती है जाहिल मोल्वी ने गुमराह करने के लिए जिहालत का दूसरा दरवाज़ा खोला था आँखों के अंधे ज़र के बंदे पेट के पुजारी जनाब थानवी को चाहिए था कि खुद हलाकत से बचते और उनका कलेमा पढ़ने वाले शख़्स को अज़ाबे इलाही से

बचाते लेकिन जब उन्हीं के मुत्तिबईन ने गुज़ारिश की कि आप ये छपवादें कि ये शैतानी वसवसा है तो थानवी जी टाल देते हैं ख़्वाब में अशरफ़ अली का कलेमा पढ़ने वाले शख़्स के बारे में जब थानवी से बाज़ हज़रात ने कहा आप उसको लिख दीजिए कि तोबा करे तो आँजनाब उसे माज़ूर क़रार देकर बरी फ़रमा रहे हैं ।

मज़हबे अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ लाफ़ ज़नी और ज़हेर उगलने वाले हज़रात अशरफ़ अली के कलेमे को क्या रंग देते हैं और उसके ख़िलाफ़ आज तक क्या एकशन लिए हैं ? होना तो ये चाहिये था कि जब जब मोल्वी अशरफ़ अली थानवी की किताबें पढ़ी जातीं या उनके मुतअल्लिक़ बयानात होते तो क़ौम को इस कलेमे के ज़िम्न में आगाह किया जाता, मोहल्ले मोहल्ले घर घर भाई भाई के दरमियान मुनाफ़ेरत की आग जलाने वाले क्या अशरफ़ अली थानवी के कलेमे की तपिश से महफ़ूज़ रह सकते हैं ? अपने कलेमे के तअल्लुक़ से जो मोल्वी अशरफ़ अली थानवी ने तावीलात पेश की हैं वह अपने इल्मी और फ़न्नी फुक़ाहत से नहीं बल्कि फ़न्नी नक़ाहत की वजह से जिसका ऐतराफ़ उनके हम अक़ीदा उलमा ने भी किया है।: मज़हबी इख़तेलाफ़ के जज़्बे से बाहर निकल कर दयानत दारी से फ़ैसला करते हुए उलमा ए देवबंद को चाहिए था कि अशरफ़ अली थानवी की सख़्त गिरिफ़्त करते और उनके तिलसमे फ़रेब को तोड़ कर अच्छी तरह बेनक़ाब कर देते ताकि ऐहले इल्म व बसीरत को दोबारा उस जानिब तवज्जो करने की ज़रूरत न महसूस होती और वह खुद ही अवाम व ख़वास की नज़रों से गिर जाते, मिरज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी अपना कलेमा पढ़वा कर नबुव्वत का झूटा दावेदार बना और आज भी उसके मुत्तबेईन और मुरीदीन उसे नबी तसलीम कर रहे हैं और मिरज़ाई गुलाम अहमद क़ादयानी की नबुव्वत का ढँडोरा पीट रहे हैं बताना सिर्फ़ मक़सूद ये है कि अपने नए कलेमे की तिलावत पर इनतेहाई ख़ामोशी क्या माना रखती है क्या एक नये मज़हब की दाग़ बेल डालने की मुतरादिफ़ नहीं है ? क्या शरीअते

मोहम्मदिया में इस की इजाज़त है कि अपना कलेमा पढ़वाया जाए सच तो ये था कि सही निशाने क़दम पर चल कर ऐसी गंदी हरकतों से इज्तिनाब बरत ते हुए तोबा नामा शाया करते जिस कलेमे की बुनयाद पर इश्क़ का दावा है उस कलेमे की खुली तौहीन की गई जमाअते ऐहले सुन्नत के अफ़राद मज़ारात पर हिज़री दें आसार व तबर्रुकाते अंबिया से इस्तिफ़ादा करें निशाने क़दम का एहतिराम करें तो बिदअती हैं और अशरफ़ अली थानवी अपना कलेमा पढ़वायें तो हकीमुल उम्मत हैं ऐसे मुजरिम की सज़ा क्या होनी चाहिए ?

मुजरिमाना ज़हनियत के हामिल अफ़राद खुद फ़ैसला करें कि ऐसे लोग हकीमुल उम्मत हैं कि लईनुल उम्मत ? हम तो सिर्फ़ इतना अर्ज़ करेंगे कि थानवी ने जिस गुनाहगार ज़बान और क़लम की तलवार क़ौमे मुस्लिम को ज़िबह करने के लिए इस्तेमाल किए थे उनके बिहीख़्वाह इतनी महेरबानी ज़रूर करें कि ग़रीब मुसलमान और इस्लाम को उस नापाक मसले की तालीम को ख़िदमते दीन से ताबीर न करें और अभी सवेरा है तोबा करके दीने इस्लाम में मुकम्मल तौर पर दाख़िल हो जायें और महबूबे रब्बुल आलमीन की बारगाह में अपनी ख़ताओं का एतिराफ़ इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की ज़बान में करें कि

मैं मुजरिम हूँ आक़ा मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जाबजा थाने वाले।

ईदैन का मुसाफ़ह और मुआनेक़ा

(1) सवालः ईदैन में मुआनेक़ा करना बग़ल गीर होना कैसा है ?
जवाबः ईदैन में मुआनेक़ा करना बिदअत है।
(हवालाः1फ़तावा रशीदिया (जदीद) स0,148)
(हवालाः1फ़तावा रशीदिया (क़दीम) जिल्द 2 स0,154)

(2) सवालः मुआनेक़ा करना बिलखुसूस ईदैन के रोज़ किस दरजे का गुनाह है, मकरूह है, या हराम ?

जवाबः मुआनेक़ा व मुसाफ़ह ब वजहे तख़सीस के कि उस रोज़

में उसको मोजिबे सुरूर और बाइसे मुवद्दत और अनाम से ज़ियादा मिस्ल ज़रूरी के जानते हैं, बिदअत है और मकरूहे तहरीमी और अलल इतलाक़ हर रोज़ मुसाफ़ह करना सुन्नत है ऐसा ही शराइत खुद यौमुल ईद के है और अला हाज़ा मुआनेक़ा जैसा शराइत खुद दीगर अय्याम में है वैसाही यौमे ईद के है कोई तख़सीस अपनी राये से करना बिदअते ज़लाला है।

(हवाला:1फ़तावा रशीदिया (जदीद) स0,148)
(हवाला:2फ़तावा रशीदिया (क़दीम) जिल्द 2 स0,83)

(3) बक़ौल गंगोही, ईद के दिन मुसाफ़ह और मुआनेक़ा करना बिदअत और मकरूहे तहरीमा व हराम है।

(हवाला: तज़केरतुल रशीद जिल्द 1 स0,181)

(4) बक़ौल मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ईद का मुसाफ़ह बिदअत है और मुआनेक़ा और भी क़बीह है।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3हिस्सा 1 क़िस्त 12 स0,133)

(5) बक़ौल थान्वी मुसाफ़ह बाद ईदैन या बाद नमाज़े पंजगाना मकरूह व बिदअत है।

(हवाला:इमदादुल फ़तावा (देवबंद)जिल्द 1 स0,708)

(6) मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ने कहा कि मुसाफ़ह मैं इबतेदाअन तो नहीं करता लेकिन दूस्रे की दरख़्वास्त पर कर भी लेता हूँ मौलाना गंगोही नहीं करते थे क्योंकी बिदअत है मैं मग़लूब हो जाता हूँ। (हवाला: कलिमतुल हक़ (थाना भवन)क़िस्त,8मल0,175 स0,84)

सुन्नत को बिदअत ''अकाबेरीने देवबंद''

मुंदरजा बाला इबारतों में एक ऐसी सुन्नत से इन्हिराफ़ है जिस में इख़ुव्वत, मोहब्बत भाई चारगी की अलामत व निशान है और मोमिन का तुर्र ए इमतियाज़ है सरवरे दो जहाँ सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का कलिमा पढ़ने वाले नाम निहाद मुसलमान ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया जहाँ खुदा और रसूल की शान में तौहीन व तनक़ीस करते हैं वहीं इस्लामी निशानियों को मिटाने में भी एड़ी चोटी का ज़ोर सर्फ़ कर रहे हैं।

सलाम करना और उसके बाद मुसाफ़ह करना इस्लामी मुआशिरे की ऐसी अलामत है जो तहज़ीबी, मज़हबी, सक़ाफ़ती पैग़ामात पर महमूल है मुसाफ़ह करने से सुन्नते रसूले अकरम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम पर अमल होने के साथ ही बाहम उलफ़त व मोहब्बत का इज़हार व उन्स होता है और दिलों से कुदूरत और कीना ख़त्म हो जाते हैं कुरआन मजीद में सलाम के तअल्लुक़ से अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया:" فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً

फिर जब किसी के घर जाओ तो अपनों को सलाम करो मिलते वक़्त अच्छी दुआ अल्लाह के पास से मुबारक पाकीज़ा।
(कंजुल ईमान पारा 18 अन्नूर आयत 61)

घर में दाख़िल होते वक़्त घर वालों को सलाम करो अगर मकान ख़ाली हो तो यूँ कहो अस्सलामो अलन्नबी व रहमतुल्लाहे व बरा कातु हू। मुल्ला अली क़ारी ने शरहे शिफ़ा में फरमाया कि मुसलमानों के खाली घरों में हुजूर की रूह जलवा गर होती है इस लिए वहाँ हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सलाम किया जाता है।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फरमाते हैं कि सलाम फैलाओ मगर आक़ेबत ना अनदेश, इख़तेलाफ़ व इनतेशार फैलाते हैं कज फहमी व हदीस से ना वाकिफियत की बुनयाद पर सलाम व मुसाफह, मुआनेक़ा में क़ौम को उलझा रहे हैं खुद राहे हिदायत पर नहीं और दूसरों को इस़ राह से अलग करने में लगे हैं।

बुख़ारी शरीफ़ जि0,2, स0,926 की हदीस है। हजरत अब्दुल्ला बिन मसऊद रजियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मेरे हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर मुझे अत्तहिय्यात की तालीम दी।

अब बताइए मुसाफ़ह करना सुन्नत और हदीस से साबित रहा ईदैन में मुसाफ़ह व मुआनेक़ा का मुआमेला तो बिद अत में किस नौईयत से दाख़िल हैं और उनसे तौहीदे इस्लाम पर कैसी ज़र्ब पड़ती है यह अक़्ल के दुशमनों को साबित करना चाहिए अगर मुसाफ़ह

व मुआनेका बक़ौल थान्वी और गंगोही थोड़ी देर के लिए बिदअदत तसलीम कर लिया जाए तो आपस में अदावत व नफ़रत की ऐसी ख़लीज पैदा होजाए गी जिसका उबूर करना दुशवार होगा और उम्मते मुस्लिमा शायद एक साथ कभी जमा न हो सकें बिला शक व शुबह इफ़तेराक़ व इनशेक़ाक के फ़न के ईजाद का सेहरा अशरफ़ अली थान्वी और गंगोही के सर है और ये उनका क़ाबिले तौसीफ़ हुनर है यही वह हुनर और फ़न्नी महारत है जिसने उन्हें उस गिरोह का मज़हबी पेशवा बनादिया है : लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिए कि उनसे हमेशा होशयार रहें उन की तबलीग़ न इस्लामी है और न उन की किताबें क़ाबिले मुताला हें बस् यूँ समझो।

हलक़ा बना बना कर ईमान लूटने को
वह देखो जारहे हैं इब्लीस के सिपाही (नाज़ाँ फ़ैजी गयावी)

मोहर्रम की सबील हिन्दू की पियाऊ वग़ैरा

(1) मोहर्रम में आशूरा वग़ैरा के रोज़ शहादत का बयान करना मआ अशआर ब रिवायते सहीहा या बाज़ जईफ़ा भी नीज़ सबील लगाना और चंदा देना और शरबत व दूध बच्चों को पिलाना दुरुस्त है या नहीं ?

जवाबः मोहर्रम में ज़िक्रे शहादते हुसैन अलैहिस्सलाम करना अगरचे ब रिवायते सहीहा हो या सबील लगाना, शरबत पिलाना और शरबत में देना या दूध पिलाना सब ना दुरुस्त है और तशब्बो रवाफ़िज़ की वजह से हराम हैं।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,139)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 3 स0,113)

(2) हिन्दू जो पियाऊ पानी की लगाते हैं सूदी रुपया सर्फ़ कर के मुसलमानों को उसका पानी पीना दुरुस्त है या नहीं?

जवाबः उस पियाऊ से पानी पीना मुज़ायेक़ा नहीं।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,576)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 3 स0 114)

(3) मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ने कहा कि अगर गियारहवीं की

मिठाई आए तो लेकर कहीं दफ़्न करदे और रद करने में अवाम के अंदर इश्तेआल का अंदेशा है।

(हवाला:1 कमालाते अशरफ़िया (1995इस्वी)बाब 1 स0,152 मल0,628)
(हवाला:2 हसनुल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 1 क़िस्त 12 स0,155)

(4) हिन्दू तिविहार होली या दीवाली में अपने उसताद या हाकिम या नौकर को खीलें या पूरी या और कुछ खाना बतौर तोहफ़ा भेजते हैं और उन चीज़ों का लेना और खाना उसताद हाकिम व नौकर मुसलमान को दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब: दुरुस्त है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,123)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2 स0,123)

यज़ीद के मुतअल्लिक़ उमदा ख़्याल

(1) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही से सवाल कि यजीद आप की राय में काफिर है या फ़ासिक़ ?

जवाब में गंगोही ने कहा कि किसी मुसलमान को काफिर कहना मुनासिब नहीं यजीद मोमिन था क़त्ल के सबब फासिक़ हुआ।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (1987ई0) स0,50)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (1363हिजरी)जिल्द 1, स0,2)

(2) एक शख़्स ने थानवी से पूछा कि यजीद पे लानत करना कैसा है जवाब में थानवी ने कहा कि उस को जाइज़ है जिस को यक़ीन हो कि यजीद से बेहतर हो कर मरूँगा। अर्ज किया कि यह मरने से पहले मालूम हो सकता है ? इस पर थानवी ने कहा तो बस मरने के बाद जाइज़ होगा।

(हवाला:हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3,हिस्सा 1 क़िस्त 12 स0,137)
(हवाला:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जिलद 4,क़िसत20मल0845 स0,456)

(3) एक शख़्स ने थानवी से पूछा कि यज़ीद पे लानत करना कैसा है जवाब में थानवी ने कहा यह सवाल फुजूल है क्या ख़बर कि किसके साथ क्या मामिला हो।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जिलद4,क़िस्त24,मल0291, स0,344)

(4) यज़ीद पे लानत करना कैसा है?पूछने वाले को थानवी का

कहना कि उस को जाइज़ है जिस को यकीन हो कि मैं यज़ीद से बदतर हो कर न मरूँगा वरना यजीद कहेगा कि क्या मूँह लेकर मुझ पर लानत की थी और कहना ख़ातिमा किस हाल का पता नहीं।
(हवाला:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जिलद 4,किसात22मल0181 स0,216)
(हवाला:मुआरिफे याकूबी स0 69)
(5) बकौल थानवी एक साहिब ने मुझसे सवाल क्या कि यज़ीद पर लानत करना कैसा है ? मैंने कहा कि उस शख्स को जाइज़ है जिस को यह ख़बर और यकीन हो कि यज़ीद से अच्छी हालत में मरूँगा अगर कहीं उस से ख़राब हालत में कब्र में गये तो वह कहेगा कि मुझ को तो ऐसा ऐसा कहते थे अब तुम देखो किस हालत में हो कहने लगे तो यह कब मालूम होगा। मैंने कहा मरने के बाद, कहने लगे तो कब्र में लानत किया करें मैंने कहा कि हाँ वहाँ कोई काम तो होगा नहीं बैठे हुए लानतुल्लाहि अलल यज़ीद पढ़ा करना यहाँ तो काम की बातों में लगो।
(हवाला:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जिलद2,किस्त10,मल0948,स0,533)

बिही खुवाहाने यज़ीदियत

किस निशाते तबा के साथ अपनी फ़िरऔ नियत और मोहब्बते एहलेबैत से बेज़ारी और यज़ीद की हिमायत की गई है जिसको पढ़ने के बाद इज़हार की ज़रूरत नहीं है, जमाअतों और तहरीकों की मुखा़लिफ़त और मुदाफ़िअत के फ़ैस्ले का इन्हेराफ़ और इनहेसार उनके अग़राज व मका़सिद से हुवा करते हैं वरना मक़सद ही फ़ौत हो जाते रशीद अहमद गंगोही एक तरफ़ दीवाली की पूरी कचौड़ी और तर्बरुकात हदय ए कुफ्फ़ार व मुशरेकीन जाइज़ और दुरुस्त बतारहे हैं और दूस्रे रुख़ पर अशरफ़ अली थान्वी और खुद गंगोही मोहर्रम की सबीलें और नियाज़ व शरबत को बिदअत क़रार दे रहे हैं और ऐसी मजालिस में जहाँ ज़िक्रे इमामे हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो होजाना भी नाजाइज़ व बिदअत है यज़ीद और यज़ीदियों के हिमाइतियों को सोचना चाहिए मैदाने करबो बला में साबित

क़दमी से नाना जान की शरीअत को दाग़दार होने से बचाने वाले नौजवनानें जन्नत के सरदारों के तअल्लुक से कमीनगी व खुबासत का इज़्हार क्या माना रखता है दीवाली और उस जैसे तिवहारों के मौक़ा पर हिन्दुओं के पक्वान से ज़ौक़े तबा की तकमील करने वाले ग़ौर करें किस कर्ब व मसाइब की वादियों से मज़लूमाने करबला को गुज़रना पड़ा था सय्यदह के लाल ने अज़मते इस्लाम के लिए हर पेश कश को ठुकरादिया इस्लाम की पासबानी के लिए हालात की परवा किए बग़ैर वादि ए नैनवा में उतरजा ते हैं, पानी बंद किया गया भूका रखा गया यज़ीदी रोज़ाना एक न एक मुजाहिद को बेदरदी से ज़िबह करते रहे और रंन्ज व ग़म में इज़ाफ़ा करते रहे मगर पाये इस्तक़लाल को ज़रा भी लग़ज़िश न आई यज़ीदियों ने अपनी दरिन्दगी इस दरजे तक पहूँचा रखी थी कि लाशों पे घोड़े तक दौड़ा त ह ।

आज उनके नाम की सबीलों और शरबतों पर बिदअत के फ़तवे और जफ़ाकारों को फ़ासिक़ व फ़ाजिर कहने से भी कफ़्फ़े लिसान दुनिया को आज भी इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो जैसा साबिर व शाकिर की ज़रूरत है ताकि ईमान व ईक़ान की तलवारें बातिल परस्तों के सामने कुंद न होसकें इस्लाम क़ा हक़्क़ानी पैग़ाम जो करबो बला के रेग ज़ारों में चमनिस्ताने ज़हरा के शहज़ादे ने पेश क्या था दुशमनाने इस्लाम के यलग़ारों को रोकने के लिए खुवाबे ख़रगोश में मस्त अफ़राद के लिए ज़रूरी है मजालिस में वाज़ के ज़रीआ तबलीग़ व तक़रीर के ज़रीए सिराते मुसतक़ीम का पता बताया जाए ऐसी मजलिसों में शिरकत पर बिदअत का राग अलापने वाले अपने बवासीरी ज़हन व फ़िक्र का इलाज करलें।

आसमाँ व ज़मीं और सूरज चाँद तारे सालाम कहते हैं
इब्ने हैदर तुमहैं गुलिसताँ के सब नज़ारे सलाम कहते हैं

ऐहले हक़ ने तुमहारासाथ दिया सर दिया हाथ पर न हाथ दिया
करबला की ज़मीन पर बह कर खूँ के धारे सालाम कहते हैं
(क़ारी मोहम्मद लियाक़त रज़ा नूरी)

हुजूर सल्ललोहो अलैहे वसल्लम के वालि दैन करीमैन के ईमान के बारे में उलामा ए देवबंद का अक़ीदा

(1) गंगोही से सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के माँ बाप के मुतआल्लिक़ सवाल पूछा गया जवाब में गंगोही ने लिखा कि उनका इनतेक़ाल हालते कुफ़्र में हुवा है। (माअज़ल्लाह)

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (1987 ई0) स0,104)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (1363हिज्री)जिल्द 3 स0,32)

(2) थान्वी ने कहा कि हुजूर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के वालेदैन करीमैन के बारे में गुफतगू करने को बहुत ख़तर नाक़ समझता हूँ और ज़ाहिर है कि किसी के वालेदैन को ये कहना कि यह बदमआश काफ़िर थे उस से औलाद को तबई रन्ज होता है इस क़ायेदे से हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भी रन्ज होता होगा।

(हवाला: अलकलामुल हसन मलफूज़ 12 स0,10)

(3) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वालेदैन के ईमान के मुतअल्लिक़ सवाल को थान्वी ने फुजूल बात कहा एक शख़्स ने थान्वी को लिखा कि हुजूर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के वालेदैन मोमिन थे या काफ़िर और जन्नत में जाऐं गें या दोज़ख़ में जवाब में थान्वी ने लिखा कि इस की तहक़ीक़ से तुमहैं किया फ़ायेदा फ़िर कहा बहुत ऐसे ख़त आते हैं जिन में फुजूल बातें दरयाफ़्त की जाती हैं मैं सबका यही जवाब देता हूँ।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 3 क़िस्त 14 स0,72)

उलामा ए देवबंद की सियाह्ह बख़्तियाँ

रसूले गिरामी वक़ार सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमा तेहैं: لم ازل انقل من اصلاب الطاهرين الى ارحام الطاهرات मैं हमेश पाक पुशतों से पाक रहमों की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहा हूँ। (रूहुल मआनी जिल्द 2 स0,169)

हदीसे पाक की रोशनी में मालुम हुवा कि आपके वालिदे गिरामी

हज़रत अबदुल्लाह से लेकर सय्यदुना आदम अलैहिस्सलाम तक आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तमाम आबा व अजदाद तय्यब व ताहिर हैं उनकी पेशानियाँ कभी भी बुतों के सामने न झुकीं, मोहक़्क़िक़ीन उलमा के नज़दीक रब तबारका व तआला ने सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमी अजदाद व आबा ए किराम को कुफ़्र व शिर्क की जैसी नजासतों और फ़ेले हराम से हमेशा पाकीज़ा रखा अल्लाह ने इरशाद फ़रमाय'' انماالمشركون نجس बेशक मुशरिक सब के सब नजिस हैं तो नजिस सुल्ब और मुशरिका का रहम नूरे मुस्तफ़ा का मुतहम्मिल कैसे हो सकता था जिन जिन पेशानियों और सुल्बों और मादरे रहम में आपका नूरे मुबारक मुतमक्किन रहा वह सब के सब तमाम अफ़आले क़बीहा से मुसफ्फ़ा और पाकीज़ा रहे। يراك فى الموحدين من نبى الى حتى اخرجك فى هذه لحمة यानी अल्लाह तआला आपको तौहीद परस्तों में एक नबी से दूस्रे नबी की तरफ़ मुन्तक़िल होता देखता रहा यहाँ तक कि आपको इस उम्मत में पैदा फ़रमाया।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ान दानी वक़ार व अज़मत पर बहुत से दलाइल व शवाहिद मौजूद हैं मगर जिस के नोके क़लम व ज़बाने बे लगाम पर शैतान बैठ कर उस वक़्त तक न उतरा हो जब तक अंबिया व औलिया और शोहदा की हुरमतों का खून न बहा लिया हो उन मज़मूम ख़सलत लोगों की दीदा दिलेरी खून बरसाती आँखों से पढ़िए और खुद फ़ैस्ला कीजिये कि किया ऐसे अफ़राद इत्तेबा के क़ाबिल हैं ? हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहददिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं सरकार के वालेदैन को मोमिन न मान्ना उलमा ए मुतक़द्दमीन का मसलक था लेकिन उलामा ए मुतअख़्ख़ेरीन ने तहक़ीक़ के साथ साबित किया है कि हुजूर के वालेदैन बल्की तमाम आबा व अजदाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक सब के सब मोमिन हैं ।

उन हज़रात के ईमान के सुबूत में तीन तरीक़े हैं (1) ये कि सरकार

के वालेदैन और आबा व अजदाद सब के सब मिल्लते इब्राहीमी पर थे इस वजह से मोमिन हुए (2) ये कि तमाम हजरात एलाने नुबुव्वत से पहले ही ऐसे ज़माने में वफ़ात पागए जो ज़माना ए फितरत कहलाता है और हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दावते ईमान उन लोगों तक पहोंची ही नहीं लिहाज़ा हरगिज़ उन लोगों को काफ़िर नहीं कह सकते हैं बलकि सबको मोमिन ही कहा जाए गा (3) ये कि आक़ा ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन हज़रात को ज़िन्दा फ़रमा कर कलेमा तय्याब की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमा कर अपनी नुबुव्वत की तसदीक़ करवाई इसके अलावा तारीख़ी शवाहिद वाज़ेह और वाफ़िर हैं ज़हनी अय्याशयों की तमाम सड़कों को दुलहन की तरह सजा ने वाले हज़रात अपने अनजाम का ख़याल करें उस ज़ाते गिरामी के वालेदैन को मआजअल्लाह जहन्नमी करार दे रहे हैं जिनसे शदीद क़िस्म की मोहब्बत किये बग़ैर ईमान बिल्लाह की दलील ही नहीं।

कुरआन तो ईमान बताता हे इन्हें
ईमान ये कहता है मेरी जान हैं ये।

रब तआला ऐसे अय्यार ज़हन वाले लोगों को हिदायत नसीब फ़रमाए
आमीन

अल्लाह तआला की शान के लायक़ न हों ऐसी मिसालें और कलेमात

(1) थान्वी ने कहा कि मुझे तवाफ़ के वक़्त ऐसा मालूम होता था कि बादशाह तख़्त पर जलवा अफ़रोज है और उसने अपने गिर्द तवाफ़ का हुक्म दिया है और सब तवाफ़ कर रहे हैं।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2 किस्त 5 मल0,364स0,142)

(2) बकौल मोल्वी याकूब नानोतवी अल्लाह की तरफ़ से शरारत का इलाज जूता है।

(हवाला: हसनुल अजीज़ जिल्द 3 हिस्सा 2 क़िस्त 13 स0,167)

(3) थान्वी बहावाला मैलाना फज़लुर्रहमान कहा कि अल्लाह का हिन्दी तरजुमा मन मोहन है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज जिल्द 2हिस्सा 2 क़िस्त 15 मल0,301स0,104)

(4) मोल्वी कासिम नानोतवी ने अय्यामे तिफ़ली में ख़्वाब देखा कि गोया मैं अल्लाह की गोद में बैठा हवा हूँ।

(हवाला: सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,132)

(5) थान्वी का कहना कि जवाब की अहमियत नहीं बलकि ये देखना चाहिए कि जवाब ठीक भी है या नही शैतान को सजदा करने पर पूछा गया तो उसने कहा ' خلقتنی من نار و خلقتہ من طین अल्लाह ने जवाब का जवाब न दिया शैतान ऐसा हाज़िर जवाब था कि हक़ तआला को जवाब न आया। (नऊज़ु बिल्लाह)

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 2 किस्त 11 स0,87)

(6) मोहर्रम में नियाज़ करने वालों पर थान्वी की बद गुमानी कि वह खुदा को पेनशिन याफ़्ता हाकिम समझते हैं जिसको इख़तियार नहीं।

(हवाला: हसनुल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3 क़िस्त 18 मल0,453 स0,80)

(7) अख़लाक़े मोहम्मदी तुम में नहीं ऐसा कहने वाले के जवाब में थान्वी ने कहा कि अख़लाक़े इलाहिया तो हैं।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया जिल्द 1क़िस्त 5 मल0,1003स0,496)

(8) बक़ौल थान्वी एक शख़स ने पुछा कि सूद क्यों हराम है मैं ने कहा इस वास्ते कि हक़ तआला ने इस को हराम किया है कहा कि हक़ तआला ने क्यों हराम क्या मैंने कहा मैं उस वक़्त मशवेरे में शरीक न था जो वजह पूछ लेता और अगर शरीक होता तब भी यही कहता जो अपा लोग हुक्कामे दुनिया के मशवेरों में रात दिन कहा करते हैं कि(हुज़ूर) की राय हो या शायद ये भी कहदेता कि मुसलमानों पर एक वक़्त इफ़लास का आने वाला है लिहाज़ा इस को हराम न कीजिए मगर मुझ से किसी ने पूछा ही नहीं ।

(हवाला: आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,87)

तनक़ीसे ज़ाते इलाहिया देवबंदी उलमा

अपने हक़ में नुबुव्वत की ज़मीन ज़र खेज़ बना ने वाले अल्लाह का तर्जुमा हिन्दी में मन मोहन कर रहे हैं याकूब नानोतवी अल्लाह की

तरफ़ से शरारत करने वाले का इलाज जूता तजवीज़ कर रहे हैं रब्बे अज़ीम समी व बसीर सत्तार व जब्बार की शान में अपने हस्ब व नस्ब का पता बता रहे हैं कि मआज़अल्लाह, अल्लाह तआला शैतान का जवाब देने से क़ासिर व मजबूर और इबलीस लईन ने रब्बे कायेनात को ला जवाब करदिया यही थान्वी खुदा की शान में पेनशन याफ़ता हाकिम का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल कर रहे हैं दीन दारी के लिबादे में रब्बे क़दीर की ज़ात को हदफ़ बनाना उसकी क़ह्हारी व जब्बारी को दावत देने के सिवा और किया होसकता है इनसान इन ख़तर नाक अफ़आल का तसव्वुर भी नहीं कर सकता आज सादा लोह मुसलमान अपनी सादगी के तहेत उन जैसे हज़रात का तक़वा तहारत और उनकी नमाज़ों को देख कर मीठी मीठी बातें सुन कर उन के क़रीब होजा ते हैं फिर वह लोग इलहाद व ज़नदेक़ा की ऊँची उड़ानों में अकाइद व ईमान को ऐसा ख़राब करदेते हैं कि ना इस्लाम के बुनियादी दस्तूर व उसूल की पासदारी व रिआयत बाक़ी रहती है और ना ही इस्लाम दुश्मनी का दिल से कोई खटका व ख़ौफ़ बाक़ी रहता है।

अल्लाह जल्ला जलालहू की शान में किस क़दर दिल ख़राश इबारतें पेश कि गई हैं ये इस्लाम की ख़िदमत हो रही है या इस्लाम के बेख़ व बुन को उखाड़ा जारहा है सच बताइय्ये ऐसी इबारतें जिस में खालिक़े अरज़ो समाँ की इनतेहाई दरजे की तौहीन की गई है पढ़ कर कलेजा का खून पानी न होजाए गा इस्लाम के बड़े से बड़े दुश्मनों ने वह बात न कही जो मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी और उन के पैरु कार कह गए इस्लाम और तौहीद परस्ती का ढँडोरह पीटने वाले तबलची हज़रात ने तौहीद के तअल्लुक़ से क्या अक़ीदा अख़ज़ किया है उसकी ज़ात में उयूब के मुतलाशी जज़्ब ए इनसाफ़ से ग़ौर करें खुदा की अज़मते शान पर जो हमला किया है वही सब का फ़ैस्ला करेगा उस की बारगाह में ऐसे लोग किस तरह हाज़री देंगे ? कुछ तो सोचा होता हाये रे ग़ैरते ईमानी तू कहाँ मरगई वह जो

शहे रग से ज़ियादा करीब है उसी के मुतअल्लिक थाना भवन के मसखरों का इबलीसी जहनियत कार फरमा अलअमान वलहफ़ीज

अपना मसलक कहना

(1) आशरफ़ अली थान्वी का शाया शुदा मसलक की मुख़्तसार और ज़रूरी शरा के उन्वान के तहेत लिखा है कि आग़ाज़ रबी उस्सानी सन्ने रवाँ(1339हिजरी) में एक एलान ब उन्वान मसाइले हाज़िरा के मुतअल्लिक़ अशरफ़ अली थान्वी का मसलक शाया किया गया था।

(हवाला: अशरफुस्सवनेह जिल्द 3 स0,161)

(2) थान्वी कहते हैं कि मेरा मस्लक तो खुला है।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 2 मल0,489स0,243)

(3) एक मोल्वी के सवाल के जवाब में थान्वी ने कहा कि किसी का कोई तर्ज़ हो मेरा तो ये मस्लक है कि शरीअत को मसालेह पर मुक़द्दम रख्ता हूँ मेरे यहाँ मसालेह पीस दिये जाते हैं क्योंकी मसालेह को जितना पीसा जाए सालन ज़्यादा लज़ीज़ होता है।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 5 मल0,1174स0,541)

(4) थान्वी का कहना कि जो मेरा मस्लक और तर्ज़ है उसकी इत्तेबा करो।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 2किस्त 7 मल0,394स0,210)

(5) थान्वी का कहना कि मैं अपने मस्लक और तरज़े इस्लाह को नहीं छोड़ सकता।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 2किस्त 11मल0,112स0,91)

(6) थान्वी कहते हैं कि अगर मेरा तर्ज़ और मस्लक पसंद नहीं ,मत आओ।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 3किस्त,16मल0,103 स0,65)

(7) थान्वी कहते हैं कि मेरा मस्लक मौला ना देवबंदी (महमूद हसन) के मस्लक से मुख़्तलिफ़ है।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 4 मल0,912स0,459)

(8) बकौल थान्वी गंगोही के पीर ज़ादे हमारे ख़िलाफ़ मस्लक रखते हैं।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 2क़िस्त 11 स0,59)

(9) एक शख़्स ने थान्वी से कहा कि फ़लाँ शख़्स से मेरी सिफ़ारिश कर दीजिए जवाब में इनकार करते हुए थान्वी ने कहा कि ये मेरे मामूल और मस्लक के ख़िलाफ़ है।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1क़िस्त 1 मल0,77 स0,388)

(10) थान्वी ने कहा कि मेरा मस्लक फ़ना तजवीज़ात और तरके तअल्लुक़ात है।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1क़िस्त 4 मल0,760स0,388)

(11) पहले आब्हा गाँव में जुमा होता था, गंगोही ने कहा कि आब्हा हमारा है और फिर भी हमारे मस्लक के ख़िलाफ़ जुमा होता है चुनाँचे फिर वहाँ जुमा बंद हो गया।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 1क़िस्त 12 स0,98)

(12) थान्वी कहते हैं कि जो मेरे मस्लक के मुख़ालिफ़ हैं वह मोल्वी शफ़ी का रिसाला देखें।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 2क़िस्त 19 मल0,670स0,372)

(13) मसअला का हल बताने पर एक शख़्स ने थान्वी को दो रुपया दिया थान्वी ने ये कह कर ले लिया कि ये तो मेरे मस्लक से वाक़िफ़ हैं।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 4क़िस्त 19 मल0,665स0,366)

(14) थान्वी का कहना कि रन्गून में हाजी मोहम्मद यूसुफ़ साहिब ने मेरे मस्लक के मुतअल्लिक़ कहा कि इस की तमाम तालीम का खुलासा ये है कि यहाँ भी राहत से रहो और वहाँ भी वाक़ई मेरे तमाम मस्लक और तालीम का खुलासा बयान कर दिया।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 4क़िस्त 19मल0,738स0,408)

(15) थान्वी कहते हैं कि हमारा मस्लक यह है कि अंडा खाओ,मुरग़ी खाओ, मुरग़्ग़न खाने खाओ और काम करो।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 3क़िस्त 14 स0,91)

(16) थान्वी कहते हैं कि मेरे हैदरा बादी मामूँ के मस्लक में और मेरे मस्लक में इख़्तेलाफ़ था लेकिन बावजूद इख़्तेलाफ़े मस्लक

के उनहों ने अपने मुरीद को लिखा कि अशरफ़ अली का मस्लक हम से जुदा है, इसलिए उस से मत मिलना लेकिन गुस्ताख़ी भी न करना (हवाला:अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 4क़िस्त 19 मल0,750 स0,416)

लक़ब आला हज़रत का इस्तेमाल

(1) इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के लकब आला हज़रत के मुतअल्लिक़ मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ने कहा कि यह आला तो अना रब्बो कुमुल आला में का है जब उन के लिए लफ़्ज़ आला हज़रत बोला जाता है तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए कौनसा लफ़्ज़ बोला जाए गा यह है बे अदबी ए रसूल नीज़ थान्वी ने इमाम अहमद रज़ा के मुतअल्लिक़ कहा कि उनकी सूरत आलिमों की सी नहीं है, मजमूई हैसियत से भाँड मालूम होता है। (मआज़अल्लाह)

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1क़िस्त 10 स0,189)

(2) मोल्वी क़सिम नानोतवी,मोल्वी रशीद अहमद गंगोही और मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी के पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की को उलमा ए देवबंद आला हज़रत कहते और लिखते थे देवबंदी मकतब ए फ़िक्र की मुतअद्दिद किताबों में हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की को लकब आला हज़रत के साथ मुलक़्क़ब क्या गया है जिसकी तफ़सील हसबे ज़ेल है।

(हवाला:1 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,40 पर 5 मरतबा)
(हवाला:2 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,41 पर 3 मरतबा)
(हवाला:3 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,42 पर 6 मरतबा)
(हवाला:4 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,43 पर 3 मरतबा)
(हवाला:5 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,44 पर 1 मरतबा)
(हवाला:6 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,45 पर 3 मरतबा)
(हवाला:7 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,46 पर 6 मरतबा)
(हवाला:8 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,47 पर 8 मरतबा)
(हवाला:9 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,48 पर 9 मरतबा)
(हवाला:10 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,49 पर 2 मरतबा)
(हवाला:11 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,50 पर 8 मरतबा)

(हवाला:12 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,51 पर 5 मरतबा)
(हवाला:13 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,52 पर 1 मरतबा)
(हवाला:14 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,53 पर 6 मरतबा)
(हवाला:15 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,54 पर 6 मरतबा)
(हवाला:16 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,55 पर 2 मरतबा)
(हवाला:17 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,56 पर 1 मरतबा)
(हवाला:18 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,57 पर 2 मरतबा)
(हवाला:19 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,59 पर 1 मरतबा)
(हवाला:20 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,74 पर 5 मरतबा)
(हवाला:21 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,75 पर 3 मरतबा)
(हवाला:22 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,76 पर 1 मरतबा)
(हवाला:23 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,77 पर 5 मरतबा)
(हवाला:24 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,78 पर 2 मरतबा)
(हवाला:25 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,79 पर 1 मरतबा)
(हवाला:26 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,80 पर 4 मरतबा)
(हवाला:27 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,81 पर 5 मरतबा)
(हवाला:28 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,85 पर 8 मरतबा)
(हवाला:29 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,128 पर 3 मरतबा)
(हवाला:30 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,130 पर 1 मरतबा)
(हवाला:31 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,132 पर 1 मरतबा)
(हवाला:32 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,200 पर 1 मरतबा)
(हवाला:33 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,206 पर 5 मरतबा)
(हवाला:34 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,216 पर 1 मरतबा)
(हवाला:35 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,222 पर 2 मरतबा)
(हवाला:36 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,237 पर 4 मरतबा)
(हवाला:37 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,238 पर 8 मरतबा)
(हवाला:38 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,239 पर 2 मरतबा)
(हवाला:39 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0241पर 5 मरतबा)
(हवाला:40 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,244पर 1 मरतबा)
(हवाला:41 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,7 पर 7 मरतबा)
(हवाला:42 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,105 पर 1 मरतबा)
(हवाला:43 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,106पर 1 मरतबा)
(हवाला:44 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,107पर 2 मरतबा)
(हवाला:45 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,108 पर 2 मरतबा)
(हवाला:46 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,109 पर 1मरतबा)

(हवाला:47 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,115 पर 1 मरतबा)
(हवाला:48 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,143 पर 1 मरतबा)
(हवाला:49 तजकिरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,167 पर 1 मरतबा)
(हवाला:50 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,184 पर 4 मरतबा)
(हवाला:51 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,185 पर 3 मरतबा)
(हवाला:52 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,186 पर 3 मरतबा)
(हवाला:53 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,187 पर 3 मरतबा)
(हवाला:54 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,188 पर 4 मरतबा)
(हवाला:55 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,189 पर 1 मरतबा)
(हवाला:56 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,249 पर 1 मरतबा)
(हवाला:57 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,282 पर 1 मरतबा)
(हवाला:58 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,311 पर 4 मरतबा)
(हवाला:59 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,320 पर 3 मरतबा)
(हवाला:60 तजकिरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,326 पर 1 मरतबा)
(हवाला:61 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 2 स0,120 पर 1 मरतबा)

(हवाला:62 तज़किरतुल ख़लील (सहारनपुर)बारे दोम स0,74 पर 2 मरतबा)
(हवाला:63 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0,75पर 2 मरतबा)
(हवाला:64 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0,77 पर 1 मरतबा)
(हवाला:65 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0106 पर 1 मरतबा)
(हवाला:66 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0,119 पर 4 मरतबा)
(हवाला:67 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0,124 पर 1 मरतबा)
(हवाला:68 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0,279 पर 1 मरतबा)
(हवाला:69 तज़किरतुल ख़लील(सहारनपुर)1411हि0 स0,339 पर 2 मरतबा)

(हवाला:70 आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,98 पर 1 मरतबा)
(हवाला:71 आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,114पर 3 मरतबा)
(हवाला:72 आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,117पर 1 मरतबा)
(हवाला:73 आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,126पर 1 मरतबा)
(हवाला:74 सवानेह क़ास्मी जिल्द 1 स0,284 पर 1 मरतबा)
(हवाला:75 सवानेह क़ास्मी जिल्द 1 स0,285 पर 1 मरतबा)
(हवाला:76 सवानेह क़ास्मी जिल्द 1 स0,288 पर 1 मरतबा)
(हवाला:77 सवानेह क़ास्मी जिल्द 1 स0,293 पर 2 मरतबा)
(हवाला:78 सवानेह क़ास्मी जिल्द 1 स0,295 पर 2 मरतबा)

कुल मीज़ान 219 मरतबा

सय्याद जाल में फस गया

मुंदरजा बाला इबारतें खूब खूब पढ़िए मसलक के मुतअल्लिक़ जो बयानात अशरफ़ अली थानवी ने दिये हैं और मसलक की इशाअत के लिये जो ज़ोरे बयानी और लफ़्फ़ाज़ी सर्फ़ किए हैं वही तालीमाते, ग़ैर मुक़ल्लिदीन हैं अब रहा लक़ब आला हजरत का इस्तेमाल जिस ज़िम्न में मोल्वी अशरफ़ अली थानवी ने अपनी बचकाना फ़हेम व दानिश का इस्तेमाल किया है वह उन्हीं की इबारतों से वाज़ेह हो रही है न जाने कितने लोगों पर लफ़्ज़े आला हज़रत का इस्तेमाल होता चला आ रहा है मगर मोल्वी अशरफ़ अली थानवी ने सिर्फ़ ज़ाते इमाम अहमद रज़ा मोहद्दिसे बरेलवी ही को अपने तीर का निशाना बनायाः लिखते हैं कि ये आला तो' अना रब्बो कोमुल आला' में का है जब उनके लिए लफ़्ज़े आला हज़रत बोला जाता है तो हुजूर सल्लललहो अलैहे वसल्लम के लिए कौनसा लफ़्ज़ बोला जाएगा ये है बे अदबी ए रसूल नीज़ थानवी ने इमाम अहमद रज़ा के मुतअल्लिक़ कहा कि उनकी सूरत आलिमों की सी नहीं है, मजमूई हैसियत से भाँड मालूम होता है (मआजअल्लाह) रेन्डी नवाज़ मोल्वी अशरफ़ अली थानवी अपनी बात दूसरे पर डालने की उमदा महारत रखते हैं थाना भवन के उस भड़वे ने कितनी बार तवाइफों की आग़ोश में खेला होगा यह जमाअते वहाबिया के लोग बखूबी जानते होंगे इस जमाअत के तमाम भड़वों का पोस्ट मारटम रिपोर्ट आपके सामने मौजूद है आप मेरी तहरीर को कुछ भी नाम दे लें मगर ईमान व यक़ीन के साथ फ़ैसला कीजिए कि ज़ालिम ने इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाजिले बरेलवी को मुजस्सम भाँड बताकर किया अक़लमन्दी का सुबूत दिया है ? पैकरे इश्के वफ़ा की मुअत्तर व कैफ़ आवर ज़िंदगी के साथ कितना भूँडा मज़ाक किया है। खुद इन दरिंदों नें अपने पेशवाओं के मुतअल्लिक़ 219 मरतबा लफ्जे आला हजरत का

इस्तिमाल किया है जो हवाले के साथ ऊपर गुज़र चुका है इन जालिमों ने अपने ही खून से होली खेली है।

अल्लामा अरशदुल क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह रकम तराज हैं:
(थोड़ी सी तरमीम माजेरत के साथ)

"आला हजरत जैसे अलफाज साहिबाने अलक़ाब की इज्ज़त व रिफ़अत और मक़ामे उलया के इजहार के लिए है जिससे फी जमानिही असहाबे फ़ज़्ल व कमाल से मुतअल्लिक़ होता है अशरफ़ अली थानवी की मशामे जाँ किस क़दर मुक़्नातीसी थी कि लफ्ज़े आला हजरत में अना रब्बोकोमुल आला की बू महसूस कर लेती है यक़ीनन उनके क़ौल में फ़िरऔनी दिमाग़ कार फ़रमा रहा वरना इतना सख़्त हमला हरगिज़ न करते दूसरी आँखों का तिनका देखने वालों को अपनी आँख की शहतीर नज़र नहीं आती ?

सरकार आला हज़रत अपने दौर में बिला शुबह मुआरिफ़ व कमाल फ़ज़ाइल व अख़लाक़ में अपने हमअस्र के दरमियान फ़ौक़ियत व बर तरी रखते थे जिसकी बुनयाद पर लफ्ज़े आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा की ज़ात पर इस तरह मुंतबिक़ हो गया कि आज अवाम व ख़्वास ही नहीं बल्कि सारी दुनया के लोगों की ज़बान पर चढ़ गया और हर हल्क़े में आला हज़रत कहे बग़ैर शख़्सियत की ताबीर मुकम्मल नहीं होती तारीख़ गवाह है कि हर दौर में यज़ीदी फ़ितने उठते हैं नमरूदियों और फ़िरऔनियों ने कुफ़्र व निफ़ाक़ का नक़्क़ारा बजाया है और हर दौर में उनकी सर कोबी के लिए हक़ परस्त उलमा व फ़ुज़ला कमर बस्ता होकर मैदाने अमल में उतरे हैं उम्मत में बे एतमादी के हर उस सिक्के को खोटा साबित किया है जो उम्मत का शीराज़ा बिखेरने के लिए राइज किए गए ताकि दीन का सरमाया महफ़ूज़ रह सके।

वहाबियत ने अंग्रेज़ों के साय ए करम में जन्म लिया था ये फ़ितना उस वक़्त क़दे आवर तनावर दरख़्त बन चुका था जब सरकार आला हज़रत मसनदे इरशाद पर जलवा गर हुए थे पूरे मुल्क में वहाबियत का फ़ितना फैल चुका था इमाम अहमद रज़ा पैकरे इश्क़े

वफ़ा बनकर पूरी वहाबियत से बर सरे पैकार हो जाते हैं उनकी किताबों की रद में बेशुमार किताबें और रिसाइल तसनीफ़ फ़रमाते हैं सहीहुल अक़ीदा मुसलमान उस वक़्त वहाबी मज़हब के ख़िलाफ़ भरपूर अपनी बेज़ारी का मुज़ाहिरा करते हैं इमाम अहमद रज़ा ख़ान ने उठाये जाने वाले फ़ितने का सर कुचल कर रख दिया और फ़ितनों के मोजिद और अलम्बरदार को फ़ना के घाट उतार दिए उनकी राख इस तरह उड़ गई कि कोई मुहकम ए आसार ये भी न मालूम कर सका कि किस शमसान घाट में मदफून हैं इमाम अहमद रज़ा दुनया ए सुन्नियत के पुर सोज़ चारा गर एक ग़मगुसार और फ़र्ज़ शनास रहनुमा और मुहाफ़िज़े दीन व मिल्लत की शक्ल में नज़र आते हैं जहाँ न मसलेहत है न सौदे बाज़ी, जाहो हश्म की तमन्ना न डालर व रियाल की हिर्स हाँ अगर है तो इश्क़े मुस्तफ़ा है पूरी जिन्दगी अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदह सराई से शाद काम रहे एक बे क़रार आशिक़े दिल फ़िगार की तरह अमले ततहीर कि मोहिम में सुबहो शाम मुस्तग़रक़ रहे।

माद्दी व साइल व असबाब की परवा किए बग़ैर उम्मत की कश्ती को मौजे हवादिस से बचाकर साहिले मुराद तक पहुँचाते रहे उनके पास इश्क़ो यक़ीन की कुव्वत, क़ादिरे मुतलक़ की ग़ैबी ताईद व नुसरत थी और रसूले कायेनात सल्लल्लाहो अलैहि वसेल्लम की रूहानी चारा गरी पर भर पूर एतेमाद था।

ख़ुदा दाद ज़ेहानत व फतानत इल्मे फुक़ाहत में महारते ताम्मह फ़िक्र व नज़र की गहराई इल्म व इदराक पर दसतरस के जलवे इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की तसनीफ़ात के हर हर वरक़ पर मानिंद सितारे जगमगा रहे हैं आला हज़रत जैसा सर शार आशिक़े रसूल जो महबूबे जाने जानाँ की ख़ुश नूदी व रिज़ा के लिए फ़िर्क़हाये बातिला से हमेशा नर्बुद आज़मा रहे वहाबियों, देवबंदियों की मक्कारियाँ नित नए फ़ितनों से मुज़य्यन होकर सामने आती रहती हैं लिहाज़ा मुसलमानों को उन से इज्तेनाब और दूरी इख़तियार करनी चाहिए ताकि उनके फ़ितनों से महफ़ूज़ रह सकें।

अल्लाह तबारक वतआला अपने महबूब सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदके में इन जालिमों के शर से महफूज रखे। (आमीन)

नबी के ईमान से इनकार

(1) मोल्वी अब्दुल शकूर काकोरवी ने अपनी किताब मुख्तसार सीरते नबवय्यह में लिखा है कि" ووجدك ضالاً فهدى " यानी और पाया उस परवर दिगार ने आप को राह से बे खबर पस हिदायत की उसने आपको ।

इसी आयत से इस्तिदलाल कर के लिखा है कि

◉ लेकिन बावजूद इन मुहासिने अकलिया के मुहासिने शरईया से आप बिल कुल बेखबर थे मुहासिने शरईया की अस्ले उसूल यानी ईमान बिल्लाह की हकीकत भी आप न जानते थे।

◉ अख़लाक़ी मुहासिन के तीन जुज़ हैं, तहज़ीबे अख़्लाक, तदबीरे मन्ज़िल, सियासते मुदन इन तीनों में से आप कतअन व असलन बे ख़बर थे जब आप ये भी न जान्ते थे कि किताबे इलाही क्या चीज है और ईमान किया चीज है तो और मुहासिन से आप को क्यों कर आगही होसकती थी।

◉ कभी कुछ ऐसे कलिमात आपकी जबान से सादिर नहीं हुए जिस से यह मालूम होता कि आप अपने लिए इस मरतब ए उज़्मा की उम्मीद रखते हैं जो चालीस वर्ष के बाद आप को इनयात हुवा।

(हवाला: मुख्तसार सीरते नबविय्या,अन्नज्म लखनऊ जि0.10,स0.22(7 रबीउल अव्वल 1332 हि0)

(2) मोल्वी अशरफ अली थानवी ने कहा कि हुजूर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए यह फरमाना कि ईमान की भी ख़बर न थी इस से बड़ा अंदेशा इस गलत फ़हमी का हो सकता है कि ईमान कोई मोहतम बिश्शान चीज नहीं जब नबी भी उस से एक ज़माने में बे ख़बर रह चुके हैं ।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 2 मल0,361 स0,180)

(3) मोल्वी अशरफ अली थान्वी ने कहा कि अगर बिल फ़र्ज़ आदम

अलैहिरसलाम से भी लगजिश न हो ती तब भी चुँकि माद्दा तो उस लगजिश का उन में था ही जिस से ब लुजूमे आदी उन की औलाद में से जन्नत में कोई न कोई गड़ बड़ करता और उस को निकाला जाता, उस वक्त वह किसी का बेटा किसी का भाँजा किसी का पोता किसी का भतीजा किसी का भाई तो रोज़ाना जन्नत में कोहराम मचा रहता इस वजह से बाप ही आगए।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 2 मल0,391स0,195)

मीलाद व क़याम पर एतराज़

(1) मीलाद के मुतअल्लिक़ मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने लिखा है कि मौलूदे मुरव्वेज खुद बिदअत है और इस में क़याम को सुन्नते मोअक्किदा जान्ना भी बिदअते जलाला है और फ़ख़रे आलम अलैहिस्सलाम को मजलिस में हाज़िर जान्ना भी ग़ैर साबित है अगर ब इल्मिल्लाहि तआला जान्ता है तो शिर्क नहीं वरना शिर्क है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,166)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 1 स0,84)

(2) मौलूद शरीफ़ और उर्स कि जिस में कोई बात ख़िलाफ़े शरा न हो जैसे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब रहमतुल्लाह अलैह कहा करते थे आपके नज़दीक जाइज़ है नहीं और शाह साहिब वाक़ई मौलूद और उर्स करते थे या नहीं?

जवाब: अक़्दे मजलिसे मौलूद अगरचे उस में कोई अम्र ग़ैर मशरू न हो मगर एहतेमाम व नज़ाइज़ में भी मौजूद है लिहाज़ा इस ज़माने में दुरुस्त नहीं।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,115)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 1 स0,85)

(3) मसला: इनइक़ादे मजलिसे मीलाद बेदूने क़याम ब रिवायाते सही दुरुस्त है या नहीं?

जवाब: इनइक़ादे मजलिसे मौलूद हरहाल में ना जाइज़ है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,130)
(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2 स0,150)

(4) महफ़िले मीलाद में जिस में रिवायाते सही पढ़ी जावें और लाफ़ व गजाफ़ और रिवायाते ममनूआ और काजिबा न हों शरीक होना कैसा है ?

जवाबः— नजाइज़ है ब सबब और वजूह के।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0131)
(हवालाः2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2स0155)

(5) गंगोही लिखते हैं यह महफ़िल चूँकि फ़खरे आलम अलैहिस्सलाम और ज़मानए सहाबा रज़ियल्लाह अनहुम और जमानए ताबेईन और जमानए अइम्म ए मुजतहेदीन अलैहिर्रहमा में नहीं होती, इसका ईजाद बाद छः सौ साल के एक बादशाह नें किया उसको अकसर अहले तारीख़ फ़ासिक़ लिखते हैं। लिहाजा यह मजलिस बिदअते जलाला है। ज़्यादा दलील की हाजत नहीं अदमे जवाज़ के लिए यह दलील बस है कि किसी ने कुरुने ख़ैर में इस को नहीं क्या।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0114)
(हवालाः2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2स0145)

(6)सवालः— जिस उर्स में सिर्फ कुरआन शरीफ पढ़ा जावे और तक़सीमे शीरीनी हो शरीक होना जाइज़ है या नहीं?

जवाबः— किसी उर्स और मौलूद शरीफ़ में शरीक होना दुरुस्त नहीं और कोई उर्स और मौलूद दुरुस्त नहीं।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0134)
(हवालाः2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द3,स0 94)

(7) सवालः— मुरव्वेजा मजलिसे मीलाद बिदअत है या नहीं?

जवाबः— मजलिसे मुरव्वेजा बिदअत है और ब सबब ग़लत उमूरे मकरूहा के मकरूह तहरीमा है।

(हवालाः1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0115)

(8) मजलिसे मीलाद में सलात व सलाम के लिए खड़े होने के तअल्लुक़ से मोलवी ख़लील अहमद अंबेठवी ने लिखा कि यह वजह है कि रूहे पाक अलैहिस्सलाम की आलमे अरवाह से आलमे शहादत में तशरीफ लाए उसकी ताज़ीम को क़्याम है तो यह भी महेज हिमाक़त है क्योंकि इस वजह से क़्याम करना वक़्ते वुकूए

विलादते शरीफा के होना चाहिए अब हर रोज कौनसी विलादत मुकर्रर होती है. बस यह हर रोज इआदा विलादत का तो मिस्ले हुनूद के कि सॉंग कन्हय्या की विलादत का हर साल करते हैं या मिस्ले रवाफिज के नक़ले शहादते अहले बैत हर साल बनाते हैं(मआजअल्लाह) सॉंग आपकी विलादत का टहरा और खुद यह हरकते क़बीहा क़ाबिले लोम व हराम व फिस्क़ है।

(हवाला:अलबरा हीने क़ातिआ (देवबंद)स0152)

(9) मजलिसे मौलूदे मुरव्वेजा बिदअत है बवजहे गलत उमूरे मकरूहा के मकरूहे तहरीमा है और क़्याम भी बवजहे खुसूसियत के बिदअत है।

(हवाला:1 फतावा रशीदया (जदीद) स0,167)
(हवाला:2 फतावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 1 स0,99)

(10) मौलवी अशरफ अली थानवी ने मौलूद शरीफ का बयान के बाब के तहेत लिखा है कि बाज तो यूँ समझते हैं कि पैग़म्बर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम इस महफ़िल में तशरीफ़ लाते हैं और इस वास्ते बीच में पैदाइश के बयान के वक़्त खड़े हो जाते हैं इस बात पर शरा में कोई दलील नहीं और जो बात शरा में साबित न हो उसका यक़ीन करना गुनाह है।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत276,स0287)
(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत276,स0268)
(हवाला:3 हसनुल अजीज़ जिल्द1,हिस्सा4,क़िस्त19,मल0,588,स0,42)
(हवाला:4 हसनुल अजीज़ जिल्द1,हिस्सा2,क़िस्त17,मल0,281,स0,265)
(हवाला:5 सवानेह क़ासमी जि0,1,स0,476)

(11) मौलवी अशरफ अली थानवी दौराने क़्याम कानपुर दुनयवी फायेदा के लिए तक़िय्या के मिलाद शरीफ में शरीक भी होते थे और सलात व सलाम में खड़े भी होते थे इस बात का इक़रार करते हुए थानवी ने अपने एक ख़त में गंगोही को लिखा जो हसबे ज़ेल है। मैंने देखा कि वहाँ बिदूने शिरकत इन मजालिस के किसी तरह क़्याम मुमकिन नहीं, जरा इनकार करने से वहाबी कह दिया, दरप ए तजलील व तौहीन ज़बानी व जिसमानी के होगए और हीला व बहाना हर वक़्त मुमकिन नहीं और यह तो मुमकिन है और करता भी

हूँ कि फी सद नब्बे मौके पर उज़्र कर दिया और दस जगह शिरकत करली इस खत मे आगे थानवी ने लिखा कि बहेर हाल वहाँ बिदूने शिरकत क़याम करना करीब बमुहाल देखा और मंजूर था वहाँ रहना क्योंकि दुनियवी मुनाफेअत भी है कि मदरसो से तनख़्वाह मिलती है।
(हवाला1: तजकिरतुलरशीद (सहारनपुर) जि0,1स0,118)
(हवाला2: आदाबे इफता व इसतिफता स0,100)

(12) मोलवी अशरफ अली थानवी के क़ौल के मुताबिक़ हाजी इमदादुल्लाह मीलाद व क़याम करते थे इसलिए शरअन गुंजाइश है।
(हवाला1: तजकिरतुलरशीद (सहारनपुर) जि0,1स0,118)
(हवाला2: आदाबे इफता व इसतिफता स0,101)

(13) बकौल थानवी हाजी इमदादुल्लाह मौलूद शरीफ में जाने के बावजूद बिदअती नहीं थे वह मुहक्किक़ थे।
(हवाला: हसनुल अजीज़ जिल्द1,हिस्सा4,क़िस्त19,मल0,593,स0,49)

(14) हाजी इमदादुल्लाह को मक्के में मीलाद का बुलावा आया उस वक़्त गंगोही हाजी इमदादुल्लाह के पास मौजूद थे हाजी साहिब ने गंगोही को अपने साथ मीलाद में चलने को कहा तो गंगोही ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि मैं हिनदुस्तान में मीलाद को मना करता हूँ इसलिए यहाँ पर शरीक नही हो सकता।
(हवाला1: हसनुल अजीज़ जिल्द1,हिस्सा4,क़िस्त19,मल0,593,स0,49)
(हवाला2: हसनुल अजीज़ जिल्द3,हिस्सा1,क़िस्त12,,स0,33)
(हवाला3: हसनुल अजीज़ जिल्द1,हिस्सा2,क़िस्त17,मल0,281,स0,266)
(हवाला4: हिकायातुल औलिया हिकायत366,स0,321)
(हवाला5: अरवाहे सलासा हिकायत326,स0,303)

(15) एक मरतबा एक शख़्स ने मेरठ (यू पी) में मोलवी क़ासिम नानोतवी से पूछा कि मोलवी अब्दुस्समी साहिब तो मौलूद शरीफ करते हैं आप क्यों नहीं करते जवाब में नानोतवी ने कहा कि भाई हुजूर सरकारे कायेनात से उन्हें ज़्यादा मुहब्बत मालूम होती है इसलिए करते हैं मुझे भी अल्लाह तआला मुहब्बत नसीब करे।
(हवाला1: हसनुल अजीज़ जिल्द1,हिस्सा4,क़िस्त19,मल0,582,स0,31)
(हवाला:2 सवानेह क़ासमी जि0,1,स0,471)

(16) बकौल थानवी एक मरतबा मैं मौलूद में चला गया और यह समझा कि वहाँ क़याम न होगा मगर वहाँ भी क़याम हुआ, और मैं बराबर वहाँ भी बैठा रहा मगर किसी ने गजंद न पहुँचाई आख़िर जब नरमी आई तो क़याम करने लगा लेकिन कभी करता था और कभी नहीं।

(हवाला: हसनुल अजीज जि0,2,किस्त16,हिस्सा3,मल0,540,स0,11)

(17) शाह इसहाक़ देहली में एक अमीर के यहाँ और बम्बई में अपने शागिर्द अबदुर्रहमान के यहाँ मीलाद शरीफ में शरीक हुए।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत96,स0,131)
(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत96,स0,112)

बुल हवस सुन मालोज़र की दोस्ती अच्छी नहीं
उन के दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
(अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अजहरी बरेलवी)

अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के बारे में इरशाद फरमाया: لقد جاءكم رسول من انفسكم عزيز عليه ما عنتم حريص عليكم بالمؤمنين روف رحيم

तरजुमा: बेशक तुम्हारे पास तशरीफ लाए तुम्में से वह रसूल जिनपर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिराँ है। तुम्हारी भलाई के लिए निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाले महेरबान (कंजुल ईमान पा0 11,अत्तोबा आयत 128) आयते करीमा से मालूम हुआ कि बाज़ सख़ी बुलाकर देते हैं बाज़ आकर जैसे कुंवा और बादल हुजूर आकर देने वाले दाता हैं जैसा कि जाआ से मालूम हुआ, हुजूर सारे इनसानों के नबी हैं हर मोमिन के दिल व जान में जलवह गर हैं, हुजूर निहायत शानदार नबी हैं हुजूर को अपनी उम्मत से वह तअल्लुक़ है जो रूह को जिस्म से होता है कि उसके हर अज़ू की तकलीफ से ख़बरदार होती है जैसा कि अनफुसेकुम से मालूम हुआ, और हुजूर अल्लाह तआला की सिफ़ात के मजहरे अतम हैं हुजूर नफ़ीस तरीन जमाअत में तशरीफ़ लाये कि अरबी कुरैशी मुत्तलबी हाशमी हैं सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सरकार के तमाम आबा व अजदाद मोमिन हैं उनकी उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल, आप के माँ बाप तमाम नबियों के

माँ बाप से अफजल, उनका मदीना तमाम नबियों के शहरों से अफजल विलादत मक्का में रिहाइश मदीना में मगर तशरीफ आवरी हर मुसलमान के सीने में जैसे सूरज रहता है चौथे आसमान पर मगर सारी दुनिया को अपनी किरनों से भर देता है, याद रहे कि हुजूर के विसाल से आप की विलादत यानी जुहूर ख़त्म हुआ तशरीफ आवरी ख़त्म न हुई। आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी उम्मत के दुख दर्द से बा ख़बर हैं और दस्तगीरी फरमा रहे हैं क़ुरआन मजीद से यह बात साबित हो रही है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम का मीलाद मनाया है लिहाजा हुजूर सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम का मीलाद मनाना सुन्नाते इलाहिया है गुजिश्ता अम्बिया ने भी सरकार की मीलाद ख़्वानी की है और रब्बे करीम ने आपकी तशरीफ आवरी का ज़िक्र फरमाया: لقد من اللّٰه على المومنين اذ بعث فيهم رسولا من انفسهم
तर्जुमा: बेशक अल्लाह का बड़ा इहसान हुआ मुसलमानों पर कि उनमें से एक रसूल भेजा

(कंजुल ईमान सूरे आले इमरान आयत 164)

هو الّذى ارسل رسوله بالهدىٰ ودين الحق ليظهره على الدّين كلّه

तर्जुमा: वही है जिसने अपना रसूल हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे।

(कंजुल ईमान अत्तोबा आयत 33)

और भी बहुत सी ऐसी आयतें क़ुरआन में मौजूद हैं जिसके जरीए से मालूम होता है कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मीलाद मनाना जाइज़ व मुसतहसन के साथ रब की पाकीजा सुन्नत भी है मीलाद व क़याम के मुतअल्लिक़ उलमा ए देवबंद ने जो जारेहाना रवय्या इख़्तियार किया है वह आक़ा व गुलाम नबी और उम्मती से बहुत दूरी का इलाक़ा रखता है सईद और नेक बख़्त और सलीमुत्तबा हजरात से यह तो मुमकिन ही नहीं कि वह दाना ए सुबुल फख़्रे रुसुल मालिके इन्स व जाँ रहमते आलमियां सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शाने अक़दस में कोई तनक़ीस व

तनक़ीद गवारा करे, मुल्ला रशीद अहमद गंगोही ने मीलाद व क्याम को बिदअते ज़लाला बताया है और लिखते हैं कि कुरूने खैर में किसी ने इसको नहीं क्या इसलिए यह बिदअत व हराम है।

मोलवी अब्दुश्शकूर काकोरवी ने सीधा हमला इल्मे नबवी सल्ललाहो अलैहे वसल्लम पर किया है लिखता है कि मुहसिने अक़लिया के मुहासिने शरइया से आप बिल्कुल बे ख़बर थे, मुहासिने शरइया की असले उसूल यानी ईमान बिल्लाह की हक़ीक़त भी आप न जानते थे (मआजअल्लाह) नबी को ईमान से ख़ाली बताकर इस ज़ालिम ने किस क़दर जुर्म किया है। अपनी सुवर जैसी थूथ्नी को देखकर जाते अम्बिया पर हमला करना चाहिये और वह भी जो जाने ईमान रूहे ईमान जिसकी मुहब्बत व ताजीम के बगैर ईमान का तसव्वुर ही मुमकिन नहीं अंग्रेजी तसल्लुत से क़ब्ल मुसलमान ज़ियारते कुबूर ईसाले सवाब मीलाद व क्याम का एहतमाम बड़े ही फखरो इम्बिसात के साथ किया करते थे मगर वहाबियों के कमांडर इन चीफ़ मोलवी इसमाईल देहलवी ने जब अंग्रेजों की शह पर इनतिशार व मुनाफिरत की बीज सियाह बख्तों की खुशनूदी के लिए डालनी शुरू की तो उसे यह ज़मीन जरख़ेज़ मालूम हुई और मुसलमानों के इत्तिहाद का शीराजा बिखेर के रखदिया मगर इमाम अहमद रज़ा फ़ाजिले बरेलवी ने उन सारी ज़मीनों को बंजर बना दिया जो क़ौमों को गुमराह करने के लिए उस्तुवार की गयी थी। और सरकारे अबद क़रार सल्ललाहो अलैहे वसल्ल से वालेहाना मुहब्बत का ऐसा परचम लहराया कि आज भी उसी परचम तले महफिले मीलाद व क़्याम का एहतमाम बड़े ही तुज़्क व एहतेशाम से होता है और इनशाह अल्लाह सुबहे क़्यामत तक होता रहेगा और ऐसा क्यों न होता रसूले गिरामी वक़ार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात वाला सिफात ही मुसलमानों के लिए मरकज़े इत्तिहाद है।

कुरआन तो ईमान बताता है उन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

वहाबियों ने इक़तेदार की मण्डी में ज़मीर फरोशी की बुनियाद

पर जो ख़िदमते ख़बीसा हासिल की थी सिर्फ़ और सिर्फ़ इश्के रसूल की शमा बुझाने के लिए आप इन लोगों की किताबों का मुताला कीजिए तो पता चलेगा कि अल्लाह व रसूल, सिहाबए किराम औलिया ए इज़ाम के ख़िलाफ गुस्ता ख़ाना लब व लहजा के तीर व नश्तर क़िस क़दर चलाए गये हैं।

अहले बिदअत का लक़ब अहले सुन्नत को दिया गया मसलके हक़्क़ह पर शिर्क व बिदअत का लेबिल लगाया गया। दज्ल व फरेब की यह सारी दास्तानें जो वहाबियों से अन्जाम पज़ीर हुई पढ़ने के बाद भी आज वहाबिया उन्हें अपना इमाम तसलीम कर रही है मगर

टूटती कलियों के मातम में हवा रोती रही
फूल के चहरे पे लिखी है कहानी रात की
तेरे जलवों से अंधेरों में उजाले फैले
तेरी आमद से गुलिस्तां में बहार आई है

शमअे रिसालत ने जिस वक़्त अपने क़ुदूमे मैमनते लुज़ूम से इस ख़ाकदाने गीती को मुनव्वर किया तो आप की मीलाद ख़्वानी में तीन दिन तक काब ए मुअज़्ज़मा खुशियों से हिल्ता रहा, आप के जलाल व कमाल की हैबत से किसरा का शाही महल ज़मीन बोस हो गया, फ़ारस के अतिश कदा की आग जो हज़ार वर्ष से जल रही थी वह बुझ गयी। क़हेत ज़दा ज़मीन पर दरया ए रहमत की घटाएं इस क़दर छा गयीं कि पहाड़ व जंगल पूरा ख़ित्ता बारिश से सैराब होकर लाला ज़ार बन गये चमन लहलहा उठे हर तरफ हरयाली छा गयी और मुर्दा ज़मीनों में जान आ गई। इनसाफ से बताओ आपकी विलादत शरीफ़ से बढ़कर कौन सा जश्न और कौन सी मजलिस का इनइक़ाद हो सकता है जिसकी याद में महफिले मीलाद व क़्याम का एहतमाम करके अपने रब की सबसे बड़ी नेमत का चरचा किया जाए। अबू लहब लईने अज़ली ने अपनी बाँदी सुवैबा को आज़ाद करके नबीए करीम सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम की मीलाद ख़्वानी की थी जिसकी वजह से हर पीर की शब में अज़ाबे इलाही में तख़फ़ीफ हो जाती है जिन उँगलियों से इशरा करके सुवैबा

को आज़ाद किया था उन उँगलियों को चूसने से उसे गूना राहत व करार नसीब हो जाता है। अबू लहब जैसे काफिर को जिस की कुरआन में मज़म्मत की गई है सरवरे दो जहाँ सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत पर खुशी मनाने की बुनियाद पर उसका बदला जहन्नम में अता किया गया तो भला सुन्नी सहीहुल अकीदा मुसलमान के मीलाद व क़्याम के एहतमाम पर आप की मुहब्बत में इमकान भर ख़र्च करने पर उसको कितना अज्र मिलेगा ? रब्बे करीम इतना अज्र देगा कि अपने फ़ज़्ले अमीम से जन्नत में दाख़िल फरमा देगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादते शरीफा के मौका पर सय्यदा आमिना रज़ियल्लाह अनहा के दरवाज़े पर खड़े होकर मलायेका ने सलात व सलाम अर्ज़ किया। मलऊन शैतान रंज व ग़म में भागा भागा फ़िरा। शैतान के चेले मलायेका से क्यों नहीं पूछते कि हालते क़्याम में सलाम का नज़राना क्यों पेश किया। आज भी नजदी वहाबी अपने देवता शैतान के नक़्शे क़दम पर चलते हुए ज़िकरे मीलाद व क़्याम से रोकते हैं। सीनों में जलन पैदा हो जाती है और महफिलों से राहे फरार इख़्तियार करने की कोशिश करते हैं और जब फंस जाते हैं तो क़्याम की सूरत में मजबूरन नबी की मीलाद कर लेते हैं जैसा कि अशरफ अली थानवी ने ब्यान दिया कि मसलेहतन दुनिया दारी की ग़र्ज़ से मीलाद व क़्याम की मजलिसों में शरीक हो जाता हूँ कि लोग वहाबी कहना न शुरू करदें।

ताज़ीम भी करता है नजदी तो मरे दिल से
सरकारे दो आलम का जब ज़िक्र मैं करता हूँ
होती है जलन पैदा नजदी तेरे सीने में

वहाबियों देवबंदियों के कारख़ाने में कौन सी बिदअत की मशीन लगी है जहाँ से हर जाइज़ काम पर बिदअत का फतवा सादिर होता रहता है, बिदअत के माना है नये काम का ईजाद करना, बिदअत हर वह अफ़आल हैं जो बग़ैर गुज़री मिसाल के किया जावे और शरा में बिदअत उस एतेक़ाद या अमल को कहते हैं जो कि ऐहदे रिसालत के बाद ईजाद हुआ हो लेकिन बिदअत की दो क़िस्म है बिदअते

हसना,बिदअते सय्यह, बिदअते हसना हर उस नये काम को कहते हैं जिसके ज़रिए किसी सुन्नत में तज़ाद न पैदा हो या उसके ख़िलाफ़ न हो जैसे महफिले मीलाद व क़्याम, ख़ूबसूरत आलीशान मस्जिदों की तामीर, मसाजिद में मिनारे और सुतून की तामीर, जलस ए सीरतुन्नबी, जुलूसे ईदे मीलादुन्नबी तरावीह की बा क़ायेदा जमाअत का एहतमाम, نعمت البدعة هذه यह तो बहुत अच्छी बिदअत है।

और बिदअते सय्यह उस बिदअत को कहते हैं जिसका टकराओ दीन से हो या सुन्नत के ख़िलाफ़ हो या सुन्नत को मिटाने के लिए हो जैसे जुमा व ईदैन में उर्दू में खुतबा पढ़ना, अन्दुरुने मस्जिद अज़ान देना वग़ैरा ज़िसके जिम्न में सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं। من احدث فی امرنا ہذا ما لیس منه فهورد

जो शख़्स हमारे इस दीन में कोई ऐसी बात निकाले जो दीन में से नही है तो वह मरदूद है इस से मुराद वह है जो कि दीन के ख़िलाफ़ हो या दीन को बदलने वाली हो। देवबंदी वहाबी आक़ाइद से अपना रिश्ता जोड़ने वाले हज़रात बतायें कि मीलाद व क़्याम, सलात व सलाम या बादे नमाज़ मुसाफ़ह या ईदैन के मुआनेक़ा में कौनसी बिदअते सय्यह पाई जाती है। كل بدعة ضلالة (हर बिदअत गुमराही है) की कुल्लियत हर बिदअत पर महमूल करने वाले आयाते कुरआनिया और अहादीसे नबविय्या के मफ़ाहीम व मतालिब पर ग़ौर तो किये होते अगर हर बिदअत ज़लाला है तो मौजूदा कुरआने मजीद भी पढ़ना बदिअत है और (मआज़अल्लाह) मज़हबे इस्लाम के ख़िलाफ़ है क्योंकि ऐहदे रिसालते मआब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में जो कुरआन था न तो वह एक जिल्द में था न उसमें तीस पारे थे न रुकू और न उसके हुरूफ़ पर ऐराब लगे हुए थे यह सब बिदअती काम सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद वकू पज़ीर हुए हैं इसी तरह बहुत से उमूर ऐहदे रिसालत के बाद अन्जाम दिये गए हैं बिदअत से बचने का एक ही रासता है कि वह मस्जिदें बनाई जायें जो सरकार के ज़माने में थीं वही कुरआन लाया जाए

जैसा सरकार के जमाने में था मगर ऐसा कभी नहीं हो सकता मुसलमान महफिले मीलाद मनाए विलादते रसूल पर खुशियाँ मनायें तो बिदअत है और मजहबे इस्लाम के खिलाफ है हैरत है बुगजे नबी पर लानत है इस गन्दी जहनियत पर।

वह जो न थे तो कुछ न था वह जो न हों तो कुछ न हो
जान है वह जहान की जान है तो जहान है।

सिराजुल क़ादरी बहराइची
खतीब व इमाम, मुसाफिर खाना मस्जिद,
पाक मोडिया इस्ट्रीट 33
बोहरी मो0 मुंबई 3 मोब0 09870742302

☆☆☆

मआख़िज़

कंजुल ईमान फ़ी तरजेमतिल कुर आन इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी।

तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान..............सदरुलअफ़ाज़िल सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी

मज़ामीने मीलादे मुस्तफ़ा............ग़ुलाम मुस्तफ़ा नक़शबन्दी मसऊदी

देवबंद से बरेली..............................अल्लामा कौकब नूरानी ओकाड़वी

शरीअत...(मोल्वी पालन हक़्क़ानी की किताब शरीअत या जिहालत का रद) अल्लामा अरशदुल क़ादरी।

मुसव्विदात.......................................अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी मसरूफ़ पोरबंदर।

माहनामा आला हजरत(बरेली).......सितम्बर 1986ई0

माहनामा आला हजरत(बरेली).......नवम्बर 1999 ई0

माहनामा आला हजरत(बरेली).......फरवरी 2000 ई0

माहनामा कंजुल ईमान(देहली).......फरवरी 2001 ई0

[illegible]..[illegible]

हदय ए तशक्कुर

जिस तरह कौम व मज़हब की पहचान, ज़बान, तहज़ीब, तमददुन से होती है ठीक उसी तरह मोमिन की पहचान उसके तक़वा व तहारत व सिदक़ गोई और अक़ीदगी व ईमान की पुख़्तगी से होती है इश्के रसूल की चिंगारी व शमअे नुबुव्वत की ज़िया बार किरनों से जिनके दिल मुनव्वर होते हैं वही आशिके रसूल मोमिने सादिक़ कहला ते हैं वरना नमाज़, रोज़ा, हज व ज़कात सदक़ात व ख़ैरात तसबीह व मुसल्ला से मुज़य्यन दूर दराज़ क़रया क़रया शहेर शहेर सय्याही करने से कुछ भी हासिल नहीं होता सिर्फ़ मुरग्गन ग़िज़ायें कोरमा कोफ़ता से शिकम परवरी होती है साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ दराज़ पैराहन व जबीने सियाह और लम्बी मिस्वाक तवील सजदे शीरीं कलामी, अज़हान व ईक़ान क़ल्ब व जिगर वहाबियत, नजदियत, नेचरियत का मलम्मा साज़ी तो कर सकते हैं मगर सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दीवान्गी, वारफ़तगी और सच्ची अक़ीदत का रास्ता हमवार नहीं कर सकते शाह व गदा अमीर व ग़रीब बादशाह व रिआया, मुफलिस व नादार, बेकस व मजबूर जिसके दरबारे गोहर बार में कास ए गदाई लिए कह रहे हों।

ऐ शहे अर्ब व अजम कि खड़े हैं मुन्तज़िरे करम
वह गदा कि तूने अता किया है जिन्हें दिमागे सिकन्दरी

उस ज़ात के तअल्लुक़ से यह कहना कि मआजअल्लाह मजबूरे महेज़ हैं। या मर कर मिट्टी में मिल गए हैं या उन्हें कुछ भी इख़्तियारात हासिल नहीं किया यह मोमिन की अलामत है ?

मुजरिम अदालत में हमने हत्तल मक़दूर उन सफ्फ़ाकों के काले करतूतों को उजागर करने की कोशिश की है जिसका पहला एडीशन शाया होते ही ख़तों के जरये और फ़ोन पर मुबारक बादी के पैग़ाम आना शुरू होगए आपके ज़ौक़े तलब की वजह से बहुत ही क़लील अरसे में किताबें ख़त्म हो गईं। लिहाज़ा हम दूसरा एडीशन आप के

मैं गुस्ताख़े रसूल था

मैं अपनी जिन्दगी के उस सुहाने वक्त को कभी नही भूल सकता जब मौलाना सिराजुल कादरी बहराइची की "मुजरिम अदालत में" नामी किताब के मुताला ने मेरे बातिल अकीदे के शीश महेल को रेज़ह रेज़ह कर दिया और मेरा दिल नूरे इरफान से मुनव्वर हो गया -वाकेआ कुछ इस तरह है कि एक बुक इस्टाल पर जब मेरी नजर इस किताब पर पड़ी जिसके टाइटल परशातिमाने रसूल जन्जीर पहने हुए गुंबदे रज़ा से बंधे हुए थे।

किताब ख़रीद कर मुताले की मेज़ पर लाया और वरक़ गरदानी शुरू की जूँ जूँ आगे बढ़ता रहा वहाबियों , देवबंदियों के काले करतूत और सियाह चहरे से पर्दा उठता रहा और आतिशे गज़ब भड़कता रहा बादहू मेरी आँखों से अश्क रवाँ होगए कि मैं कितना बद नसीब था जो अभी तक अंधेरों में भटकता रहा अंबिया व औलिया की शान में गुस्ताखियाँ करता रहा बहेरहाल " मुजरिम अदालत में " किताब के अन्दर दिये हुए हवाला जात को वहाबी धर्म की रुस्वा ए ज़माना किताबों में देखने के बाद सुन्नी सहीहुल अकीदा मसलके आला हज़रत का सिपाही और दावते इस्लामी का मुबल्लिग़ बनने का शरफ़ हासिल हो गया परवर दिगारे आलम अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदके व तुफ़ैल में ता जिन्दगी इसे राहे हक़ पर साबित क़दम रखे और "मुजरिम अदालत में" किताब को मक़बूले ख़ास व आम बनाए और मौलाना सिराजुल कादरी बहराइची को मज़ीद दीन व सुन्नियत की तबलीग़ व इशाअत की तौफ़ीक़ बख़्शे (आमीन)

मोहम्मद अशफ़ाक़ रज़वी अत्तारी
बिन मोहम्मद हफ़ीज़ उर्फ़ बाबू .करया चौक
नासिक रोड महारष्ट्र मोब0,9326165489

तक़रीज़

हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अशरफ़ रज़ा

क़ादरी मिसबाही मुफ़्ती व क़ाज़ी इदारा शरईया महाराष्ट्रा

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिलआलमीन, सल्लल्लाहो तआला अला सय्येदुना मोहम्मदिव्व आला आलेही व असहाबेही व बारिक वसल्लिम।

हक़ व बातिल और नूर व ज़ुल्मत के दरमियान हमेशा मअरका आराइ रही है चौदहवी सदी मे अंग्रेज़ों की नुसरत व शैह पर वहाबियों की तमाम शाखों (गैर मुक़ल्लिद, देवबंदी, नदवी, तबलीग़ी, मौदूदी) ने कुरआन व हदीस के नाम पर इन्कारे ज़रूरियाते दीन मसलन अल्लाह व रसूल अज़्ज़ा वजल व सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तनक़ीस व तौहीन शुरू करदी तो हज़राते उलमा ए ऐहलेसुन्नत व जमाअत बिलखुसूस आलाहज़रत सय्येदुना इमाम अहमद रज़ा क़ादरी और उनके खुल्फ़ा व मुतअल्लिक़ीन ने हिमायते दीनो सुन्नियत के लिए सर फ़रोश मुजाहिदों की तरह मैदाने अमल मे आगए उनके एहक़क़ाके हक़ व इबताले बातिल की धमक से ऐवाने बातिल लरज़ उठा हक़ाइक़ का सामना करने से वह बराबर कतराते रहे मगर दरे पर्दा अपने बुज़ुरगों के अक़ाइद व नज़रियात और सेरो अख़लाक़ को मुतज़ाद तौर पर शाया करते रहे , पासबाने मिल्लत अल्लामा मुशताक़ अहमद निज़ामी व रईसुलक़लम अल्लामा अरशदुलक़ादरी रहमतुल्लाहि अलैहिमा ने खून के आँसू व ज़लज़लह वगै़रह में उनकी खूब खूब नक़ाब कुशाई फ़रमाई है मनाज़िरे ऐहलेसुन्नत अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी भी अपनी तहरीर व तक़रीर में उनकी खूब ख़बर लेरहे हैं जैसा कि फ़ाज़िले जलील हज़रत मौलाना क़ारी सिराजुलक़ादरी बहराइची मद्दाज़िल्लुहुलआली ने इल्मी दयानत व क़ल्मी सदाक़त का बरमला ऐतराफ़ किया, हज़रत मौलाना सिराजुलक़ादरी हिमायते दीन व सुन्नियत में मदरसा महफ़िल इमामत व ख़िताबत बज़्म व अन्जुमन तहरीर व तक़रीर का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते तरदीदे वहाबिया में सीमाब की तरह मुतहर्रिक व फ़ुआल रहते हैं मौला तआला अपने फ़ज़्लो करम से उन्की इस तरतीब यानी ***मुजरिम अदालत में*** को उनके फ़ौज़ो फ़लाह का ज़रिअह बनाए और हम सबको ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।आमीन ·

मोहम्मद अशरफ़ रज़ा क़ादरी

11 जमादिल ऊला 1424 हिज0 12 जुलाई 2003 ई0शंबह

लेखक की दूसरी किताबें

- इस्लामी हीरे (सुन्नी कुइज़)
- गुस्ताख कलम
- अनवारे कुरआनी
- कब्र से जन्नत तक
- माँ का आँचल
- तोहफा-ए-रमज़ान
- तोहफा-ए-निकाह
- असहाबे कहफ
- पयामे रहमत
- असली सय्यदा बीबी की कहानी
- असली दस बीबीयों की कहानी
- मुजरिम अदालत में
- लोहाबे देहने मुस्तफा ﷺ
- दश्ते कर्बला

GHAZI KITAB GHAR
Gangwal Bazar, Distt. Bahraech (U.P.)